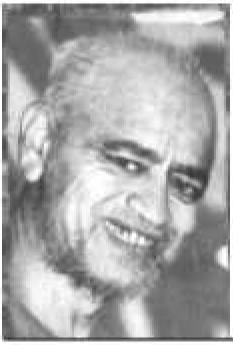

संस्कार सागर

• वर्ष : 25 • अंक : 286 • जनवरी 2023

• वीर नि.संवत 2547 • विक्रम सं. 2079 • शक सं. 1942

लेख

• कलेंडर बदलिये अपनी संस्कृति नहीं 08
• आचार्य अनन्तवीर्य औरउकी सिद्धिविनिश्चय टीका 10
• कटिस्नान कब, क्यों और कैसें ? 19
• भक्तियोग-रहस्य 20
• एक चिंतनीय प्रश्न-दूसरे के सुख से दुखी क्यों 22
• आचार्य विद्यानंद एक परिचय 26
• वृद्ध माता-पिता परिवार में बोझ बन गये 42
• फूलगोभी स्वास्थ्यवर्द्ध के साथ हानिकारक भी 44
• समयसार में प्रतिपादित परमार्थ दृष्टि में जीव 46
• घर में घूँघट क्यों ? 48
• आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज की चेतन कृतियाँ 50
• **वरिष्ठ नागरिक:** आयु के निशान पहले मन पर पड़ते हैं 57
• मंदाग्नि (डिस्पेप्सिया) कारण नियंत्रण उपाय 59

बाल कहानी

• मुश्किल में कुशल 62

कविता

• दूसरी महाभारत 18
• कर्मों की गति यह न्यारी है 25
• मस्तहाला 45
• प्रथम तीर्थ प्रवर्तक आदिनाथ 47
• सफल हुआ जीवन सारा 48
• आईना 58

कहानी

• श्रद्धांजलि 37

नियमित स्तंभ

पाती पाठकों की : 5 • भक्ति तरंग : 6 • संस्कार प्रवाह : 7 • संयम स्वास्थ्य योग : 19
चलो देखें यात्रा : 24 • आगम दर्शन :27• माथा पच्ची : 28 • पुराण प्रेरणा : 29
• कैरियर गाइड : 30 • दुनिया भर की बातें : 31 • इसे भी जानिये: 35 •दिशा बोध : 36
हमारे गौरव : 49 • हास्य तरंग-शरीर विकास के कुछ खेल : 61
• बाल संस्कार डेस्क : 62 • संस्कार गीत व बाल कविता : 63 • समाचार : 64

प्रतियोगिताएं

: वर्ग पहेली : 66

प्रेरणा – परम पूज्य संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के प्रियाग्र शिष्य

एलक श्री सिद्धांतसागरजी महाराज

प्रधान संपादक
ब्र. जिनेश मलैया, इन्दौर–6232967108

प्रबंध संपादक
ब्र. जयकुमार निशांत टीकमगढ़–94251 41697

कार्यकारी संपादक
ब्र. सुदेश जैन कोठिया इन्दौर–9826548159

सलाहकार संपादक
श्री हुकुमचंद सांवला, इन्दौर–9542505311
पं. विनोदकुमार जैन, रजवांस–9575634411
डॉ. मुकेश जैन 'विमल', दिल्ली–9818855130

महिला संपादक
डॉ. ज्योति जैन, खतौली–94128 89449
डॉ. ब्र. समता जैन मारौरा, इन्दौर–8989845294

अतिथि सम्पादक
डॉ. सुनील जैन 'संचय', ललितपुर–97938 21108
अभिनंदन सांधेलीय, पाटन–9425863244
डॉ. पंकज जैन, भोपाल–9584201103
विनीत जैन प्राचार्य, साढूमल–9721419696
अक्षय अलया, ललितपुर – 9453031432

संयोजना
इंजी. अभिषेक जैन 'रिंकू', इन्दौर–9827282170

प्रकाशक
श्री दिगंबर जैन युवक संघ, इन्दौर (म.प्र.)

❊ आंतरिक सज्जा ❊
आशीष कुशवाह, इन्दौर 9179169060

कृपया, संस्कार सागर मासिक पत्रिका का

बाकी सदस्यता शुल्क

जो पत्रिका के लिफाफे पर चिपकी पते की स्लिप पर छपा है, अविलंब भेजकर सहयोग करें ।

सदस्यता शुल्क

-आजीवन	: **2100/-**	(15 वर्ष)
-संरक्षक	: **5001/-**	(सदैव)
-परम सम्मानीय	: **11000/-**	(सदैव)
-परम संरक्षक	: **15001/-**	(सदैव)

अपने शहर के

- स्टेट बैंक ऑफ इंडिया –**संस्कार सागर**
  खाता क्र. 63000704338 (IFSC : SBIN0030463)
- भारतीय स्टेट बैंक –**ब्र. जिनेश मलैया**
  खाता क्र. 30682289751 (IFSC : SBIN0011763)
- आईसीआईसीआय बैंक
  श्री दिगम्बर जैन युवक संघ
  खाता क्र. 004105013575 (IFSC : ICIC0000041)

में भी अपने पूर्ण पते सहित राशि जमा कर हमारे कार्यालय को सूचित कर सकतेहैं ।

कार्यालय –संस्कार सागर
श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर,
सत्यम् गैस के सामने, ए.बी. रोड़, इन्दौर – 10
फोन नं. : 0731–2571851, 4003506
मो. : 89895–05108, 6232967108
website :www.sanskarsagar.org
e-mail : sanskarsagar@yahoo.co.in

- लेखक के विचारों से संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है ।
- संस्कार सागर में प्रकाशित रचनाएँ बिना आज्ञा, किसी भी प्रकार से उद्धृत नहीं की जाना चाहिए।
- कथा–साहित्य में नाम संस्था काल्पनिक होतेहैं । किसी से समानता मिलना संयोग मात्र है ।
- पत्रिका संबंधी प्रकरण में न्याय क्षेत्र इन्दौर रहेगा ।

•श्री दिगम्बर जैन युवक संघ द्वारा श्री दिगंबर जैन पंच बालयति मंदिर, ए.बी. रोड़, इन्दौर–10 से प्रकाशित एवं मोदी प्रिंटर्स (76, बी–1, पोलोग्राउंड, इन्दौर) द्वारा मुद्रित ।

पाती पाठकों की....

• सम्पादक महोदय, विगत दिनों पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान को किसी हमलावर ने गोली मारकर उनकी हत्या करने का प्रयास किया हमलावर ने कहा कि इमरान खान ईशनिंदा कर रहे हैं । इस हमलावर के कथनोपरान्त यह निष्कर्ष निकलता है कि पाकिस्तान ईशनिंदा की अफवाह फैलाकर किसी से बदला लेने किसी भी हद तक जा सकते हैं। वहाँ किसी को भी भड़काया जा सकता है पाकिस्तान की सेना और आईएसआई जैसी संस्था जब पाकिस्तानियों के लिये अन्याय पर उतर आयेंगी तो फिर जनसामान्य की रक्षा हेतु किससे उम्मीद की जा सकती है। ''पाकिस्तान में लोकतंत्र नही हैं'' जैसे लगने वाले आरोपों को निराधार नहीं कहा जा सकता है इससे यह सिद्ध होता है कि पाकिस्तान अराजकता और अव्यवस्था का पर्याय बन चुका है। इमरान खान यदि अपने शासन काल में लोकन्याय की ओर कदम उठाते तो उन्हें भी ये दिन नहीं देखने पड़ते। वक्त रहते यदि पाक में चिन्तन अहिंसक बनाया जाये तो पाकिस्तान में लोकन्याय अमर होगा। **राकेश गोहिल, सिरोंज.**

• सम्पादक महोदय, विगत माह गुजरात में मोरबी पुल हादसे में सैकड़ों निर्दोषी लोगों की मृत्यु हुई । पीड़ित परिवारों के प्रति कई विदेशी राजनायिकों ने अपनी शोक संवदेना व्यक्त की और पश्चिम बंगाल की मुख्य मंत्री ममता बनर्जी ने सुप्रीम कोर्ट के न्यायाधीश से जॉच कराने की मांग की परन्तु इतने मात्र से पीड़ित परिवारों को राहत कितनी मिलेगी, इसे कहना कठिन होगा परन्तु घटना को लेकर चुनाव तक हंगामा करना राजनैतिक दलों एवं उनके नेताओं की नियति होती है । दुर्घटना या हादसा आवाज देकर नहीं आते हैं जिससे कोई सतर्क हो सके । चुनाव के समय वोट की राजनीति को सभी कोसते हैं परन्तु सभी राजनेता वोट की तिकड़म भिड़ाने से चूकते नहीं हैं यह एक घिनौना कटुसत्य है इससे मानवीय संवेदना का मूल्य कम होता है । - **अभिलाषा जैन, बंडा**

• सम्पादक महोदय, संस्कार सागर के दिसम्बर 2022 के अंक में प्रकाशित धर्मध्यान का आधार धर्मानुप्रेक्षा सहित द्वादशानुप्रेक्षा का प्रकाशन पुराण प्रेरणा स्तंभ में हुआ पांडव पुराण का सार पठनीय है। किसी पत्रिका में इस तरह क्रमबद्ध तौर पर पाठकों के समक्ष बारह भावना का विषय नहीं परोसा गया है । बारह भावना का वर्णन प्रायः प्रत्येक पुराण ग्रंथ में उपलब्ध है किन्तु किसी भी पत्रिका में इस तरह का विषय प्रस्तुतिकरण प्रथम बार हुआ है । वैराग्य जागरण का उपाय बारह भावना के सिवाय और कोई दूसरा नहीं है। प्राचीन जैन विद्वानों ने प्राकृत, संस्कृत अपभ्रंश, हिन्दी, मराठी, गुजराती, कन्नड़ आदि अनेक भाषाओं में बारह भावना की रचनायें की हैं। हिन्दी में लगभग 56 रचनायें उपलब्ध हैं। प्रायः प्रथमानुयोग, सिद्धांत, करणानुयोग चरणानुयोग ग्रंथों में द्वादशानुप्रेक्षा उल्लेख उपलब्ध होता है । संस्कार सागर की यह प्रस्तुति मात्र स्वीकरणीय ही नहीं अपितु अनुकरणीय भी है। जैन पत्रकारिता जगत अवश्य ही इस पहल को अवश्य ही अपनायेगा -**श्रीमती रचना जैन, इन्दौर**

• सम्पादक महोदय, संस्कार प्रवाह में संपादकीय आलेख पढ़ा क्या हमें पंथवाद की अफीम खाना ही पड़ेगी ? इस शीर्षक की व्याख्या समझने के बाद मुझे लगा कि कालमार्क्स ने जहाँ धर्म को अफीम कहा है वहीं संपादक महोदय ने एक सार्थक संशोधन प्रस्तुत किया है कि पंथवाद अफीम की गोली है धर्म नहीं। पंथ के आधार पर धर्म को परिभाषित करना न्यायपूर्ण व्याख्या नहीं है। पंथवाद, सामाजिक वातावरण को विषाक्त बनाता है, अपने सच्चे स्वरूप को छुपाकर प्रस्तुत करने वाले ही पंथवाद के जनक बनते हैं , झूठे सम्मान की आकांक्षा रखने वाला धर्म गुरु ही नये पंथ को जन्म देते हैं। सच्चा धर्मात्मा तो पंथ के पक्षपात से अपने आप को दूर ही रखता है परन्तु पंथ और धर्म में अंतर नहीं समझने वाले ही पंथ के पोषक बनते हैं। विषय वस्तु गम्भीर और चिंतनीय एवं अनुरकरणीय है । **श्रीमती करुणा जैन, इन्दौर**

भक्ति तरंग
को चाहे विष मन में

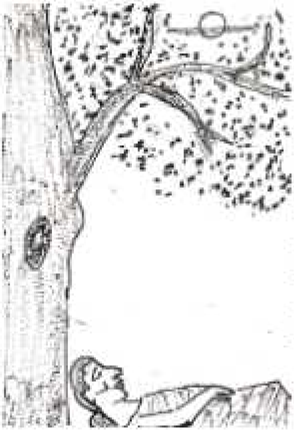

वीतराग जिन महिमा थारी, वरन सकै को जन त्रिभुवन में ।।टेक।।
तुमरे अनंत चतुष्टय प्रगट्यो, निःशेषावरनच्छय छिनमें ।
मेघ पटल विघटनतैं प्रगटत, जिमि मार्तण्ड प्रकाश गगन में ।।1।।
अप्रमेय ज्ञेयनके ज्ञायक, नहिं परिनमत तदपि ज्ञेयनमें ।
देखत नयन अनेकरूप जिमि, मिलत नहीं पुनि निज विषयन में ।।2।।
निज उपयोग आपनै स्वामी, डाल दिया निश्चल आपन में ।
है असमर्थ बाह्य निकसनको, लवन घुला ज्यों-जल जीवन में ।।3।।
तुमरे भक्त परम सुख पावत, परत अभक्त अनंत दुखन में ।
जैसो मुख देखो तैसी है, भासत जिम निर्मल दर्पण में ।।4।।
तुम कषाय बिन परम शांत हो, तदापि दक्ष कर्मारि हतन में ।
जैसे अतिशीतल तुषार पुनि, जार देत द्रुम भारि बनन में ।।5।।
अब तुम रूप जथारथ पायो, अब इच्छा नहिं अन कुमतन में ।
भागचन्द अमृत रस पीकर, फिर को चाहे विष निज मन में ।।6।।

हे जिनेन्द्र ! आप वीतराग हैं, आपकी इस महिमा वर्णन करने में तीन लोक में कोई भी समर्थ नहीं है।

जिस प्रकार घने मेघों की परतें छिन्न-भिन्न होकर हट जाने से, बादल विघट जाने से आकाश में सर्वत्र प्रचण्ड सूर्य का प्रकाश फैल जाता है उसी प्रकार आपके घातिया कर्म नष्ट हो जाने से, क्षण भर में सभी आवरणों (ज्ञानावरण आदि) के हट जाने से असीम-अनंत चतुष्टय प्रकट हो गये हैं।

जिनका किसी प्रमाण के द्वारा बोध नहीं कराया जा सकता ऐसे अनन्त ज्ञेयों, सभी ज्ञेयों के ज्ञाता हो आप ! जबकि आपका ज्ञेयों में परिणमन नहीं होता । जैसे आँखों के द्वारा वस्तुएँ-अनेक रूप देखे जाते हैं परन्तु आँख में प्रवेश नहीं करतीं, उन वस्तुओं में घुसती नहीं हैं। अर्थात ज्ञान ज्ञेयरूप/वस्तुरूप नहीं होता ।

हे जिनेन्द्र ! आप निज उपयोग में ही इतने एकमेक हो गये हो कि अब उस उपयोग का बाहर की ओर जाना कठिन है, असंभव है अर्थात् आपने अपना उपयोग स्व में ही लीन कर रखा है, आप स्व में ही लीन हैं, स्व में ही रम रहे हैं। जिस प्रकार नमक पानी में घुल मिलकर एक हो जाता है फिर उसे पृथक करना कठिन होता है। उसी प्रकार आप आत्मस्थ होकर निज उपयोग से एकसत्व हो गये हो।

आपकी भक्ति करने वाले भक्तजन परम आनंद को, परम सुख को प्राप्त करते हैं और जो आपकी भक्ति नहीं करते वे उस आनंद से, उस सुख से वंचित रहते हैं अर्थात् दुःखी होते हैं। जिसकी जैसी भावना होती है उसे वैसा ही फल मिलता है। जिसके मुख की जैसी/जो आकृति होगी वैसी ही वह ही दर्पण में दिखाई देती हैं।

हे देव ! आप कषायरहित हैं, अकषायी हैं इसलिये अत्यन्त शान्त हैं पर कर्मों का नष्ट-क्षय करने में कुशल हैं, दक्ष हैं, विशेषज्ञ हैं, जैसे अत्याधिक ठण्ड, पाला, तुषारापात बड़े भारी वृक्ष-समूह को भी जाना देने में सक्षम होता है।

अब आपके स्वरूप के यथार्थ दर्शन होने के पश्चात् अन्य मतों को जानने देखने की कोई इच्छा शेष नहीं रही। कवि भागचन्द कहते हैं कि अमृत-रस को पीने के बाद विष की चाह कौन करता है।

संस्कार प्रवाह

अधर्म कृत्य गुमनाम पत्र

वर्तमान में कुछ ईर्ष्यालु चुगलखोर, असत्य के पर्यायवाची, परहित का नाटक करने वाले, नैतिकता शून्य जन 'परनिंदा' के पाप बोझ से दबे लोग कूट लेख करण का अधर्म-पाप करने के लिये तत्पर होकर गुमनाम पत्र का सम्पादन करते हैं ये गुमनाम पत्र प्रथम दृष्ट्या कूड़ा दान में स्थान पाने लायक होते हैं।

विगत माहों से गुमनाम पत्रों का सिलसिला चल रहा है। इन पात्रों का मकसद एक मात्र सूरज पर थूंकना है परन्तु वे भूल जाते हैं कि यह थूँक उनके ही सिर और मुंह को गंदा करता है। जैन दर्शन की आचार संहिता में सत्याणुव्रत को महत्वपूर्ण कहा गया इस व्रत के अतिचार में रहोभ्यख्यान कूट लेख करण को सत्य का विरोधी पक्ष स्वीकार किया गया है। अब प्रश्न यह उत्पन्न होता है कि जो नैतिकता से शून्य अपने प्रतिशोध के लिये द्वेष पूर्ण दुर्भावना से गुमनाम पत्र लिख रहा है अथवा लिखवा रहा है वह कितना नकारात्मक अधम होगा। क्या उसने सत्य के उद्घाटन का ठेका ले रखा है ? तो सत्य कहने में भय क्यों है ? वह उसे सत्य कहने का भय है तो वह सत्यवादी कभी हो नहीं सकता है।

गुमनाम पत्र लेखक भय और लोभ से निश्चित तौर लिप्त हैं। वह मायाजाल रचकर दूसरे को निशाना बनाकर उसके चरित्र की हत्या करना चाहता है परन्तु उसकी जानकारी सत्य नहीं होने से वह अपना नाम छुपाकर मात्र किसी महान, चारित्रवान, महायोगी, की उन्नति देख नहीं पा रहा है। अतः वह भ्रामक तथ्यों की रचना करके समाज को महान संत के मूल्य को कम करने का असफल प्रयास कर रहा है। वह भूल जाता है कि कोटिभट्ट श्रीपाल राजा ने मनगढंत मुनि निंदा की थी तो उन्हें कोढ़ जैसी महाव्याधि का कष्ट झेलना पढ़ा था मैं गुमनाम के पाठकों को भी सावधान कर देना चाहता हूँ कि श्रीपाल राजा के मुनि निंदा कृत्य का समर्थन करने वाले सात सौ सामान्य जनों की भी कुष्ट रोग की पीड़ा झेलना पड़ी थी।

गुमनाम पत्रों को विश्वसनीय मान लेना एक बहुत बड़ी चूक है, क्योंकि अपना नाम छुपाने वाला फर्जी नामों का उपयोग करने वाला चुगल खोर तथा कथित झूठे मुद्दे उठाकर उकसाने का काम ही करता है और इन पत्रों का प्रचार करने वाला सहअपराधी बनता है अतः समझदारी इसी में है कि इन गुमनाम पत्रों का स्थान डस्टबिन में बनायें और अपने सम्यग्दर्शन को मलिन न करें।

कलेंडर बदलिये अपनी संस्कृति नहीं

डॉ. सुनील संचय, ललितपुर

(2022 वर्ष विकासवादी मानव को सीमा, संयम में रहने के लिये सृष्टि का बहुत बड़ा सबक है, अब तो जाग, आओ एक नई उम्मीद, आशा, विश्वास के साथ 2023 का करें स्वागत 2022 को अलविदा इस भावना के साथ कि कोरोना संक्रमण भी हो अलविदा। (पढ़ें नूतन वर्ष पर प्रासंगिक आलेख)

अंग्रेजी वर्ष 2022 को अलविदा, 2020-21-22 के वर्ष कोरोना संक्रमण के कारण न केवल भारत वर्ष के लिये बल्कि सम्पूर्ण दुनिया के लिये कष्टकारी रहे हैं। हम 2023 में इस मंगल भावना के साथ कदम रख रहे हैं कि पिछले 2 वर्षों में व्याप्त हुये कोरोना जैसे महाभयंकर संक्रमण से भी हमें पूर्णतः निजात मिल सके। सभी के जीवन में खुशियों की बौछार हो, देश प्रगति की नई गाथा लिखे।

नया साल दुनिया में सबसे अधिक मनाये जाने वाले उत्सवों में से एक है। इस दिन को अलग-अलग रीति रिवाजों और परंपराओं से आकार दिया जाता है। इस दिन पर नये साल के मंगलमय गुजरने की खुशी में आने वाले साल की अच्छी कामना के लिये संकल्प लिया जाता है। यूं तो पूरे विश्व में नया साल अलग-अलग दिन मनाया जाता है और भारत के अलग अलग क्षेत्रों में भी नये साल की शुरुआत अलग अलग समय में होती है। लेकिन अंग्रेजी कैलेडर के अनुसार 1 जनवरी से नये साल की शुरुआत मानी जाती है। चूंकि 31 दिसंबर को एक वर्ष का अंत होने के बाद 1 जनवरी से नये अंग्रेजी कैलेंडर वर्ष की शुरुआत होती है। इसलिये इस दिन को पूरी दुनिया में नया साल शुरु होने के उपलक्ष्य में त्यौहार की तरह मनाया जाता है। चूंकि साल नया है इसलिये नई उम्मीदें, नये सपने, नये लक्ष्य, नये आईडियाज के साथ इसका स्वागत किया जाता है। नया साल मनाने के पीछे मान्यता है कि साल का पहला दिन अगर उत्साह और खुशी के साथ मनाया जाये, तो पूरा साल इसी उत्साह और खुशियों के साथ ही बीतेगा।

हालांकि 1 जनवरी को मनाये जाने वाला नया वर्ष भारतीय संस्कृति का नहीं है। भारत में पश्चिमी सभ्यता के बढ़ते चलन के कारण नववर्ष का दिन 1 जनवरी, भारत के लिये बहुत महत्वपूर्ण उत्सव का दिन माना जाता है। (हिन्दू नववर्ष का आगाज गुड़ी पड़वा से होता है।)

जैन परंपरा में भगवान महावीर स्वामी के निर्वाणोत्सव के अगले दिन से नये वर्ष का शुभारंभ माना जाता है। वीर निर्वाण संवत् भारत का प्रमाणिक और सबसे प्राचीन संवत् है। लेकिन एक जनवरी को नया वर्ष लोग उत्साह से मनाते हैं। 31 दिसंबर की रात से ही कई स्थानों पर अलग-अलग समूहों में इकट्ठा होकर लोग नये साल का जश्न मनाना शुरु कर देते हैं और रात 12 बजते ही सभी एक दूसरे को नये साल की शुभकामनायें देते हैं। नये साल के दिन लोग एक दूसरे को कई प्रकार से शुभकामनायें संदेश भेजते हैं। लोग एक दूसरे को ग्रीटिंग कार्ड देते हैं, व्हाट्सअप, फेसबुक, ट्वीट आदि सोशल मीडिया के माध्यम से सुंदर-सुंदर फोटो, संदेश भेजते हैं और सोशल मीडिया द्वारा अपने दूर बैठे मित्रों और रिश्तेदारों को नववर्ष की शुभकामनायें देते हैं। यह भी सच है कि पश्चिम से आये इस अंग्रेजी वर्ष के पहले दिन का स्वागत हम भोग, विलास के आयोजनों से करते हैं। इस दिन खासतौर से हमारा युवा वर्ग न जाने कितने अनैतिक कार्यों में लिप्त होकर इसका स्वागत करता है। जबकि होना यह चाहिये हम नव वर्ष का स्वागत नये संकल्प और अच्छे कार्यों के साथ करें। इस दिन को पूजा, प्रार्थना और परोपकार के कार्यों लगना चाहिये ताकि पूरा वर्ष हमें एक नई दिशा दिखायें, उन्नति के नई सूत्र हमें प्राप्त

हो पर अफसोस हमारा युवा वर्ग पश्चिमी आबोहवा में इतना बह गया है कि अपना विवेक खोता जा रहा है। नया वर्ष मनाने की सार्थकता तो तभी है जब हम इस दिन असहायों की मदद करें, अपने धन का सदुपयोग करें, जरूरतमंदों का सहारा बनें, प्रभु प्रार्थना करें कि यह वर्ष खुशियों से भरा हो, दुःखद अतीत वापस न आये, पर्यावरण के संरक्षण में योगदान, माता पिता के सम्मान, स्वच्छता की शपथ लेने का संकल्प लें। हमें 2022 में संयम की सीख लेनी होगी। 2023 का वर्ष विकासवादी मानव को सीमा, संयम में रहने के लिये सृष्टि का सबक है। हम अब भी कुछ सीख न ले पाये तो आगे बहुत कुछ और खोने के लिये भी तैयार रहें।

नया साल एक नई शुरुआत को दर्शाता है और हमेशा आगे बढ़ने की सीख देता है। पुराने साल में हमने जो भी किया, सीखा, सफल या असफल हुये उससे सीख लेकर, एक नई उम्मीद के साथ आगे बढ़ना चाहिये। जिस प्रकार हम पुराने साल के समाप्त होने पर दुखी नहीं होते बल्कि नये साल का स्वागत बड़े उत्साह और खुशी के साथ करते हैं, उसी तरह जीवन में भी बीते हुये समय को लेकर हमें दुखी नहीं होना चाहिये। जो बीत गया उसके बारे में सोचने की अपेक्षा आने वाले अवसरों का स्वागत करें और उनके जरिये जीवन को बेहतर बनाने की कोशिश करें।

नव वर्ष का दिन सभी लोगों को बताता है कि अब हम बीते हुये साल को खुशी खुशी विदा कर देना चाहिये और खुशी-खुशी नये साल का स्वागत करना चाहिये। जीवन में हमेशा अतीत को भुलाकर वर्तमान के विषय में सोचना चाहिये जिससे हमारा आने वाला भविष्य उज्जवल बने।

यह सब समारोह बस इसलिये होते हैं ताकि बीते हुये साल को हंसते-हंसते विदा कर सकें और हंसते हंसते ढेर सारी खुशियाँ, उमंगों और नयी आशाओं के साथ नये वर्ष का स्वागत कर सकें।

हम सभी लोगों को नव वर्ष पर कई प्रकार के संकल्प लेने चाहिये जिससे हमें एक आईडिया मिल सके कि हम इस नये साल को बेहतर और सफल बना सकें।

नये वर्ष की नई प्रभा में, सपने सजाओं जीवन में।

पथरीधन चूर्ण

पथरी की अचूक दवा

सेवन विधि–

1) यह चूर्ण सुबह भोजन के बीच में लिया जायें।

2) पानी दिनभर अधिक मात्रा में लें, पेट खाली न हो।

3) प्रथम खुराक लेने के बाद, दूसरी खुराक एक दिन छोड़कर ही ली जाये।

नोट– यह औषधि निःशुल्क दी जाती है। ठीक होने पर औषधि निर्माण हेतु सहयोग कर सकते हैं।

प्राप्ति स्थान –**ब्र. जिनेश मलैया, संस्कार सागर**
श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मन्दिर, बॉम्बेहास्पिटल के पास, इन्दौर (म.प्र.)
फोनः 0731-4003506 मो.:8989505108, 6232967108

दवा देने के विभिन्न स्थानों पर केन्द्र है आप भी अपने यहां केन्द्र चाहते हैं तो सम्पर्क करें

आचार्य अनन्तवीर्य और उनकी सिद्धिविनिश्चय टीका

❊ न्यायाचार्य पं. डॉ. दरबारीलाल जैन, कोठिया ❊

कुछ समय से मेरी अभिलाषा थी कि जिन अनन्तवीर्य और उनके वचनों की आचार्य प्रभाचन्द्र और वादिराजसूरि ने मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की है उनके सम्बन्ध में कुछ ज्ञान प्राप्त करूं। सौभाग्य से वीर सेवा मन्दिर में अनन्तवीर्य की सिद्धिविनिश्चय टीका मौजूद है और इसलिये उसके सरसरी तौर से पन्ने पलटने का सुअवसर मिला- इस महाग्रंथ को अच्छी तरह समझने के लिये तो काफी समय अपेक्षित है। यह टीका अभी अमुद्रित है। इसके सामान्य अध्ययन से भी जो मुझे ज्ञातव्य जान पड़ा है उसे 'अनेकान्त' के पाठकों के लिये भी यहाँ दे रहा हूँ।

अनन्तवीर्य नाम के दो विद्वान् और उनका समय-

उपलब्ध जैन साहित्य में अनन्तवीर्य नाम के दो विद्वान् आचार्यों का अब तक पता चला है। एक अनन्तवीर्य तो वे हैं जिन्होंने मणिक्यनन्दि के 'परीक्षा-मुख' न्यायसूत्र पर 'परीक्षा मुख पत्रिका' नामक वृत्ति लिखी है जिसे 'परीक्षामुखलघुवृत्ति' और 'प्रमेयरत्नमाला' भी कहा जाता है। ये अनन्तवीर्य प्रमेयकमलमार्त्तण्डकार आचार्य प्रभाचन्द्र के उत्तरकालीन हैं। इन्होंने अपनी प्रमेयरत्नमाला में प्रभाचन्द्र और उनके प्रमेयकमलमार्त्तण्ड का निम्न प्रकार उल्लेख किया है।

प्रभेन्दुवचनोदारचन्द्रिकाप्रसरे सति।

मादृशा: क्व नु गण्यन्ते ज्योतिरिङ्गणसन्निभा: ।।3।।

इस उल्लेख पर से यह स्पष्ट है कि प्रभेन्दु-प्रभाचन्द्र और उनके वचनोदारचन्द्रिका-प्रमेयकमलमार्त्तण्ड की विद्वत्परम्परा में अच्छी प्रतिष्ठा और ख्याति हो रही थी, तब प्रमेयरत्नमाला लिखी गई है। 12वीं शताब्दी के विद्वान् हेमचन्द्र ने प्रमाण मीमांसा में अनेक जगह प्रमेयरत्नमाला का शब्दशः और अर्थशः अनुसरण किया है। अतः प्रमेयरत्नमालाकार अनन्तवीर्य हेमचन्द्र से पहले और प्रभाचन्द के बाद अथवा उनके प्रायः समकालीन हुये हैं। अर्थात् ये अनन्तवीर्य 11वीं शताब्दी के विद्वान् हैं।

दूसरे अनन्तवीर्य प्रस्तुत सिद्धिविनिश्चयटीकाकार अनन्तवीर्य हैं, जो अकलङ्क के प्रौढ़ और सम्भवतः आद्य व्याख्याकार एवं उनके गूढ़ पदों के मर्मोद्घाटक हैं और प्रभाचन्द्र तथा वादिराज द्वारा पद़े सम्मान एवं आदर के साथ अपने 'पथप्रदर्शक' के रूप में स्मरण किये गये हैं। प्रभाचन्द्र लिखते हैं-

त्रैलोक्योदरवर्तिवस्तुविषयज्ञानप्रभावोदयो

दुष्प्रायोऽप्यफलङ्कदेवसरिण: प्राप्तोऽत्र पुण्योदयात्।

स्वभ्यस्तश्च विवेचितश्च शतश: सोऽनन्तवीर्योक्तिन:

भूयान्मे नयनोतिदत्तमनसस्तद्बोधसिद्धिप्रद: ।।

-न्यायकुमु. द्वि. भा. पृ. 605, परि. 5।

अर्थात्- अकलङ्क की संक्षिप्त एवं गहन और दुर्गम पद्धति को अनन्तवीर्य के व्याख्यानों पर से

सैकड़ों बार अभ्यास करके जान पाया हूं। इससे यह प्रकट है कि ये अनन्तवीर्य प्रभाचन्द्र के पहले हो गये हैं और जिन्हें वे अकलङ्क की दुर्गम कथन शैली का अच्छा मर्मोद्घाटक मानते थे। आ. प्रभाचन्द्र ईसा की 10-11 वीं शताब्दी (980 से 1065 ई.) के विद्वान् माने जाते हैं। अतः अनन्तवीर्य इससे पूर्ववर्ती हैं। आचार्य वादिराज अपने न्यायविनिश्चय-विवरण के प्रारंभ में ही कहते हैं।

गूढमर्थकलङ्कवाङ्मयागाधभूमिनिहितं तदर्थिनाम्।

व्यञ्जयत्यमलमनन्तवीर्यवाक्दीवर्तिरनिशं पदे पदे ॥3॥

अर्थात्- अकङ्कदेव के गूढ़ पदों का अर्थ अनन्तवीर्य के वचन-प्रदीपद्वारा ही मैंने अवलोकित किया है। इन्हीं वादिराज ने उक्त विवरण के अन्त और पार्श्वनाथचरित में अनन्वतीर्य को वन्दनारूप से भी स्मृत किया है। यथा-

विद्यानन्दमनन्तवीर्यसुखदं श्री पूज्यपादं दया-

यालं सन्मतिसागरं कनसेनाराध्यमम्युद्यमी।

शुद्धचत्रीतिनरेन्द्रसेनमकलङ्क वादिराजं सदा

श्रीमत्स्वामिसमन्तभद्रमतुलं वन्दे जिनेन्द्रं मुदा॥

न्याय वि. वि., प्रशस्ति श्लो. 2।

वन्दाभ्यनन्तवीर्याब्दं यद्वागमृतवृष्टिभिः।

जगज्जिधित्सन्निर्वाणः शून्यवादहुताशनः॥ पा.च.॥

वादिराज के इन उल्लेखों से भी यही प्रकट है कि अनन्तवीर्य उनके पूर्ववर्ती विद्वान हैं। वादिराज ने पार्श्वनाथ चरित में अपना समय शक सं. 947 (ई. 1025) दिया है। अतः अनन्तवीर्य 11वीं शताब्दी से पहले के हैं। चूंकि प्रभाचन्द और वादिराज दानों ही विद्वानों ने उन्हें अकलङ्क वाङमय के पदों का अर्थस्फोटक बतलाया है और इसलिये इनके द्वारा स्मृत अनन्तवीर्य सिद्धिविनिश्चय टीका के रचयिता अनन्तवीर्य ही हैं। इन्हीं अनन्तवीर्य ने अत्यन्त दुरुह अकलङ्क के प्रमाणसंग्रह पर भी टीका (माध्य) लिखी है और जो सिद्धिविनिश्चय टीका से पूर्व की उनकी रचना है। सिद्धि विनिश्चय टीका में उसको देखने के लिये अनेक जगह प्रेरणा की है जो उनका विद्यानन्द के विद्यानन्दमहोदय जैसा ही महत्व का विशिष्ट ग्रंथ जान पड़ता है। और जो आज अनुपलब्ध है तथा उनकी सिद्धिविनिश्चय टीका में ही उसके उल्लेख हैं। अतएव प्रभाचन्द्र और वादिराज के विवेचित अनन्तवीर्य अकलंक-प्रेरणा के मर्म और सिद्धिविनिश्चय का तथा प्रमाण संग्रह भाष्य के रचयिता प्रस्तुति अनन्तवीर्य ही हैं।

विद्यानन्द भी अकलङ्क के व्याख्याकार हैं और प्रभाचन्द्र तथा वादिराज द्वारा स्मृत होने से उसके पूर्ववर्त्ती हैं। लेकिन अनन्तवीर्य और विद्यानन्द में पूर्ववर्त्ती कौन है ? इसका पता अभी तक न तो अन्य साधन से चला है और न इन दोनों विद्वानों के ग्रंथों पर से ही चलता है, क्योंकि एक दूसरे के साहित्य का एक दूसरे पर कोई प्रभाव नहीं जान पड़ता। अनन्तवीर्य ने सिद्धिविनिश्चय टीका में अनेक पूर्ववत्ती आचार्य और विद्वानों एवं ग्रंथकारों का नामोल्लेख किया है और जहां

तहां उनके ग्रंथकारों का नामोल्लेख किया हैं और जहां तहां उनके ग्रंथवाक्यों को भी उद्धृत किया है। स्वामी समनतभद्र, तत्वार्थसूत्रकार, पूज्यपाद, पात्रकेशरी, धर्मकीर्त्ति, प्रज्ञाकर, धर्मोत्तर, कर्णक (कर्णकरोमि), अर्चट शान्तभद्र, कुमारिल प्रभाकर, गाद्दलकीर्ति, पाणिनी तत्वोपटलवकार आदि नामोल्लेखपूर्वक वाक्य उद्धृत किये हैं। सिद्धसेन का भी नामोल्लेख हैं और उनके सम्मतिसूत्र ग्रंथ की तीसरे गद्य 50वीं गाथा भी उद्धृत हुई।

एक अनन्तकीर्ति नाम के विद्वानाचार्य और उनकी स्वतः प्रामाण्यंज्ञ नामकी कृति के भी उल्लेख हैं। आश्चर्य नहीं कि ये अनन्तकीर्ति वे ही अनन्तकीर्ति हों जिनका उल्लेख वादिराज ने पार्श्वनाथ चरित में किया है और जिन्होंने जीवसिद्धि, लघु और वृहद सर्वज्ञसिद्धियों की रचना की है। जीवसिद्धि की तरह उनकी यह सिद्धि विनिश्चय टीका में उल्लिखित स्वतः प्रामाण्यंभङ्ग कृति भी अनुपलब्ध जान पड़ती है। इन सबके उल्लेख होते हुये भी विद्यानन्द का या उनके ग्रंथवाक्य का कोई उल्लेख नहीं है। उधर विद्यानन्द ने भी इनका कोई उल्लेख किसी भी अन्य में नहीं किया। अतएव यह सम्भव है कि ये दोनों विद्वान समकालीन हों और भिन्न भिन्न क्षेत्रों में अपना प्रकाश कर रहे हों। विद्यानन्द का समय 9वीं शताब्दी अनुमानित किया जाता है। धर्मकीर्त्ति, प्रज्ञाकर, धर्मोत्तर, करकरोमी, अर्चट्ट, तत्त्वोपल्लवकार (जयराशि), कुमारिल और प्रभाकर ये सब ईसा की 7 से 9वीं शताब्दी के विद्वान् हैं। अकलङ्कदेव का समय प्रातः आठवीं शताब्दी अनुमानित है और अनन्तवीर्य उनके व्याख्याकार हैं। इसलिये इनका काल 9वी और 10वीं शताब्दी मालूम होता है। यदि इन्हें अकलङ्क के आद्य व्याख्याकार होने का सौभाग्य भी प्राप्त है तो ये 9वीं शताब्दी के ही विद्वान् हैं।

लेकिन इस समय को मानने में एक विचारणीय बात यह उपस्थित होती है कि अनन्तवीर्य ने सिद्धिविनिश्चय के 'हेतुचरण-सिद्धि' नाम के छठे प्रस्ताव के आरंभ में अकलङ्क देव के 'स्वामिनः' पद को लेकर जो चर्चा प्रस्तुत की है उससे प्रतीत होता है कि वे अकलङ्क इतने याद हुये है कि वे अकलङ्क के 'स्वामिन' पद का वास्तविक अर्थ करने में सन्दिग्ध थे- उसका वे असन्दिग्ध अर्थ नहीं जानते थे और इसलिये 'आचार्य प्रसिद्धि' के आधार पर उसका अर्थ 'सीमन्धर भट्टारक तीर्थंकर' करने के लिये बाध्य हुये। जो आचार्य उस पद का अर्थ आचार्य प्रसिद्धि के अनुसार 'पात्रकेशरी स्वामी' करते थे उसका उन्होने विरोध किया। यदि अनन्तवीर्य अकलङ्क के 100, 500 वर्ष बाद ही हुये होते तो वे उस ऐतिहासिक पद के अर्थ में इतने सन्दिग्ध न होते और जो 'पात्रकेशरीस्वामी' अर्थ किया जाता था। उसे वे बिना ननु नच किये अवश्य स्वीकार करते। अतएव उनकी इस चर्चा से यह जान पड़ता है कि वे अकलङ्क के बहुत बाद हुये हैं जबकि 'स्वामिनः' पद के अर्थ में अनेक किम्वदन्तियां और मतभेद प्रचलित हो चुके थे, अतएव यह चिन्तनीय है कि वे 9वीं शताब्दी के विद्वान हैं ? राहुलसांस्कृत्यायन ने अर्चटका समय 8वीं और कर्णकगोमी का 9वीं सदी दिया है और अनन्तवीर्य ने अर्चट तथा कर्णकगोमी दोनों का समालोचन किया है। अतः अधिक सम्भव यही है कि ये 10वीं सदी के विद्वान हैं। फिर एक प्रश्न यह जरूर बना रहता है कि विद्यानन्द (9वीं सदी) का उन्होंने कोई उल्लेख क्यों नहीं किया।

जोकि बहुत अधिक सम्मत था। अतः यह विचारणीय है।

अकलङ्क के व्याख्याकारों में अनन्तवीर्य का स्थान-

अकलङ्क का वाङ्मय- पदवाक्यादि समूह- कितना गहन, दुर्बोधि, संक्षिप्त और अर्थ बहुल है इसका पता इसके न्याय विषयक प्रकरणों का अध्ययन करने वालों को सहज में मालूम हो जाता है। आचार्य वादिराज पद-पद पर इसका अनुभव करते हैं और अनन्तवीर्य की सहायता लेकर ही उन्हें समझ पाते हैं। आचार्य प्रभाचन्द जब सैकड़ों बार अभ्यास करते हैं तब उन्हें जान पाते हैं, सो अनन्तवीर्य की अकल्प सहायता से ही। बगैर इनकी सहायता लिये अपने को भी असमर्थ पाते हैं। अनन्तवीर्य भी स्वयं अकलङ्क पदों के सम्बन्ध में क्या कहते हैं। सो भी सुनिये-

देवस्यानन्तवीर्योऽपि पदं व्यक्तुं सर्वतः।
न जानोतेऽकलङ्कस्य चित्रमेतत्परं भुवि ॥3॥

अर्थात् - मैं अनन्तवीर्य होकर भी अकलङ्क के पदों को पूर्णतः व्यक्त करना नहीं जानता, यह आश्चर्य की बात है। उस समय ऐसे संक्षिप्त और अर्थबहुल प्रकरणों का रचयिता धर्मकीर्त्ति को ही मुख्यतया माना जाता था। अनन्तवीर्य उनकी अकलङ्क साथ तुलना करते हुये लिखते हैं।

सर्वधर्मस्य नैरात्म्यं कथयन्नपि सर्वथा।
धर्मकीर्त्तिः कथं गच्छेदाकलङ्कं पदं ननु ॥5॥

अर्थात्- सर्व धर्म की निरात्मकता का कथन करता हुआ भी धर्मकीर्त्ति अकलङ्क पद को- अकलंक की बराबरी को कैसे पा सकता है? अर्थात् नहीं।

वास्तव में अकलङ्क देव भारतीय वाङ्मय के तेजस्वी, अप्रत्तिम प्रतिभाशाली विद्वान् हैं। यद्यपि अकलङ्क देव को 'अकलङ्कदेव' बनाने में प्रधानतया धर्मकीर्त्ति की समालोचना पद्धति और विचार-क्रान्ति ही मुख्य कारण है। धर्मकीर्त्ति न हुये होते और वे न्यायशास्त्रपर अपने विविध निबन्ध (ग्रंथ) न लिखते तो अकलङ्क देव की बहुमुखी विद्वन्मनः तोपकारी प्रतिभा जागृत होनी और धर्मकीत्ति के निबन्धों को भी मातकर देने वाले न्यायशास्त्र पर आने विविध गहन निबन्ध लिखते, इसमें कुछ संदेह ही है। इसलिये मौलिकता, संक्षेप में बहुवक्तव्यता आदि की अपेक्षा उनकी तुलना धर्मकीर्ति के साथ कर सकते हैं और उनके 'न्यायविनिश्चय' 'सिद्धिविनिश्चय' 'तत्त्वार्थवार्त्तिक 'को धर्मकीर्त्ति के 'प्रमाणविनिश्चय' 'प्रमाणवार्त्तिक से मिला सकते हैं तथा जिस प्रकार धर्मकीर्त्ति के प्रज्ञाकर, धर्मोत्तर अर्चट, कर्णकगोमी शान्तरक्षित आदि समर्थ टीकाकार हुये हैं। उसी प्रकार अकलङ्क देव के भी अनन्तवीर्य, विद्यानन्द, प्रभाचन्द्र, वादिराज, अभयचन्द्र आदि प्रौढ़ मर्मोद्धारक टीकाकार हुये हैं। किन्तु तथ्य और अस्खलित समोलोचना एवं कुछ अधिक गहन विचार में अकलङ्क देव को हम धर्मकीर्त्ति से कहीं आगे पाते हैं। अकलङ्कदेव का प्रमाणसंग्रह तो अतुलनीय है - उसकी गहराई, जटिलता और अतिसंक्षिप्त धर्मकीर्त्ति के प्राप्त किसी भी निबन्ध में देखने को नहीं मिलती। इसी से अकलङ्क और धर्मकीर्त्ति के साहित्य का सूक्ष्म अध्ययन करने वाले आचार्य अनन्तवीर्य को 'धर्मकीर्त्ति कथं गच्छेदाकलङ्क

पदं ननु' यह कहना पढ़ा है। और यह अनन्तवीर्य का प्रघोषमात्र या श्रद्धापूर्ण ही कथन नहीं है, किन्तु वह तात्विक है। जो भी निष्पक्ष विद्वान् अकलङ्क के साहित्य का- न्याय विषयक प्रकरणों का धर्मकीर्त्ति के न्याय ग्रंथों के साथ सूक्ष्मता और गहराई से तुलनात्मक अध्ययन करेंगे उन्हें यह स्पष्ट हुये बिना न रहेगा और अनन्तवीर्य के उक्त कथन की स्वाभाविकता भी प्रतीत हो जायेगी।

अकलङ्क देव के दो तरह के ग्रंथ हैं (1) टीका-ग्रंथ और (2) मूल ग्रंथ। टीकाग्रंथ उनके दो हैं - (1) तत्त्वार्थवार्त्तिक (स्वोपज्ञ भाष्य सहित) और (2) अष्टशती। (देवागमभाष्य-देवागमविवृति)। तत्त्वार्थवार्त्तिक आचार्य उमास्वाती के तत्त्वार्थसूत्र की विस्तृत व्याख्या है और अष्टशती स्वामी समन्तभद्र के देवागम (आप्तमीमांसा) की आठ सौ श्लोक प्रमाण गूढ़ और सूत्रात्मक संक्षिप्त टीका है। 1. लघीयस्त्रीय (तीन प्रकरण), 2. न्यायविनिश्चय, 3 सिद्धि विनिश्चय और प्रमाण संग्रह ये चार मौलिक ग्रंथ हैं और इन चारों ही पर उनकी स्वोपज्ञ वृत्तियां है। ये सब ही सूत्ररूप और अर्थबहुल हैं। अष्टशती को वेष्टित करके विद्यानन्द ने 'देवागम' पर अपनी विद्वत्तापूर्ण अष्टसहस्री (देवागमालङ्कार) टीका लिखी है। लघीयस्त्रीय और उसकी स्वोपज्ञ वृत्ति पर आचार्य प्रभाचन्द ने 'लघीयस्त्रयालङ्कार' अपरनाम 'न्यायकुमुदचन्द्र' नाम की विशाल व्याख्या रची है 'न्यायविनिश्चय' पर मात्र उसकी कारिकाओं को लेकर वादिराज में 'न्यायविनिश्चयविवरण' अथवा 'न्यायविनिश्चयालङ्कार' नामक वैदुष्यपूर्ण बृहद् व्याख्या लिखी है। उसकी स्वोपज्ञ वृत्ति को उन्होंने छोड़ दिया है जो आज अनुपलब्ध है। सिद्धिविनिश्चय और प्रमाणसंग्रह तथा उनकी स्वोपज्ञ वृत्तियों पर आचार्य अनन्तवीर्य ने अपनी महान् व्याख्याएँ लिखी है। अकलङ्क के इन सब व्याख्याकार में अनन्तवीर्य का उचित स्थान है और सम्भवतः ये ही अकलङ्क के प्रथम व्याख्याकार हैं। आचार्य विद्यानन्द यद्यपि उनसे पूर्ववर्ती जान पड़ते हैं, लेकिन एक तो उनके साहित्य का अनन्तवीर्य के साहित्य पर कोई प्रभाव मालूम नहीं होता। दूसरे, वे अष्टशती के व्याख्याकार न होकर मुख्यतः स्वामी समन्तभद्र के देवागम के व्याख्याकार न होकर मुख्यतः स्वामी समन्तभद्र के देवागम के व्याख्याकार हैं। अतः अनन्तवीर्य अकलङ्क के प्रथम व्याख्याकार कहे जाने योग्य हैं। अनन्तवीर्य ने प्रभाचन्द्र और वादिराज की तरह प्रायः विस्तृत दार्शनिक और शास्त्रीय चर्चाओं को न छेड़कर अकलङ्क के पदों के साकांक्ष हार्द को ही पूर्णतः व्यक्त करने का प्रशन किया है और वे इस प्रयत्न में सफल भी हुये हैं। वे अकलङ्क के प्रत्येक पद, वाक्यादि का समासादिद्वारा योग्यतापूर्ण व्याख्यान करते हैं। कहीं कहीं तो वे दो-दो, तीन-तीन भी व्याख्यान करते हुये पाये जाते हैं और इन व्याख्यानों द्वारा उन्होंने अकलङ्क के गूढ़ पदों को बहुत सुगम बना दिया है। अनन्तवीर्य को हम प्रज्ञाकर गुप्त की तरह परपक्ष निराकरण में मुख्य पाते हैं। स्वपक्ष साधन तो उनके लिये उतना ही है जितना मूल से ध्वनित होता हैं। अकलङ्क की चोट यदि धर्मकीर्ति पर है तो अनन्तवीर्य की उनके प्रधान टीकाकार प्रज्ञाकर गुप्त पर है। अपनी इस टीका में उन्होंने प्रज्ञाकर गुप्त का बीसियों जगह नामोल्लेख करके उनके मत का समर्थन किया है। उनके प्रमाणवार्त्तिकालंकार के तो अनेक स्थालों को उद्धृत करके उसका सर्वाधिक समालोचन

किया है। हमारा तो ख्याल है कि अनन्तवीर्य ने सर्वप्रथम जो प्रमाणसंग्रहालंकार या प्रमाणसंग्रहभाष्य लिखा था वह प्रज्ञाकर गुप्त के प्रमाणवार्त्तिकालंकार या प्रमाणवार्त्तिकभाष्य के जवाब में ही लिखा होगा। दोनों का नाम साम्य भी यही प्रकट करता है। कुछ भी हो, यह अवश्य है कि अनन्तवीर्य ने सबसे ज्यादा प्रज्ञाकर गुप्त का ही खण्डन किया है। जैसे अकलङ्क ने धर्मकीर्त्ति का। अतः जैनन्याय साहित्य में अकलङ्क के टीकाकार में अनन्तवीर्य का वही गौरवपूर्ण स्थान है जो बौद्धन्याय साहित्य में धर्मकीर्त्ति के टीकाकारों में प्रधान टीकाकार प्रज्ञाकर गुप्त को प्राप्त है और इसलिये उन्हें (अनन्तवीर्य को) जैन न्याय साहित्य का प्रज्ञाकर कहा जा सकता है।

व्यक्तित्व, गुरु परम्परा और ग्रंथ रचना-

जैन साहित्य में प्रस्तुत टीका के कर्त्ता अनन्तवीर्य का जो सम्मान और व्यक्तित्व है वह इसी से जाना जाता है कि उनके उत्तरवर्ती आचार्य प्रभाचन्द, आचार्य वादिराज जैसे महान् ग्रंथकारों ने उनके प्रति अपनी श्रद्धा व्यक्त की है और अपने मार्गप्रदर्शक के रूप में सबहुमान, अपने ग्रंथों में नामोल्लेख पूर्वक उनका स्मरण किया है तथा अकलङ्क पदों का उन्हें मर्मज्ञ व्याख्याकार बतलाया है। वास्तव में उन्होंने जिस योग्यता और बुद्धिमत्ता से अकलङ्क के पदों के मर्म को खोला है यह स्तुत्य है। अकलङ्क के वाङ्मय में सबसे अधिक क्लिष्ट और दुर्बोध उनका प्रमाणसंग्रह है। सिद्धि विनिश्चय टीका के अध्ययन से सिद्धिविनिश्चय भी प्रायः प्रमाणसंग्रह जैसा ही क्लिष्ट और दुर्बोध प्रतीत होता है। अनन्तवीर्य ने इन्हीं दोनों पर अपनी व्याख्यायें भाष्य ग्रंथ लिखे हैं- लघीयस्त्रीय और न्यायविनिश्चय यद्यपि उनके सामने थे और दोनों ही सटीक थे, परन्तु अपेक्षाकृत सुगम जानकर उन्हें उन्होने छोड़ दिया और उन पर व्याख्या नहीं लिखी। इससे अनन्तवीर्य के बुद्धिवैभव विद्वत्ता, अदम्य साहस और कर्मठता का पता लगाया जा सकता है। अतः उनका जैन साहित्य में सम्मानपूर्ण व्यक्तित्व है।

टीकाकार ने अपनी टीका में विस्तृत गुरु परम्परा तो कुछ नहीं दी, किंतु केवल अपने साक्षात् टीका के प्रायः प्रत्येक प्रस्ताव के अन्त में सन्धिवाक्यों में 'रविभद्र' नाम दिया है।

और अपने को उनका 'पादोपजीवी-शिष्य बतलाया है। इससे इतना ही प्रगट होता है कि आचार्य अनन्तवीर्य आचार्य रविभद्र के शिष्य थे। ये रविभद्र कौन थे ? इसका परिचय न टीकाकार ने बताया और न अन्य साधन से प्राप्त होता है। इतना अवश्य मालूम होता है कि ये उस समय के अच्छे ख्यातनामा आचार्य हैं और अनन्तवीर्य उनके शिष्य माने और कहे जाते थे। अर्थात् प्रस्तुत 'अनन्तवीर्य रविभद्र-शिष्य अनन्तवीर्य' के नाम से प्रसिद्ध थे। इससे एक बात यह भी मालूम होती है कि इन अनन्तवीर्य के पहले या समसमय में कोई दूसरे अनन्तवीर्य भी हो गये या रहे जिनसे वे अपने को व्यावृत्त करते हुये 'रविभद्रशिष्य अनन्तवीर्य' बतलाते हैं। पीछे में एक फुटनोट में सिद्धिविनिश्चय टीका में उल्लिखित 'अनन्तवीर्य' की संभावना कर आया हूं। हो सकता है कि वे ही कोई अनन्तवीर्य हों और ग्रंथकार भी माने जाते हों। जो हो, इतना निश्चित है कि प्रस्तुत टीका के कर्ता अनन्तवीर्य के गुरु 'रविभद्र' थे और वे उनके शिष्य कहलाते थे।

आचार्य अनन्तवीर्य ने जो ग्रंथ रचे हैं वे व्याख्या ग्रंथ हैं। उन्होंने मौलिक ग्रंथ भी कोई रचा

या नहीं, इसका कोई पता नहीं। आचार्य प्रभाचन्द्र और आ. वादिराज के तो व्याख्या और मौलिक दोनों तरह के ग्रंथ पाये जाते हैं। संभव है उनने भी कोई मौलिक ग्रंथ भी कोई मौलिक ग्रंथ रचा हो और जो आज प्राप्त नहीं है। व्याख्याग्रन्थ उनके दो हैं- 1. प्रमाण संग्रह भाष्य और 2 सिद्धिविनिश्चय टीका। प्रमाणसंग्रहभाष्य के सिद्धिविनिश्चय टीका में केवल उल्लेख मिलते हैं। उन उल्लेखों से इस ग्रंथ की विशालता और महत्त्वता जानी जाती है क्योंकि सिद्धिविनिश्चय टीका जैसे विस्तृत ग्रंथ में भी उसको देखने की प्रेरणा की गई है और यह कहा गया है कि प्रमाणसंग्रहभाष्य से जानना चाहिये। इससे प्रमाण संग्रह भाष्य की महत्वत्ता और अपूर्वता प्रकट होती है। इस अपूर्व ग्रंथ का अवश्य पता चलाना चाहिये।

सिद्धिविनिश्चयटीका- अनन्तवीर्य का दूसरा टीका ग्रंथ प्रस्तुत सिद्धिविनिश्चय टीका है ओर जिसका कुछ परिचय करना ही यहां मुख्यतः इष्ट है।

यह टीका अकलङ्क देव के उसी महत्त्वपूर्ण 'स्वोपज्ञ-वृत्तिसहितसिद्धिविनिश्चय' ग्रंथ पर लिखी गई है जिसके महात्म्य को जिनदासगणि महत्तर ने 'निशीथचूर्णि और श्रीचंद्रसूरि ने जीतकल्पचूर्णि' में प्रकट किया है और उसे दर्शनप्रभावशास्त्र बतलाया है। इस टीका की उपलब्धि का दिलचस्प और दुःखपूर्ण इतिहास- परिचय श्रीमान् पं. जुगलकिशोर जी मुख्तार ने अपने पुरानी बातों की खोज' शीर्षक लेख में दिया है। यह पहले कहा ही जा चुका है कि अकलङ्क देव ने अपने सभी न्याय ग्रंथों पर स्वोपज्ञ वृत्तियाँ लिखी हैं। कुछ विद्वान पहले सिद्धिविनिश्चय की स्वोपज्ञवृत्ति में सन्देह करते थे किन्तु अब यह माना जाने लगा है कि उनकी सिद्धिविनिश्चय पर भी स्वोपज्ञ वृत्ति है। इसके लिये एक अति स्पष्ट प्रमाण नीचे दिया जाता है।

'ननु कारिकायां असित प्रधानम्' इत्यन्यत्साध्यं निर्दिष्टं वृत्तौ तु भेदानामेककारणपूर्वकत्वम्' अन्यदिति कथं वृत्तिसूत्रयोः, साङ्गत्यम् सूत्रानुरूपयो च वृत्त्या भवितव्यमिति चेदव केचित्परिहारमाहुः - पृ. 706।

यहां पर स्पष्टतया बतलाया गया है कि सिद्धिविनिश्चय स्वयं अकलङ्क देव की स्वोपज्ञवृत्ति है और कारिका तथा वृत्ति की एक असंगति की आशंका करके केचित् शब्दों के साथ उसका परिहार किया है। टीकाकार ने कितनी ही जगह मूल कारिकाओं को सूत्र और उसके विवरण को वृत्ति कहा है। अतः सिद्धिविनिश्चय की स्वोपज्ञ वृत्ति में अब कोई संदेह नहीं रहता।

टीका के प्रारंभ में मङ्गलाचरण के बाद अकलङ्क वचनों की इस कलिकाल में दुर्लभता प्रकट करते हुये और उन्हीं में अपनी मति श्रद्धा को स्थिर होने की भावना व्यक्त करते हुये टीकाकार ने बड़े ही महत्त्व का एक निम्न पद्य दिया हैं-

अकलङ्कवचः काले कलौ न फलयाऽपि यत्।
नृपु लभ्यं क्वचिल्लब्ध्वा तत्रैवास्तु मतिर्मम ।।2।।

इसके आगे एक अन्य पद्य द्वारा अकलङ्क वाङ्मय को सद्रत्नाकर समुद्र बतलाया है और उसके सूक्त रत्नों को अनेकों द्वारा यथेच्छ ग्रहण किये जाने पर भी कम न होने के कारण उसे

सद्रत्नाकर की प्रकट किया है। वह सुन्दर पद्य इस प्रकार हैं-

अकलङ्कवचोम्भोधेः सूक्तरत्नानि यद्यपि।

गृह्यन्ते बहुभिः स्वैरं सद्रत्ननाकर एव सः ।।4।।

इस ग्रंथ में बारह प्रस्ताव हैं और ये स्वयं अकलङ्कदेव कृत ही जान पड़ते हैं, क्योंकि उनके दूसरे ग्रंथों में भी उन्होंने इसी प्रकार से प्रस्ताव-विभाजन किया है। प्रस्ताव परिच्छेद को कहते हैं। धर्मकीर्ति ने प्रमाणवार्तिक में परिच्छेद नाम चुना है और अकलङ्कदेव ने परिच्छेदार्थक 'प्रस्ताव' नाम पसन्द किया है। वे बारह प्रस्ताव निम्न प्रकार हैं:-

1. प्रत्यक्षसिद्धि, 2.सविकल्पसिद्धि, 3.प्रमाणान्तर सिद्धि, 4. जीवसिद्धि, 5. अल्पसिद्धि, 6. हेतुलक्षणसिद्धि, 7. शास्त्रसिद्धि 8. सर्वज्ञसिद्धि 9. शब्दसिद्धि, 10. अर्थनय सिद्धि, 11. शब्दनयसिद्धि और 12. निक्षेपसिद्धि। इस प्रस्तावों में विषय का वर्णन उनके नाम से ही मालूम हो जाता है।

टीका में त्रक्ष भाग इस प्रकार से अन्तर्निहित नहीं है जिस प्रकार प्रभाचन्द्र के न्यायकुमुदचन्द्र में और उसकी वृत्ति है। किन्तु कारिका और वृत्ति के आद्य अक्षरों में प्रतीकमात्र किये गये हैं जिसमें यह जानना बढ़ा कठिन है कि यह मूलभाग है और यह ससम्बद्ध इतना है। टीका में अलग और दूसरी जगह में मूलभाग उपलब्ध भी अभी तक नहीं हुआ जिसकी सहायता से यह मूलभाग टीका पर में पृथक किया जा सके और ऐसी हालत में मूलभाग को टीका पर से पृथक् उद्धृत कर सकना बड़ा दुष्कर है। इसमें संदेह नहीं कि उसके लिये बड़े परिश्रम की जरूरत होगी। मुख्यतार सा. ने बड़े परिश्रम के साथ मङ्गलाचरण का निम्न पद्य उधृत किया था-

सर्वज्ञं सर्व-तत्त्वार्थ-स्याद्वाद-न्याय-देशिनम्।

श्रीवर्द्धमानमभ्यर्च्यं वक्ष्ये सिद्धिविनिश्चयम्।।1।।

हमने भी एक कारिका के उधृत करने का प्रयत्न किया है, जो इस प्रकार मालूम होता है-

समर्थवचनं जल्पं चतुङ्गं विदुर्बुधाः।

पक्षनिर्णयपर्यन्तं फलं मार्गप्रभावना।। पृ. 735(5वाँ प्रस्ताव)

टीका में मूल का उल्लेख 'कारिकां त्रिवृण्वन्नाह' 'स्वार्थेत्यादि-संग्रहवृत्तार्थमुद्धृत्य विवृण्वन्नाह !तदद्वयमाचार्यः स्वयं दुपयन्नाह-युक्तामित्यादि' 'एतदूपयितुं सूत्रार्थमाह नथैवेत्यादि' 'कारिकासूत्रं व्याचष्टे' सूरिराह' आदि रूप से किया गया है। कहीं कहीं आधी और पूरी की पूरी कारिका को ही सुगम कहकर छोड़ दिया गया है। यथा- 'पूर्वार्द्धस्य सुगमत्वाद् व्याख्यान मकृत्वा परमर्द्धं व्याचष्टे' 'द्वितीयां विवृरावन्नाह परस्परेत्यादि, सर्व सुगमं' 'कारिकायाः सुगमत्वात्' आदि। जिन कारिकाओं अथवा वृत्ति को अध्यण्यत बोध दिया गया है उनका उद्धार कैसे होगा ? यह शोचनीय है रचना शैली और भाषा-

समग्र टीका ग्रंथ में लिखी गई है। प्रारंभ में 5 और मध्य में 'शास्त्रसिद्धि' नामक सातवें तथा शब्दसिद्धि नाम के 9वें प्रस्ताव में क्रमशः 16,7 अनुष्टुप पद्य अवश्य पाये जाते हैं जो खुद

टीकाकार के ही रचे हुये होना चाहिये। प्रत्येक प्रस्ताव और टीका के अन्त में समाप्तिसूचक कोई पद्य नहीं है। ग्रंथान्त में तो उसका न होना खटकता भी है। क्योंकि प्रारंभ में पद्य थे और प्रायः ऐसा देखा जाता है कि जिस ग्रंथ के आरंभ में पद्य होते हैं उसके अन्त में भी एकाध पद्य जरूर रहा करता है। जैसे परीक्षामुख, न्यायदीपिका और न्यायकुमुदचन्द्र आदि। प्रत्येक प्रस्ताव और टीका के अन्त में सिर्फ निम्न प्रकार पुष्पिकावाक्य हैं :-

आदि- 'इतिश्रीरविभद्रपादोपजीव्यनन्तवीर्यविरचितायां सिद्धि विनिश्चयटीकायां प्रत्यक्षसिद्धिः प्रथमः प्रस्तावः।'

अन्तिम- 'इति सिद्धिविनिश्चयटीकायामनन्तवीर्याविरचितायां निक्षेपसिद्धिर्द्वादशमः प्रस्तावः। समाप्तमिति।'

भाषा सर्वत्र प्रसन्न और प्रायः सरल है। व्याख्या पद्धति यह है कि मूल ग्रंथ के पद-वाक्यों का समास करके अर्थ बतलाया गया है। तात्पर्य यह कि टीका की व्याख्या अधिकांश खण्डान्वय शैली की है। यथा-

'तज्ज्ञानहेतुः कुतः ? इत्याह- शब्दार्थप्रत्ययाङ्गमिति, शब्दानुकरणादर्थस्य घटादेर्ग्राहृकों यः प्रत्ययस्तस्याङ्ग निमित्तम्। एतदपि कुतः ? इत्याह-विवेचयतियतः। कं भेदम्। कथं यथाशक्ति। केषां वाच्यानामभिधेयानाम्। क्व वाचकेषु। यत एवं ततः प्रतिपत्तुः पुरुषस्य श्रुतविषयविकल्पोपलब्धेरूपयोगो निक्षेप इति।' पृ. 1549।

कविता

दूसरी महाभारत

वीरेन्द्र भूपत, सिरोंज

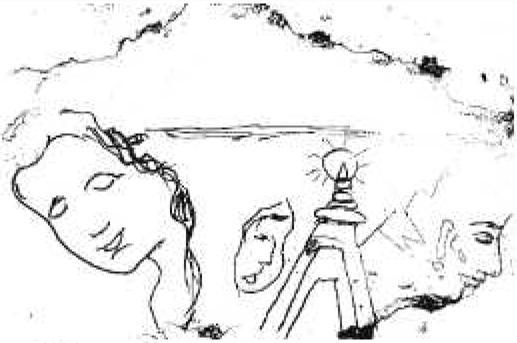

मैंने सुना है एक साड़ी उतारने के चक्कर में महाभारत हुआ था
मेरी उधेडबुन चल रही थी, वर्त्तमान परिस्थितियों को देखते हुये, आगे बढ़ रही थी
सोच रहा था एक साड़ी उतरने पर महाभारत
और आज तो जरूरत ही नहीं है, साड़ी उतारने की
पहनने वाले ही खुद कम कपड़े पहनते हैं
अंग प्रदर्शन करते है, और खुद ही नारी जाति का अपमान करते हैं
हे मातृ शक्ति स्वरूप में बहिन बेटियों इस भारत की लाज आप ही बचायें
अंग प्रदर्शन से सहज लिबास में आयें त्वचा नहीं झुलसेगी, मेकअप की जरूरत नहीं रहेगी
हो रही रेप की घटना में रोक लगेगी नारी समाज का अपमान रूकेगा
आदमी झुकेगा, त्याग तपस्या के गुण लेगा। सादा जीवन उच्च विचार में जी लेगा
लेकिन नारी समाज को आगे आना होगा और दूसरे महाभारत से देश को बचाना होगा।

संयम स्वास्थ्य योग

कटिस्नान कब, क्यों और कैसे ?

आरोग्य की दिशा में प्राकृतिक चिकित्सा अपना अलग ही महत्व रखती है उसमें भी कटिस्नान का अहं स्थान है अतः अब हमें कटि स्नान को समझना होगा।

विधिः किसी भी प्रकार के सुविधाजनक टब में कटि स्नान लिया जा सकता है। पहले के जमाने में लोग सूर्य को जल चढ़ाया करते थे, तब उनकी कमर तक का भाग पानी में रहता था, यह कटि स्नान में होता है। अतः टीन के टब में सामान्य जल भर लें। इसके लिये विशेष कटि स्नान टब टीन व प्लास्टिक के बाजार में मिलते हैं। टब में इतना जल भरें की नाभि तक जल आये। दोनों पैरों को किसी पटियें पर थोड़ा ऊँचा रखें। सिर और मुँह को छोड़कर अपने अन्य अंगों को किसी कम्बल से ढँक लेना उचित होगा। किन्तु उक्त ढँकने वाला कपड़ा गीला न हो, ऐसा प्रयास करें।

इस अवस्था में पेडू को नैपकिन से धीरे-धीरे रगड़ना चाहिये। प्रारंभ में 2-3 मिनिट के लिये उक्त स्नान का उद्देश्य है कि जो अंग पानी में डूबा है वह पूर्णतः ठंडा हो जाये। उसी हिसाब से कटि स्नान का समय घटाया या बढ़ाया जा सकता है। शीत ऋतु में कम समय में ग्रीष्म ऋतु में अधिक समय किया जा सकता है। कटि स्नान लेते समय शरीर विशेषकर पेडू व नितम्ब गर्म होना चाहिये। यदि गर्म न हो तो शारीरिक कसरत, टहलकर अथवा धूप में खड़ा रहकर अथवा तेजी से वार्म-अप कर शरीर को गर्म कर लेना लाभप्रद होता है। यदि रोगी कमजोर हो तो कटि स्नान के बाद रजाई। कम्बल ओढ़कर लेट जायें।

गर्म-ठंडा कटि स्नानः प्राकृतिक चिकित्सा में गर्म -ठंडा कटि स्नान एक चमत्कारिक स्नान है। यह गर्म ठंडी पट्टी का विकसित रूप है। इस स्नान के प्रयोग से पेडू, गर्भाशय, जनेन्द्रियों के पुराने रोग छुमन्तर हो जाते हैं। पुरानी कब्ज में तो यह स्नान चमत्कारिक लाभ पहुँचता है।

भक्तियोग-रहस्य

❊ पं. जुगल किशोर मुख्त्यार ❊

जैनधर्म के अनुसार, सब जीव द्रव्यदृष्टि से अथवा शुद्ध निश्चयनय की अपेक्षा परस्पर समान हैं- कोई भेद नहीं, सबका वास्तविक गुण-स्वभाव एक ही है। प्रत्येक जीव स्वभाव से ही अनन्त दर्शन, अनंत ज्ञान, अनंत सुख और अनन्त वीर्यादि अनन्त शक्तियों का आधार है- पिण्ड है। परन्तु अनादि काल से जीवों के साथ कर्ममल लगा हुआ है, जिसकी मूल प्रकृतियाँ आठ, उत्तर प्रकृतियाँ एक सौ अड़तालीस और उत्तरोत्तर प्रकृतियाँ असंख्य हैं। इस कर्म-मल के कारण जीवों का असली स्वभाव आच्छादित है, उनकी वे शक्तियाँ अविकसित हैं और वे परतंत्र हुये नाना प्रकार की पर्यायें धारण करते हुये नजर आते हैं। अनेक अवस्थाओं को लिये हुये संसार का जितना भी प्राणिवर्ग है वह सब उसी कर्म मल का परिणाम है- उसी के भेद से यह सब जीव जगत् भेदरूप हैं, और जीव की इस अवस्था को 'विभाव-परिणति' कहते हैं। जब तक किसी जीव की यह विभाव-परिणति बनी रहती है, तब तक वह 'संसारी' कहलाता है और तभी तक एसे संसार में कर्मानुसार नाना प्रकार के रूप धारण करके परिभ्रमण करना तथा दुःख उठाना होता है, जब योग्य साधनों के बल पर यह विभाव-परिणति मिट जाती है- आत्मा में कर्म मल का सम्बन्ध नहीं रहता- और उसका निज स्वभाव सर्वान्नरूप से अथवा पूर्णतया विकसित हो जाता है, तब वह जीवात्मा संसार-परिभ्रमण से छूटकर मुक्ति को प्राप्त हो जाता है और मुक्त, सिद्ध अथवा परमात्मा कहलाता है, जिसकी दो अवस्थाएँ हैं- एक जीवन्मुक्त और दूसरी विदेहमुक्त। इस प्रकार पर्यायदृष्टि से जीवों के 'संसारी' और 'सिद्ध' ऐसे मुख्य दो भेद कहे जाते हैं, अथवा विकसित, अल्पविकसित, बहुविकसित और पूर्ण-विकसित ऐसे चार भागों में भी उन्हें बाँटा जा सकता है। और इसलिये जो अधिकाधिक विकसित हैं वे स्वरूप से ही उनके पूज्य एवं आराध्य हैं , जो अविकसित या अल्पविकसित हैं क्योंकि आत्मगुणों का विकास सबके लिये इष्ट है।

ऐसी स्थिति होते हुये यह स्पष्ट है कि संसारी जीवों का हित इसी में है कि वे अपनी विभाव-परिणति को छोड़कर स्वभाव में स्थिर होने अर्थात् सिद्धि को प्राप्त करने का यत्न करें। इसके लिये आत्म-गुणों का परिचय चाहिये, मार्ग की दृढ श्रद्धा चाहिये। बिना अनुराग के किसी भी गुण की प्राप्ति नहीं होती- अनुरागी अथवा अभक्त-हृदय गुण ग्रहण का पात्र ही नहीं, बिना विकास-मार्ग की दृढ श्रद्धा के गुणों के विकास की ओर यथेष्ट प्रवृत्ति ही नहीं बन सकती। और इसलिये अपना हित एवं विकास चाहने वालों को उन पूज्य महापुरुषों अथवा सिद्धात्माओं की शरण में जाना चाहिये। उनकी उपासना करनी चाहिये, उनके गुणों में अनुराग बढ़ाना चाहिये और उन्हें अपना मार्ग-प्रदर्शक मानकर उनके नक्शे कदम पर चलना चाहिये अथवा उनकी शिक्षाओं पर अमल करना चाहिये, जिनमें आत्मा के गुणो का अधिकाधिक रूप में अथवा पूर्णरूप विकास हुआ हो,

यही उनके लिये कल्याण का सुगम मार्ग है। वास्तव में ऐसे महान् आत्माओं के विकसित आत्मस्वरूप का भजन और कीर्तन ही हम संसारी जीवों के लिये अपने आत्मा का अनुभवन और मनन है, हम 'सोऽहं' की भावनाद्वारा उसे अपने जीवन में उतार सकते हैं और उन्हीं के- अथवा परमात्मस्वरूप के -आदर्श को सामने रखकर अपने चरित्र का गठन करते हुये अपने आत्मीय गुणों का विकास सिद्ध करके तद्रूप हो सकते हैं। इस सब अनुष्ठान में उनकी कुछ भी गरज नहीं होती और न इस पर उनकी कोई प्रसन्नता ही निर्भर है- यह सब साधना अपने ही उत्थान के लिये की जाती है। इसी से सिद्धि के साधनों में 'भक्तियोग' को एक मुख्य स्थान प्राप्त है, जिसे 'भक्ति-मार्ग' भी कहते है।

सिद्धि को प्राप्त हुये शुद्धात्माओं की भक्तिद्वारा आत्मोत्कर्ष साधने का नाम ही गुणों में अनुराग को, तदनुकूल वर्त्तन को अथवा उनके प्रति गुणानुराग-पूर्वक आदर-सत्काररूप प्रवृत्ति को कहते हैं, जो कि शुद्धात्मवृत्ति की उत्पत्ति एवं रक्षा का साधन है। स्तुति, प्रार्थना, वन्दना, उपासना, पूजा, सेवा, श्रद्धा और आराधना ये सब भक्ति के ही रूप अथवा नामान्तर हैं। स्तुति पूजा वन्दनादि रूप से इस भक्तिक्रिया को 'सम्यक्त्ववर्द्धिनी क्रिया' बतलाया है, शुभोपयोगि चारित्र लिखा है और साथ ही 'कृतिकर्म' भी लिखा है जिसका अभिप्राय है 'पापकर्म-छेदन का अनुष्ठान'। सद्भक्ति द्वारा औद्धत्य तथा अहंकार के त्यागपूर्वक गुणानुराग बढ़ने से प्रशस्त अध्यवसाय की कुशल परिणाम की उपलब्धि होती है और प्रशस्त अध्यवसाय अथवा परिणामों की विशुद्धि से संचित कर्म उसी तरह नाश को प्राप्त होता है, जिस तरह काष्ठ के एक सिर में अग्नि के लगने से वह सारा ही काष्ठ भस्म हो जाता है। इधर संचित कर्मों के नाश से अथवा उनकी शक्ति से शमन से गुणावरोधक कर्मों की निर्जरा होती या उनका बल क्षय होता है तो उधर उन अभिलषित गुणों का उदय होता है, जिससे आत्मा का विकास सधता है। इससे स्वामी समन्तभद्र जैसे महान आचार्यों ने परमात्मा की स्तुति रूप में इस भक्ति को कुशल परिणाम की हेतु बतलाकर इसके द्वारा श्रेयोमार्ग को सुलभ और स्वाधीन बतलाया है और अपने तेजस्वी तथा सुकृती आदि होने का कारण भी इसी को निर्दिष्ट किया है, और इसीलिये स्तुति वंदनादि के रूप में यह भक्ति अनेक नैमित्तिक क्रियाओं में भी शामिल की गई है तो कि सब आध्यात्मिक क्रियाएँ है और अन्तदृष्टि पुरुषों (मुनियों तथा श्रावकों) के द्वारा आत्मगुणों के विकास को लक्ष्य में रखकर ही नित्य की जाती है और तभी वे आत्मोत्कर्ष की साधक होती हैं। अन्यथा, लौकिक लाभ, पूजा प्रतिष्ठा, यश, भय, रूढ़ि आदि के वश होकर करने से उनके द्वारा प्रशस्त अध्यवसाय नहीं बन सकता और न प्रशस्त अध्यवसाय के बिना संचित पापों अथवा, कर्मों का नाश होकर आत्मीय गुणों का विकास ही सिद्ध किया जा सकता है। अतः इस विषय में लक्ष्यशुद्धि एवं भावशुद्धि पर दृष्टि रखने की खास जरूरत है, जिसका सम्बन्ध विवेक से है। बिना विवेक के कोई भी क्रिया यथेष्ट फलदायक नहीं होती, और न बिना विवेक की भक्ति सद्भक्ति ही कहलाती है।

एक चिंतनीय प्रश्न दूसरे के सुख से दुखी क्यों

❊ डॉ. रेखा जैन, शिकोहाबाद ❊

आज भौतिकता की चकाचौंध में आदमी जीवन यापन कर रहा है और उसकी सोच भी नकारात्मक होती जा रही है जो इंसान को गर्त की ओर ले जा रही है। सकारात्मक सोच घटती जा रही है और इंसान इतना दुखी रहता है, और वो मानसिक रोगों से ग्रस्त हो रहा है। आज इंसान अपने दुख से दुखी नहीं दूसरे के सुख से ज्यादा दुखी हो रहा है। और अशांति की ओर अग्रसर हो रहा है और अनेक प्रकार की बीमारियों से जूझ रहा है। यदि आप सुखी रहना चाहते हैं तो कमी में भी गुणों को ढूंढे और यदि दुखी रहना चाहते हो तो हर समय कमियाँ ढूंढते रहें। सोच साकारात्मक रखें।

लोग ईर्ष्या तब करते हैं जब वे अपने जीवन में संतुष्ट नहीं होते। जब वे संतुष्ट नहीं होते तब वे खुश नहीं होते। वे स्वयं को आनंदित व सुखी महसूस नहीं कर पाते। अतः ऐसे लोग अपनी खुशियों में खुश ना रहकर दूसरों की खुशियों से दुखी रहते हैं। ईर्ष्या एक भाव है जो किसी के पास कुछ ऐसी चीज होने की वजह आ सकती है, जो आप पाना चाहते थे या अगर किसी के पास कोई चीज आपसे ज्यादा है। अगर आप में किसी तरह की अपूर्णता है, जिसकी वजह से दूसरों के सामने आप अच्छा महसूस नहीं कर पाते हो, तो इससे भी कई बार ईर्ष्या पैदा हो जाती है। ईर्ष्या में मुख्य रूप से एक अपूर्णता का भाव छिपा होता है। यदि आप आनंद के भाव से पूरी तरह भरे हों, तो आपके भीतर किसी के भी प्रति ईर्ष्या का भाव नहीं होगा। जैसे ही आपको ये लगता है कि आपके बगल में बैठे आदमी के पास आपसे कुछ ज्यादा है और आप उससे खुद को कम महसूस करने लगते हैं तो ईर्ष्या का भाव पैदा होता है। अगर यहां आपसे बेहतर कोई दूसरा व्यक्ति मौजूद है तो ईर्ष्या पैदा हो सकती है। यदि आप खुद में मस्त हैं तो ईर्ष्या का कोई प्रश्न ही नहीं है।

मैं एक छोटा-सा उदाहरण सबके समक्ष रख रही हूं। हमारे पड़ोस में एक संपन्न परिवार रहता है उनका काम सदा दूसरे के काम में कमी निकालना है। कभी किसी की उन्नति बर्दाश्त नहीं कर सकते। हमारे यहां पर नई कार आई तो ईर्ष्या जलन की आग भड़कने लगी और तब तक शांत नहीं होती जब तक दूसरे से मन की भड़ास न निकाल लें। दूसरे पड़ोसी से कहने लगी अरे ऐसी कार तो हम खड़े खड़े ले लेते लेकिन हम नहीं लाते इसके पीछे कारण है आज दिन एक्सीडेंट हो रहे हैं तो फिर हम मौत को क्यूं बुलावा दें। इतना सुनते ही मैं अपने को रोक नहीं पाई। और मैंने जवाब दिया जब ऊपर से बुलावा आता है न डॉक्टर काम आता है ना ही दुआ काम आती है और ना दवा ना मंत्र ना तंत्र। और यदि साँसें बाकी है। तो मुर्दे भी उठकर बैठे जाते हैं। सुनते के साथ एकदम चुप हो गई जैसे सांप सूंघ गया हो।

ईर्ष्या का सबसे मुख्य कारण दूसरे की सफलता क्योंकि जब आप सफल होने लग जाते हैं। तो लोग आपसे जलने लग जाते हैं। जैसे अगर किसी के घर में किसी की नौकरी लग गई तो सामने वाले घर मे लड़ाई शुरु हो जाती है तो इसे कहते हैं ईर्ष्या, दरअसल लोग अपने दुख से दुखी नहीं है लोग दूसरों के सुख से दुखी हैं।

ईर्ष्या एक ऐसा शब्द है जो मानव के खुद के जीवन को तो तहस-नहस करता है औरों के जीवन में भी खलबली मचाता है। यदि आप किसी को सुख या खुशी नहीं दे सकते तो कम से कम दूसरों के सुख और खुशी देखकर जलिए मत। यदि आपको खुश नहीं होना है न सही मत होइए खुश, किन्तु किसी की खुशियों को देखकर अपने आपको ईर्ष्या की आग में न जलाएं।

दूसरे की आलोचना टीका टिप्पणी करने से अच्छा है अपनी जिंदगी में लगे हुये मैल को समीक्षा रूपी साबुन के द्वारा धोकर साफ किया जाए। हर चीज बदली जा सकती है सिवाय गिरि हुई सोच के। दूसरे के सुख से दुखी होने की सोच इंसान की प्रगति में बाधक बनती है और उसे अच्छे मुकाम तक नहीं पहुंचने देती।

कहने का तात्पर्य है कि इंसान ने अपने दुखों का इजाफा खुद किया। ईर्ष्या, जलन, डाह, स्वार्थ की प्रवृत्ति से खुद ही दुखी सुखी हो रहा है। आज इंसान इतना स्वार्थी हो गया हैं कि उसके आगे कुछ नहीं दिखाई देता। अपनी स्वार्थ पूर्ति में चाहे जितना नुकसान हो उसे झेलने की क्षमता रखता है किन्तु स्वार्थ नहीं छोड़ता। इसलिये स्वस्थ मानसिकता में जीना चाहिये जो हमें निरंतर आगे बढ़ने की प्रेरणा देता रहे। मैं उन लोगों को चेतावती देती हूँ गलत काम का नतीज बुरा ही होता है।

अफसोस की बात है आज के समाज की कि लोग किसी के दुःख को देखकर तो बहुत दुखी होते हैं सहानुभूति जताते हैं लेकिन किसी की खुशी को देखकर खुश नहीं होते। किसी की उन्नति से, किसी के गुणों से जलते हैं और दुखी होते हैं और पूरा प्रयास करते हैं कि सामने वाले का बुरा हो। हम सभी को इससे बचना चाहिये।

अक्सर समाज में देखा जाता हे कि कोई आगे बढ़ रहा है, किसी की उन्नति हो रही है, नाम हो रहा है किसी का अच्छा हो रहा है तो अधिकांश लोग ऐसे देखने को मिलेंगे जो पहले यह सोचेंगे, कैसे आगे बढ़ते लोगों की राह का रोड़ा बना जाये। उनका कैसे नीचा दिखाया जाए। कैसे समाज में उनकी मजाक बने और कैसे उनकी खुशियां छीनी जाए। बहुत कम लोग ऐसे होते हैं जो किसी को आगे बढ़ता देख किसी की उन्नति होते देख आनंद का अनुभव करते हैं या खुश होते हैं। एक मुक्तक के माध्यम से अपने मन के भाव को शब्दों को बाना पहनाया है देखियेः -

कपट खाद से फसल उगाकर, खूब कमाये नोट।
अंत समय कुछ काम न आया, भूल गये सब वोट।
मरघट के लिये घर से चला, रोता सब परिवार।
खोटे धन से भरी तिजोरी, शूल दिलाये चोट।

आज इंसान इस बात से दुखी नहीं होता कि उसकी जिंदगी में दुख है वह इस बात से ज्यादा दुखी है कि दूसरे की जिंदगी में उससे ज्यादा सुख है। इसी बात को लेकर वो ईर्ष्या से जल जाता है।

ईर्ष्या बोलने में एक आम समस्या लगती है लेकिन अगर यह बढ़ जाये तो हमें इसके बारे में तुरंत सोचना और समझना चाहिये। अगर हम किसी से ईर्ष्या कर रहे हैं तो इसका मतलब यह है कि या तो हमारे में आत्मविश्वास की कमी है या हम उसकी सफलता से बहुत ज्यादा दुःखी हैं।

चलो देखें यात्रा

नैसर्गिक तीर्थ कुंथलगिरि

महत्व एवं दर्शन:- क्षेत्र पर 11 मंदिर पहाड़ एवं तलहटी पर हैं। देशभूषण एवं कुलभूषण मुनिवरों की मोक्षस्थली है। शांतिसागर महाराज की समाधि स्थल पर चरण चिन्ह एवं मूर्ति बने हुये हैं। पहाड़ी पर 7 एवं तलहटी में 4 मंदिर हैं। गुरुकुल है। क्षेत्र शांत, रमणीय है। मेले पर 3 मंजिला लकड़ी रथ आकर्षण का केन्द्र रहता है। क्षेत्र पर भगवान बाहुबली की 18 फुट प्रतिमा के अलावा आदिनाथ मंदिर भगवान, अजितनाथ मंदिर, भगवान मुनिसुव्रतनाथ मानस्तंभ (53 फुट ऊँचा) एवं अन्य कई मंदिर आकर्षक हैं।

मार्गदर्शन:- निकटतम रेलवे स्टेशन येडशी-वार्शी कुर्डवाडी 70 किमी हैं। उस्मानाबाद, सोलापुर, बीड़ से जो बसें भूम जाती हैं वे सब कुंथल गिरि धर्मशाला तक जाती हैं, जो बसें औरंगाबाद, सोलापुर, उस्मानाबाद और बीड़ के मध्य चलती हैं वे कुंथलगिरी काटा (सरमगुंडी बस अड्डा) पर रूकती हैं। यहां से कुंथलगिरी 2 किमी है।

सांवरगांव- 115, तेर-60, पैठण-140, कचनेर- 165, बीजापुर-220, कुंभोज -275, बीड़- 60, उस्मानाबाद- 60, औरंगाबाद- 200, दहीगांव-175, सोलापुर- 125, नवागढ़ -218 किमी।

नाम एवं पता- श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र, कुंथलगिरि, तह. भूम जि. उस्मानाबाद (महाराष्ट्र) 413503,

प्रबंधक- श्री शहा यू.आर (संपर्क सूत्र- 09421445115), मंत्रीः बालचंद नानचंद्र संघवी बारामती- 09822459279

सुविधायें : सर्व सुविधायुक्त 75 कमरे तथा 1 हॉल है। एक गेस्ट हाउस है। सर्वसुविधाओं वाली 3 धर्मशालायें एवं 20 वी आई पी स्वीट भी हैं। भोजनशाला नियमित सशुल्क है।

श्री देशभूषण ब्रह्मचर्याश्रम एवं विद्यालय कार्यरत हैं।

विशेष: कुंथलगिरी से परभणी होते हुये नवागढ़ 218 किमी है। रास्ते में प्रसिद्ध पर्ली बैजनाथ हिन्दु तीर्थ आता है।

कविता

कर्मों की गति यह न्यारी है

✲ कांतिकुमार जैन, करूण खिमलासा ✲

कर्मों की गति यह न्यारी है, दुख सहे जगत ने भारी है।
यह महापुरुष भी हार गये, यह किसने अरे ! विचारी है।।

यह कर्म रूलाते रहे सदा,
जो पाप किसे कितने भारी।
जो विषय भोग में व्यस्त रहे,
संकट वह आया है भारी।।

इसलिये समझ लो हे बन्धु ! शुभ धर्म हमें उपकारी है।
कर्मों की गति यह न्यारी है, दुख सहे जगत ने भारी है।।

महापुरुष बने जो तीर्थंकर,
उनने संसार को त्यागा था।
जीवन का क्षण कितना विशाल,
तब उनका मन यह जागा था।।

गुरुवर ने भेष दिगम्बर धर, गुरुवर सम्यक धारी है।
कर्मों की गति यह न्यारी है, दुख सहे जगत ने भारी है।।

यह कर्म रूलाते रहे सदा,
जिनने संसार से मोह रहा।
यह कर्म के द्वारा जन्म मरण,
सहते हैं रहे जिनने राग रखा।।

कब तक तुम दुख सहोगे अरे ! कर्मों की गति बलिहारी है।
कर्मों की गति यह न्यारी है, दुख सहे जगत ने भारी है।।

जागो हे चेतन क्यों सोये,
यह व्यर्थ न अपने दिन खोओ।
शुभ धर्म भावना भावों अब,
अब पाप बीज मत वोओं।।

तब मिले सफलता जीवन में ,जिनने मुक्ति मार्ग को धारी है।
कर्मों की गति यह न्यारी है, दुख सहे जगत ने भारी हैं।

आचार्य विद्यानंद एक परिचय

✲ डॉ. अरिहन्त कुमार जैन, महाराष्ट्र ✲

आपने अपना समस्त जीवन- धर्म और संस्कृति की प्रभावना, धर्म और राजनीति में समन्वय, साहित्य को जन-जन का कण्ठहार बनाने व अहिंसा, अनेकांत तथा अपरिग्रह के व्यावहारिक एवं प्रायोगिक स्वरूप को समझने व समझाने में समर्पित किया। वे आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज के परम शिष्य रहे और उन्हीं की प्रेरणा एवं मार्गदर्शन से कन्नड़ भाषा में लिखे प्राचीन ग्रंथों का सरल हिन्दी व संस्कृत में अनुवाद किया। आपके प्रभावक प्रवचनों को आलेखबद्ध कर अनेक छोटी-बड़ी पुस्तकें प्रकाशित हुई। आपको प्राकृत एवं अपभ्रंश भाषाओं से विशेष लगाव था, इसीलिये आपने अनेक विद्वानों द्वारा प्राकृत भाषा के प्राचीन, दुर्लभ किन्तु महत्वपूर्ण ग्रंथों का सम्पादन, अनुवाद तथा प्रकाशन कराया। जैन साहित्य के विकास में आपका बहुमूल्य योगदान है। आपके उपलब्ध साहित्य के आधार पर हम गर्व के साथ कह सकते हैं कि आप मात्र जैन साहित्य में ही नहीं, अपितु सम्पूर्ण हिन्दी साहित्य में एक प्रमुख हस्ताक्षर के रूप में प्रतिष्ठित हैं। आचार्य विद्यानन्द द्वारा रचित कुछ प्रमुख ग्रन्थों के नाम इस प्रकार हैं :-

1. पिच्छि कमण्डलु, 2. अपरिग्रह से भ्रष्टाचार उन्मूलन, 3. देव और पुरुषार्थ, 4. निर्मल आत्मा ही समयसार है, 5. भक्ति के अंगूर, 6. विश्वधर्म के मंगलपात, 7. समय का मूल्य, 8. अनेकान्त-सप्तभंगी-स्याद्वाद, 9. स्वतंत्रता, समाजवाद और अनुशासन, 10. विश्वधर्म के दस लक्षण, 11. सप्त व्यसन, 12. अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोग, 13. नारी का स्थान और कर्त्तव्य, 14. आदि कृषि शिक्षक तीर्थंकर, 15. ईश्वर क्या और कहाँ , 16. पावन पर्व रक्षाबन्धन 17. सुपुत्र कुलदीपक, 18. श्रमण संस्कृति और दीपावली 19. धर्मनिरपेक्ष नहीं सम्प्रदायनिरपेक्ष, 20. मोहनजोदड़ो- जैन परम्परा और प्रमाण, 21. तीर्थंकर वर्धमान, 22. मंत्र, मूर्ति और स्वाध्याय, 23. वीर प्रभु, 24. सर्वोदय तीर्थ, 25. सोने का पिंजरा, 26. विश्वधर्म की रूपरेखा, 27. अहिंसा- विश्वधर्म, 28. जैन साहित्य में विकार, 29. आध्यात्मिक सूक्तियाँ, 30. पुरुदेव भक्ति गंगा, 31. महावीर भक्ति गंगा, 32. नेमीनाथ भक्ति गंगा, 33. मंगल कुमकुम पात, 34. अग्नि और जीवत्व शक्ति, 35. कल्याण मुनि और सम्राट सिकन्दर, 36.जैन संस्कृति में ज्ञान और पूजा, 37. महात्मा ईश, 38. गुरु परिवाद विचार (मराठी), **मंगल प्रवचनों का संग्रह-** 39. गुरुवाणी (पांच भाग), 40. मंगल प्रवचन, 41. अमृतवाणी

ये सभी ग्रंथ इतनी अधिक सरल, सुबोध शैली में लिखे गये हैं कि साधारण से साधारण व्यक्ति भी इन्हें पढ़कर के उस ग्रंथ के प्रतिपाद्य विषय को भी सहज ही समझ सकता है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि आचार्य विद्यानन्द जी का जैन धर्म के साहित्यिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों के विकास में बहुमूल्य योगदान है। आचार्य श्री स्वयं में एक विश्वविद्यालय रहे हैं। आपने अकेले ही सांस्कृतिक उन्नयन का जितना कार्य किया है, उतना अनेक संस्थाएं मिलकर भी शायद ही कर पाएँ । ऐसा प्रभावशाली और राष्ट्रीय विचारधारा से ओत-प्रोत उनका व्यक्तित्व उनको मौलिक रूप से राष्ट्रसंत के रूप में परिभाषित करता है।

आगम दर्शन

प्राकृत भक्ति

सिद्धभक्ति- यह स्तुतिपरक ग्रंथ है। 12 गाथाओं में सिद्धों के गुण-भेद, सुख स्थान, आकृति और सिद्धि-मार्ग का निरूपण किया गया है। इस पर प्रभाचन्द्राचार्य की एक संस्कृत टीका है।

सुदभत्ति- इस भक्तिपाठ में 11 गाथाएँ हैं। इसमें आचरांग, सूत्रकृतांग आदि द्वादश अंगो का भेद-प्रभेद सहित उल्लेख करते हुये उन्हें नमस्कार किया गया है। साथ ही 14 पूर्वों में से प्रत्येक की वस्तुसंख्या और प्रत्येक वस्तु के प्राभृतों को संख्या भी दी है।

चारित्त-भत्ति- 10 अनुष्टुप गाथाछन्द हैं। सामायिक, छेदोपस्थापन, परिहारविशुद्धि, सूक्ष्मसाम्पराय और यथाख्यात नाम के चारित्रों अहिंसादि 28 मूलगुणों, दस धर्मों, त्रिगुप्तियों, सकलशीलों, परीषह जय और उत्तरगुणों का उल्लेख करते हुये मुक्तिसुख देने वाले चारित्र की भावना की गयी है।

आइरियभत्ति- इसमें 10 गाथाएँ हैं और इनमें आचार्यों के उत्तम गुणों का उल्लेख करते हुये नमस्कार किया है।

जोइभत्ति- 23 गाथाओं में योगियों की अनेक अवस्थाओं ऋद्धियों, सिद्धियों एवं गुणों के साथ उन्हें नमस्कार किया है।

णिव्वाणभत्ति- इस भक्ति पाठ में 27 गाथाएँ हैं। इनमें निर्वाण का स्वरूप एवं निर्वाण प्राप्त तीर्थंकरों की स्तुति की गई है।

पंचगुरुभत्ति- इस भक्ति पाठ में सात पद्य हैं। प्रारंभिक पांच पद्यों में क्रमशः अर्हत्, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और साधु इन पांच परमेष्ठियों का स्तवन है। छठे पद्य में स्तवन का फल अंकित है। सातवे पद्य में पांच परमेष्ठियों का अभिधान पंच नमस्कार में किया है।

थोस्सामि थुदि- थोस्सामि पद से आरंभ होने वाली अष्टगाथात्मक स्तुति है। इसे तीर्थंकर भक्ति भी कहा गया है। स्तुतिपाठ में वृषभादि वर्धमान पर्यन्त चतुर्विंशति तीर्थंकरों की उनके नामोल्लेख पूर्वक वन्दना की गई है। अंत में समाधि, बोधि और सिद्धि की प्रार्थना की गई है।

समस्या पूर्ति प्रतियोगिता
दिसम्बर 2022
मेरी प्यारी गुड़िया रानी

प्रथम-

मन की सच्ची अच्छी बच्ची
नाचे गाये मेरी बच्ची
सुनती हर दिन परी कहानी
मेरी प्यारी गुड़िया रानी

श्रीमती खुशबू जैन, गुना (म.प्र.)

द्वितीय-

चल घर अपना पाठ पढ़ो तुम
पढकर झट होशियार बनो तुम
बेटी जग में बड़ी सुहानी
मेरी प्यारी गुड़िया रानी

श्रीमती दिव्या जैन, इन्दौर(म.प्र.)

तृतीय-

सरल तरल यह चंचल जानी।
मेरी प्यारी गुड़िया रानी।

अभिषेक जैन, अहमदाबाद(गुजरात)

वर्ग पहेली क्र. 277
नवम्बर 2022 के विजेता

प्रथम : श्रीमती अनिता जैन, ललितपुर (उ.प्र)
द्वितीय : .श्रीमती कल्पना जैन, इन्दौर (म.प्र)
तृतीय : मधुर जैन, सागर (म.प्र.)

माथा पच्ची

निम्न अक्रमबद्ध वर्णों को क्रमबद्ध बनाकर रिक्त स्थान में एक सार्थक शब्द बनाइए।

1. आ द् अ द् अ द्ध ण् आ अ ल् अ र् ष् द
2. ई ओ अ स् आ क् अ र् अ प् र् व् न् त् त् र् सं
3. क् इ ओ त् इ आ य् ग् त् इ आ इ न् द् ए द् श प्र
4. स् अ र् अ आ आ र् आ म् अ व् इ र् अ उ र् प् अ व् र् य् ग वि
5. अ स् क् आ र् अ आ स् ग् अ र् सं

परिणाम :
अगस्त 2022: (1) संस्कार सागर (2) जैन संदेश (3) कुन्दकुन्द वाणी (4) अर्हत वचन (5) शोधादर्श

पुराण प्रेरणा

सच्चे सुख का स्वरूप

किं सु खं यदि न स्वमात्का लक्ष्मीश्चेदियं चला।
किं यौवनं यदि ध्वंसि किमायुर्यदि सावधि ।।

वह सुख की क्या है जो अपनी आत्मा से उत्पन्न न हो, वह लक्ष्मी ही क्या है चञ्चल हो, वह यौवन ही क्या है जो नष्ट हो जाने वाला हों, और वह आयु ही क्या है, जो अवधि से सहित हो-सान्त हो।

दीक्षा लक्ष्म्या: स्वयं प्राप्ता सद्बुद्धि: सिद्धिदायिनी।
इति प्रबुद्ध तत्वं तं प्रेपद्य सुरसंयता ।।

मोक्ष प्राप्त कराने वाली उनकी सद् बुद्धि अपने आप दीक्षा-लक्ष्मी को प्राप्त हो गई थी। इस प्रकार जिन्होंने आत्मतत्त्व को समझ लिया है ऐसे भगवान चन्द्रप्रभ के समीप लौकान्तिक देव आये और यथायोग्य स्तुति कर ब्रह्म स्वर्ग को वापिस चले गये।

रतिरच्छिन्नसन्ताना तस्य भोग्याश्च तादृशा: ।
तस्मात्स्वसुखविच्छेदं नावेदक्षीणपुण्यक: ।।

उसके सुख की परम्परा निरन्तर बनी रहती थी और उसके भोगोपभोग के योग्य पदार्थ भी सदा उपस्थित रहते थे अत: विशाल पुण्य का धारी वह राजा अपने सुख के विरह को कभी जानता ही नहीं था।

अनङ्गस्तब्दलेनैनं पञ्चवाणोऽपि निष्ठुरम्।
अविध्यब्दहुवाणो वा को न कालबले बली ।।

कामदेव यद्यापि शरीर रहित था और उसके पास सिर्फ पाँच ही वाण थे, तो भी वह राजा पद्मगुल्म को इस प्रकार निष्ठुरता

केरियर

कटेंट राइटर बनें पैसे कमायें

आज की तारीख में डिजीटल दुनिया में अपनी मौजूदगी बनाने के लिये कंटेट राइटरों की मांग काफी बढ़ गई है।

कंटेट राइटर कौन होता है- कंटेट राइटर वह व्यक्ति होता है जो किसी भी दिये गये विषय पर जानकारी से भरा एक लेख या पोस्ट किसी की मांग पर लिख सकता है। यह कोई न्यूज, ब्लॉग, पोस्ट हो सकता है या किसी का परिचय हो सकता है। इस राइटिंग के लिये उसे एक निश्चित पारिश्रमिक मिलता है।

कंटेट राइटिंग कैसे सीखे- कंटेट राइटिंग सीखने की पहली शर्त है कि आपको लिखने में रूचि हो लिखने से भी पहले पढ़ने में रूचि हो। आपको उसी विषय का कंटेट राइटर बनने की कोशिश करनी चाहिये। इसके लिये उसी विषय में आप ज्यादा पढ़िए, वर्तमान की नहीं अतीत की जानकारियां भी जुटाइए आजकल कंटेट राइटिंग सिखाने के बहुत सारे ऑनलाइन कोर्स है। जिनमें से आप अपनी जरूरत के हिसाब से कोई पाठ्यक्रम चुन सकते हैं।

कंटेट क्या होता है- कंटेट किसी पेशेवर, किसी उत्पाद किसी सेवा या किसी तकनीक का परिचय हो सकता है। किसी उत्पाद की विशेषताएँ या उसकी कार्यविधि का परिचय हो सकता है कंटेट राईटर किसी विषय व्यक्ति या बिजनेस की सही तरीके से पहले समझें, उसके बाद उस पर व्यवस्थित ढंग से 200-400 शब्दों से लेकर 1000-1200 शब्दों तक लिखे, जो लिखा जाए वह सरल, रोचक और आम लोगों की समझ में आ जाये तो निश्चित रूप से एक सफल कंटेट राईटर बन सकता है।

क्या कंटेट राइटर सब कुछ लिख सकता है ? नहीं कंटेट राइटर का भी एक निश्चित विषय होता है, बावजूद इसके बुनियादी तौर पर वह ज्यादा विषयों के बारे में जानकारी रखे तो अच्छा है, हाँ अगर कंटेट राईटर पत्रकार है और उसने तमाम विषयों को बुनियादी जानकारी के स्तर पर पड़ा और समझा है तो वह उनकी सूचना देने के लिहाज से कई विषयों पर लिख सकता है

कविता

तत्वज्ञान की माला

लेखक: कर्मयोगी महाकवि योगेन्द्र दिवाकर, सतना

मृत्यु खड़ी मुंह बाये देखो, कालानाग खड़ा डसने को
नाकारा बन यहाँ रहोगे, दुनिया है तुम पर हँसने को ॥
करुणा के मर्मज्ञ समझते, शाश्वत है जिनभारती
कारण, तत्वज्ञान की माला, जीवन को श्रृंगार जी ॥
मूकमाटी महाकाव्य रचयिता, तत्वज्ञान के महाहिमालय
मध्यम परमेष्ठी सम्मुख हैं , आचार्य श्री आगम के विद्यालय

दुनिया भर की बातें

■ 1 नवम्बर

- दिल्ली के नरेला औद्योगिक क्षेत्र में एक फैक्ट्री में आग लगी 2 लोगों की मौत हुई।

- बेंगलुरुः पुलवामा हमले का जश्न मनाने वाला फैज राशिद को विशेष अदालत ने 5 साल की कैद की सजा सुनाई।

- म्यांमार की सेना ने महिला सहित दो भारतीयों को गोली से भूना।

■ 2 नवम्बर

- प्रवर्तन निदेशालय ने झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरन को समन जारी किया।

- पद्मभूषण गांधीवादी इलाबेन का निधन हुआ। वे 89 वर्ष की थीं।

- जयपुरः पाक विस्थापित 9 नागरिकों को भारत की नागरिकता मिली।

■ 3 नवम्बर

- गुजरात विधानसभा चुनाव की घोषणा दो चरण में हुई। और 5 दिसम्बर को मतदान 8 दिसम्बर को मतगणना होगी।

- पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान को हमला ने गोली मारी हालात खतरे बाहर। इमरान खान सेना के विरूद्ध मोर्चा निकाल रहे थे।

- ईरान में हिजाब विरोधी प्रदर्शन जारी है 22 विश्वविद्यालय में छात्र छात्राओं ने कक्षाओं का बहिष्कार किया।

■ 4 नवम्बर

- इमरान खान पर हमले के बाद आईएसआई के प्रमुख के खिलाफ लोग सड़कों पर उतरे पूरे पाकिस्तान में विरोध की आग फैली।

- अमृतसरः शिवसेना के नेता सुधीर सूरी की गोली मारकर हत्या की।

- आप पार्टी ने गुजरात के मुख्यमंत्री उम्मीदवार पूर्व टीवी एंकर इसुदान गढवी को घोषित किया।

■ 5 नवम्बर

- ठग सुकेश चंद्रशेखर ने आरोप लगाया कि अरविंद केजरीवाल के कहने पर 50 करोड़ रूपये पार्टी फंड में दिये।

- आजाद भारत के पहले मतदाता श्याम सरन नेगी का निधन हुआ वे 106 वर्ष के थे उन्होंने अंतिम मतदान किया।

- आस्ट्रेलिया क्रिकेट टीम टी-20 विश्वकप टूर्नामेंट से बाहर हुई।

■ 6 नवम्बर

- 6 राज्यों की 7 विधानसभा सीटों पर उपचुनाव हुये जिनमें से 4 सीटें भाजपा जीती ओर अंधेरी सीट ऋतुजा लटके ने जीती।

- दिल्लीः सिविल लाइन थाने से भागने की कोशिश में छेड़खानी के आरोपी की वाहन के चपेट में आने से मौत हुई।

- अगरतलाः त्रिपुरा में भाजपा और माकपा कार्यकर्त्ताओं के बीच झड़प होने से 9 लोग घायल हुये।

■ 7 नवम्बर

- सुप्रीम कोर्ट ने कहा आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग को 10% आरक्षण देना, संविधान

के खिलाफ नहीं है।

- दिल्लीः छावला सामूहिक दुष्कर्म-हत्याकांड के 3 आरोपियों को सुप्रीम कोर्ट ने बरी किया।

- गुलमर्ग में 12 इंच बर्फबारी हुई।

■ 8 नवम्बर

- सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि शिक्षा लाभ कमाने का जरिया नहीं है। आंध्र में मेडिकल कॉलेजों की फोर्स बढ़ाने का आदेश रद्द किया।

- कॉंग्रेस सेवादल के राष्ट्रीय महासचिव कृष्णकुमार पांडे का अचानक निधन हुआ।

- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भारत की जी-20 को अध्यक्षता का लोगो थीम वेबसाईट लांच की।

■ 9 नवम्बर

- शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंध कमेटी के अध्यक्ष हरजिंदर सिंह धामी चुने गये।

- लंदनः हाईकोर्ट ने नीरव मोदी को भारत प्रत्यर्पित करने का आदेश दिया।

- डी वाई चंद्रचूड़ भारत के मुख्य न्यायाधीश बने उन्हें राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने शपथ दिलाई।

■ 10 नवम्बर

- टी-20 विश्वकप क्रिकेट मैच में भारत को इंग्लैड ने 10 विकेट हराया।

- एन.आइ.ए. ने तमिलनाडु में 5 ठिकानों पर छापे डाले।

- सुरक्षाबलों ने उत्तरी कश्मीर में आतंकी वित्त पोषक 6 सदस्यों को गिरफ्तार किया।

■ 11 नवम्बर

- राजीव गांधी के छह हत्यारे समय से पहले रिहा हुये।

- टीवी एक्टर सिद्धांत वीर सूर्यवंशी का जिम में निधन हुआ वे 46 वर्ष के थे।

- यूक्रेन ने खेरसॉन शहर पर कब्जा किया रूसी सेना को समर्पण करने की चेतावनी दी।

■ 12 नवम्बर

- चीन ने एक जासूसी जहाज हिन्द महासागर में भारतीय सीमा में भेजा इससे हिन्द महासागर क्षेत्र में तनाव बढ़ा।

- बालीबुड अभिनेता शाहरूख खान को मुम्बई हवाई अड्डे पर सात लाख रूपये की कस्टम ड्यूटी भरना पड़ा वे महंगी घड़ियाँ लाये थे।

-हिमाचल प्रदेश में विधानसभा चुनाव में 65.92% मतदान हुआ।

■ 13 नवम्बर

- उदयपुरः अहमदाबाद असरवा पटरी को बदमाशों में विस्फोट कर उड़ाया बड़ी घटना नहीं हुई।

-नौसेना के 25 वर्षीय नाविक ने मुम्बई बंदरगांह पर एक युद्धपोत पर गोली मारकर आत्म हत्या की।

- टी-20 क्रिकेट विश्वकप चैंपियन पाकिस्तान को इंग्लैंड ने पांच विकेट से हराया ट्रॉफी अपने कब्जे में की।

■ 14 नवम्बर

- नई दिल्लीः प्रेमी आफताब ने प्रेमिका श्रद्धा बालकर की हत्याकर 35 टुकड़े कर फ्रिज में रखे। रोज दो टुकड़े फेकता था। पुलिस ने आफताब को गिरफ्तार किया।

- सुप्रीम कोर्ट ने अपने अहं फैसले में कहा कि जबरन धर्मांतरण बेहद गंभीर मुद्दा है केन्द्र सरकार ने इस दिशा में गंभीर प्रयास करे।

- स्लोवानिया की पहली महिला नतासा बर्क मूसर राष्ट्रपति चुनी गई।

■ 15 नवम्बर

- भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने जी-20 सम्मेलन में कहा कि कूटनीति से ही युद्ध

का हल निकलेगा।

- पूर्वी लद्दाख सीमा गतिरोध के बाद पहली बार नरेन्द्र मोदी ने चीन के राष्ट्रपति शीजिनपिंग से हाथ मिलाया।

- म.प्र. में शिरसा मुंडा जयंती पर पेसा कानून लागू हुआ।

■ **16 नवम्बर**

- जी-20 सम्मेलन की अध्यक्षता भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने सम्हाली। वे सम्मेलन में छाये रहे।

- ब्रिटिश प्रधानमंत्री ऋषि सुनक ने 18-30 वर्ष के भारतीय डिग्री धारियों 3000 युवकों को बीजा प्रदान किये। यह पहल मोदी से मुलाकता के बाद हुई।

- इंडोनेशिया के बाली प्रायद्वीप के निकट एक नौका में आग लगी। नौका पर 271 लोग सवार थे।

■ **17 नवम्बर**

- फास्टट्रेक अदालत ने ज्ञानवापी मामले में मुस्लिम पक्ष की आपत्ति खारिज की।

- जशपुरः छत्तीस गढ़िया ओलंपिक में घायल कबड्डी के खिलाड़ी की मौत मृतक हंडाराम मालाकार 22 वर्ष का था।

- संध्या देवनाथन मेटा की भारत में प्रमुख उपाध्यक्ष पद पर नियुक्ति की गई।

■ **18 नवम्बर**

- स्काई रूट एयर स्पेस के रॉकेट ने 434 ग्रह स्थापित करके इतिहास रचा।

- कराचीः (पाक) खैरपुर के पास एक वैन गड्ढे में गिरने से 12 बच्चों सहित 20 लोगों की मौत हुई।

-(पट्टी) गाजापट्टी में जन्म दिवस पार्टी के दौरान एक अपार्टमेंट में आग लगने से एक ही परिवार के 21 लोगों की मौत हुई।

■ **19 नवम्बर**

- निर्वाचन अयोग के नये आयुक्त अरूण गोयल नियुक्त हुये।

- केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय की ओर से 39 स्कूलों को स्वच्छ विद्यालय पुरुस्कार दिया गया।

- हिजाब विरोधी प्रदर्शनकारियों ने ईरान के तानाशाह अबातुल्लहा खुमैनी के पुश्तैनी घर में आग लगाई।

■ **20 नवम्बर**

- राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने दाहनी आँख का ऑपरेशन कराया।

- मुकेश अंबानी की बेटी ईशा ने जुड़वां बच्चों को जन्म दिया।

- अमेरिका में नार्थ करोलिना यूनिवर्सिटी ने सिक्ख विद्यार्थी को तलवार लेकर प्रवेश की स्वीकृति दी।

■ **21 नवम्बर**

- मंजू नैन देश की पहली महिला सोल्जर स्काई ड्राइवर बनी आपने 10000 फीट की ऊँचाई से छलांग लगाई।

- भोपालः कांग्रेस विधायक उमंग सिंघाट पर एक महिला ने बलात्कार का आरोप लगया मामला दर्ज हुआ।

- इंडोनेशिया के जावा द्वीप में भूकम्प 5.4 तीव्रता से आया 59 लोगों की मौत हुई 700 से अधिक घायल हुये।

■ **22 नवम्बर**

- गुवाहटीः बेस्ट कार्बी आंगलोंग जिले असम-मेघालय सीमा पर लकड़ी का वाहन रोकने पर हिंसा भड़की। बिन कर्मी सहित 6 लोगों की मौत हुई।

- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 71000 युवाओं की नियुक्ति पत्र दिये और नौकरी देना

जारी रहेगा।

- जम्मू- अरनिया सेक्टर पर सतर्क सैनिकों ने एक घुसपैठिया को मार गिराया तथा दूसरे को गिरफ्तार किया।

■ 23 नवम्बर

- लुधियाना: पुलिस सब इंस्पेक्टर हरविन्दर सिंह के पास से हेरोइन बरामद की गई।

- कोलकाता: सीवी आनंद बोस ने पश्चिम बंगाल के राज्यपाल पद की शपथ ली।

- बैतूल: रेल्वे स्टेशन पर एक खाली ट्रैन की 2 बोगियों में आग लगी।

■ 24 नवम्बर

- पाकिस्तान: पुलवामा अटैक का चीफ मास्टर माइंड लै. जनरल असीम मुनीर को आर्मी चीफ बनाया गया।

- सुधारवादी नेता अनवर इब्राहिम मलेशिया के नये प्रधानमंत्री चुने गये।

- कनाडा में भारवंशी महकप्रीत सेठी की हत्या चाकू मारकर की गई।

■ 25 नवम्बर

- चंडीगढ़: राष्ट्रपति दुर्पदी मुर्मु के हरियाणा प्रवास पर उनको भोजन बिना प्याज लहसुन के बनेगा इस म्यूनों की घोषणा हुई।

■ 26 नवम्बर

- सीमा सुरक्षा बल ने एक पाकिस्तानी ड्रोन को मार गिराया । यह शटल अमृतसर जिले के डाओके गाँव की है।

- रावलपिंडी: सेना के हेडक्वाटर तक पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान का लॉंग मार्च पहुँचा 1 लाख समर्थक जुटे।

- श्योपुर: कॉंग्रेस के पूर्व विधायक बाबूलाल मेवरा ने भाजपा की सदस्यता ग्रहण की।

■ 27 नवम्बर

- बाल्लारपुर (महाराष्ट्र): रेल्वे स्टेशन पर फुट ओवर ब्रिज का एक हिस्सा गिर जिससे यात्री 20 फुटनीचे गिरे। महिला मृत 17 लोग घायल हुये।

- चीन के शिनजियांग क्षेत्र में भीषण आग लगने की घटना से जनता भड़की कोविड 19 के लॉकडाउन के विरूद्ध प्रदर्शन किया।

- अमृतसर: पंजाब पुलिस ने हवलिया गाँव के परमजीत सिंह के पास से 8 चीनी पिस्तौल तथा गोलियाँ जब्त कीं।

■ 28 नवम्बर

- नई दिल्ली: पत्नी और बेटे ने अंजनदास के 10 टुकड़े किये और एक एक कर ठिकाने लगाये।

- कतर: फुटबॉल प्रशंसकों ने जर्मनी का विरोध करते हुये पूर्व खिलाड़ी मैसुर ओजिल की फोटो अपने हाथ में डाल दी।

-अहमदाबाद: महाराष्ट्र के क्रिकेटर ऋतुराज गायकवाड़ ने एक ओवर में 7 छक्के जड़े।

■ 29 नवम्बर

- अहमदाबाद : बहरामपुरा की आमसभा में कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खडगे ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को रावण कहा।

-इजरायली फिल्मकार नदवलाविद के द्वारा द कश्मीर फाइल्स को दुष्प्रचार करने वाली फिल्म बताने के बाद राजदूत नओर गिलोन ने लाविद के कथन की मांगी।

■ 30 नवम्बर

- बहराइच: लखनऊ बहराइच मार्ग बस- ट्रक सड़क दुर्घटना में 6 लोगों की मौत हुई और 13 लोग घायल हुये।

-फिरोजाबाद: जिले के पढ़िम कस्बे में एक इमारत में आग लगने से 3 बच्चों सहित 6 लोगों की मौत हुई।

- टोयटा किर्लोस्कार मोटर के वाईस

इसे भी जानिये

जाने पुरुस्कार की अहमियत

पुरुस्कार सम्मान	पुरुस्कार प्रदान करने वाले	पुरुस्कार का विवरण	वर्ष	राशि
साहित्य अकादमी पुरुस्कार	साहित्य अकादमी	अंग्रेजी सहित 22 भारतीय भाषाओं में गत पांच वर्षों में प्रकाशित उत्कृष्ट रचनाओं पर	1955	50,000
सरस्वती सम्मान	के.के. बिड़ला फाउण्डेशन	आठवी अनुसूची में शामिल किसी भी भाषा में गत 10 वर्ष में प्रकाशित उत्कृष्ट साहित्यिक कृति पर	1991	5 लाख
यात्रा पुरुस्कार	रूपा एण्ड के एवं हॉपर कालिंस पब्लिशर्स इंडिया	भारतीय उपमहाद्वीप के किसी भी लब्ध प्रतिष्ठित साहित्यकार को उनके साहित्यिक योगदान के लिये	1993	1 लाख
वाचस्पति पुरुस्कार	के.के. बिड़ला फाउण्डेशन	संस्कृत साहित्य में विशिष्ट एवं उल्लेखनीय योगदान हेतु	1992	1 लाख
शंकर पुरुस्कार	के.के.बिड़ला फाउण्डेशन	गत 10 वर्षों में प्रकाशित भारतीय दर्शन, कला एवं संस्कृति पर उत्कृष्ट रचना हेतु	-	1.5 लाख
भारत-भारती सम्मान	उत्तरप्रदेश हिन्दी संस्थान	साहित्य सृजन एवं हिन्दी की अनवरत सेवा हेतु	1986	1.51 लाख
इकबाल सम्मान	मध्यप्रदेश साहित्य परिषद	उर्दु भाषा में उत्कृष्ट रचनात्मक लेखक हेतु	1990	2 लाख
राजेन्द्र सम्मान	बिहार हिन्दी संस्थान	बिहार का सर्वोच्च साहित्यिक पुरुस्कार	-	1 लाख

दिशा बोध

औषधि

1. वात आदि जिन तीन धातुओं (वात, पित्त और कफ) का वर्णन ऋषियों ने किया है; उनमें से कोई भी यदि अपनी सीमा से घट-बढ़ जावे, तो वह रोग का कारण हो जाता है।
2. शरीर के लिए औषधि की कोई आवश्यकता न हो, यदि खाया हुआ भोजन परिपाक हो जाने से पश्चात् ही दुबारा भोजन किया जावे।
3. भोजन सदैव शान्ति के साथ करो और जीमे हुए अन्न के पचजाने पर ही फिर भोजन करो, बस दीर्घायु होने का यही सर्वोत्तम मार्ग है।
4. जब तक तुम्हारा खाया हुया अन्न न पच जावे और जब तक कड़ाके की भूख न लगे, तब तक भोजन के लिए ठहरे रहो और उसके पश्चात् शान्ति के साथ वह खाओ, जो तुम्हारी प्रकृति के अनुकूल है।
5. यदि तुम शान्ति के साथ ऐसा भोजन कर हो जो तुम्हारी प्रकृति के अनुकूल है, तो तुम्हारे शरीर में किसी प्रकार की व्याधि न होगी।
6. जिस प्रकार आरोग्य उस मनुष्य को ढूंढता है, जो पेट खाली होने पर भोजन करता है; ठीक उसी प्रकार रोग उस आदमी को ढूंढता हुआ आता है, जो मात्रा से अधिक ठूँस ठूँस कर खाता है।
7. जो आदमी मूर्खता से अपनी जठराग्नि से परे खूब ठूंस-ठूंस कर खाता है, उसको अनगिनत रोग घेरे ही रहेंगे।
8. रोग, उसकी उत्पत्ति और उसका निदान-इन सबका प्रथम विचार कर बाद में तत्परता के साथ उनको दूर करने में लग जाओ।
9. वैद्य को चाहिए कि वह रोगी, रोग और ऋतु का पूर्ण विचार कर ले; उसके पश्चात् औषधि प्रारम्भ करें।
10. रोगी, वैद्य, औषधि विक्रेता इन चारों पर ही चिकित्सा निर्भर है और उनमें हर एक के फिर चार-चार गुण हैं।

कहानी

श्रद्धांजली

लेखक: 105 एलक श्री सिद्धांतसागर जी महाराज

सुबह की धूप सैंक रही अंजली के साथ उसके पति भी बैठ अपनी फाईल के कागज पलट रहे थे। अंजली ने अभी अभी एक बेटी को जन्म दिया तो उसे ससुराल वालों ने उपेक्षा की दृष्टि से देखना शुरु कर दिया था। अंजली के पति अंकित ने अपनी बेटी को सबसे कीमती सम्पत्ति मानकर उसे अपने कलेजा का टुकड़ा मानकर पूरे परिवार से अलग अलग रहकर भी अंकित ने किसी से कोई शिकायत करना उचित नहीं समझा और अपनी किस्मत का खेल मानकर स्वीकार किया।

कभी कभी अंजली का लहजा शिकायती अवश्य बनता रहा है परन्तु अंकित अपने आपको को भारतीय दर्शन चिंतन के अनुरुप ढालकर अंजली को अपने विनम्र शब्दों से समझाता रहता है।

देखो अंजली मेरी दृष्टि में बेटे से अच्छी बेटी है क्योंकि दो परिवारों की शोभा बढ़ाती है दोनों घरों की जिम्मेदारी निभाती है। और बेटियाँ प्रतिभा की धनी होती हैं। अंकित की बात सुनने के बाद अंजली ने कहा।

तो आप हमें यह बताइये कि आपके परिवार के लोगों को इतनी सी बात समझ में क्यों नहीं आती है। अंजली समस्या तो यही है कि रूढ़िवादी लोगों आज तक बेटों को ही महत्व देते आ रहे हैं। धर्म ग्रंथों में न जाने किसने यह लिख दिया अगर बेटा अग्नि संस्कार करते समय मुखाग्नि नहीं देगा। तो स्वर्ग मोक्ष की प्राप्ति नहीं होगी यह मान्यता आज समाज के बीच से मिट नहीं पा रही हैं। दूसरी बात यह है कि बेटी को भारभूत माना जाता है बेटी को पढ़ा लिखाकर योग्य बनाने के बाद वह आखिर दूसरे घर चली जाती है इसलिये लोग अपने स्वार्थ में ही सोचा करते हैं।

अंकित के बीच में ही अंजली बोल पड़ती है कि राम चरित मानस में भी तो लिखा है सुरनर इन सबकी यह रीति। स्वारथ लाग करहि सब प्रीति॥ स्वार्थ में ही

सब प्रीति करते हैं। बेटा घर में ही रहता है उसे बुढ़ापे का सहारा माना जाता है।

बेटा क्या सहारा देता है ? हमें सब मालूम है आज बेटा के रहते वृद्धाश्रम में क्यों बूढे माता-पिता को रहना पड़ता है। क्यों?

अंजली और अंकित की यह बातें चल ही रही थीं तभी अंकित के नौकर ने टेबिल पर आकर अखबार रख दिया। अंकित ने अखबार को हाथ में उठाया और विज्ञापन का पहला पन्ना पलटा तो मुख्य समाचार में लिखा था प्रेमी ने प्रेमिका के 35 टुकड़े किये नजर गड़ाकर पढ़ा और अंकित ने अंजली को आवाज देकर बुलाया कहा अंजली। इधर आओ देखो यह क्या हो गया तुम्हारी सहेली के साथ कितनी हैवानियत प्रेम बदनाम हो गया अंजली के हाथ में अखबार देते हुये अंकित ने कहा लो पढ़ो।

अंजली ने हाथ में अखबार लिया और कुर्सी पर बैठकर अखबार पढ़ना प्रारंभ कर दिया। परन्तु अंकित के ऑफिस का समय हो जाने से वह अंजली को छोड़कर आगे बढ़ गया।

अंजली सोफा से टिक गई और एक गहरी श्वांस लेकर बोल उठी, वही हुआ जिसका मुझे अनुमान था। अखबार के इस समाचार को अंजली ने कई बार पढ़ा उसके नयनों से अविरत आंसुओं की गंगा यमुना बहती रही। अंजली को वे दिन याद आने लगे जब वह और श्रद्धा दोनों स्कूल के एक ही बेंच पर बैठकर बातें करती रहती थीं। श्रद्धा ने जवानी की देहली पर मेरे साथ ही तो पैर रखा था। मेरी कक्षा की सबसे सुंदर श्रद्धा पढ़ने में भी वह मेरे से खूब होशियार थी मैंने भी तो इसलिये ही तो उनको अपना दोस्त बनाया था क्योंकि वह मेरी पढ़ाई में सदैव सहयोग करती थी। मैं उसके घर जाकर ही अपना गृहकार्य पूरा करती थी। वह चुपके से मेरे बैग में अच्छे खट्टे मीठे बेर डाल देती थी। मैं बाहर निकाल कर उसके बेर वापिस निकाल देती थी तो श्रद्धा मुझसे कुट्टी करने की बात कहती थी आखिर मुझे उसके दिये बेर खाना ही पड़ते थे।

अंजली के मन पर श्रद्धा के अशुभ समाचार का गहरा प्रभाव पड़ा कुछ देर के लिये उसके होश उड़ गये क्योंकि आत्मीय सहेली श्रद्धा ने मेरी बात कभी नहीं टाली मैं जैस भी कहती थी वह अवश्य मान लेती थी कालेज में जाकर हम दोनों अलग अलग हो अवश्य गये थे परन्तु कक्ष बदल गये बेंच भी अलग हो गयी परन्तु अपना प्रेम बरकरार रख वह मेरी खुशी में खुश होती थी और मेरे दुख में वह रोने तक लगती मैं भी कई बार उसकी बीमार अवस्था देख कर आंसु बहाती थी। वह हमें अपने जन्म दिवस पर अवश्य बुलाती थी और हम लोग खूब मस्ती करते थे।

नई बात मुझे दो वर्ष पूर्व जब उसका जन्म दिन आया तो उसने मुझे नहीं बुलाया फिर भी मैं उसके घर गई पर वह घर नहीं

मिली उसकी मम्मी ने बताया कि वह तेरे घर ही तो गई थी मैंने कहा नहीं वह मेरे घर तो नहीं आयी काफी देर तक मैं श्रद्धा के घर बैठी रही परन्तु श्रद्धा लौट कर नहीं आयी तो मैं निराश होकर अपने घर लौट आयी। 2 दिन बाद ही मेरी सगाई हो गई। वह सगाई समारोह में आई तो उससे मैंने बिल्कुल एकांत में कहा क्यों श्रद्धा तुम यह कब से सीख गई हो और कि अपनी मम्मी से ही झूठ बोल कर गयी कहीं और गई हो तुमने बोला कि मैं अंजली के घर जा रही हूँ। कितनी ही देर तक मैंने तुम्हारी प्रतीक्षा की परन्तु तुम जो ऐसी गुम गई जैसे बादलों से तारे गुम जाते हैं।

अंजली ने श्रद्धा से कहा आज से हम तुम अब कभी भी दूर हो जायेंगे क्या मालूम कब हम मिलेंगे। मुझे विश्वास है तुम मुझ से कोई बात छुपा नहीं सकती किसी को सच बताओं या न बताओं परन्तु तुम मुझे सच जरूर बताओगी। श्रद्धा ने पहले तो टालने के लिये कहा कि अंजली मेरा ऐसा मानना है कि आत्मीय जन को किसी निजी मामले हस्तक्षेप नहीं करना चाहिये।

तब मैंने कहा श्रद्धा तुम भूल रही हो सच्चा मित्र वही होता है जो अपने मित्र के क्रियाकलाप पर नरज रखता है परन्तु नियंत्रण नहीं मित्र तो वही होता है जो एक अच्छे सलाहकार की भूमिका में रहता है। मित्र ही तो गलत रास्ते पर जाने से रोकता है।

श्रद्धा को मैंने बहुत समझाया तब उसने मेरे सामने जब सच उगला तो मेरे पैर के नीचे की जमीन खिसक गई। वह बोली अंजली तुम कसम खाओ कि मैं ये तो किसी को नहीं बताऊंगी और मुझे डॉटोगी नहीं। उसकी गुप्त बात उगलवाने के लिये मैंने कसम खाली थी और निभाया भी परन्तु मैं यह उस समय ही समझ गई थी कि श्रद्धा प्रेम में नहीं लव जिहाद के मकड़जाल में उलझती चली जा रही है।

मैंने श्रद्धा की बात गुप्त रखी और उसे अवसर भी दिया कि वह पुनः अपने स्थान पर लौटकर आ जाये परन्तु श्रद्धा ने पीछे मुड़कर कभी देखा नहीं वह अपने प्यार में इतनी दीवानी हो गई कि उसकी नजर में मात्र आफताब का सपना ही बस गया था। दिल की धड़कनों में मात्र आफताब की घूमता था।

मैंने श्रद्धा से कहा कि देख श्रद्धा आज कल के लड़के कुछ दिनों बड़े अच्छे लगते हैं पर वे शरीफ बदमाश होते हैं तुम कहीं प्यार ब्यार के चक्कर में चूक नहीं जाना। श्रद्धा मुझसे यही कहा अंजली मैं अब कोई छोटी बच्ची नहीं रही हूँ मेरी उम्र भी 23 वर्ष हो चुकी है। मैंने भी दुनिया को अच्छी तरह से देख लिया है। मुझे अब तुम छोटा समझ कर भूल मत करो तुम मेरी फिकर छोड़ो तुम तो अपना दाम्पत्य जीवन सफल करो। अब मैं आफताब के बिना एक पल भी जीवित नहीं रह सकती हूँ उसके बिना मैं मछली के जैसे तड़फ कर मर जाऊँगी अगर अंजली तुम मुझे जिंदा देखना चाहती हो तो मेरे और आफताब के बीच में बाधा न बनो तो ही ठीक होगा।

श्रद्धा की बात सुनकर मैं अवाक् रह गई। अब मैं कुछ भी बोलने की स्थिति में नहीं रही। मैंने निर्णय कर लिया कि श्रद्धा और आफताब की चर्चा किसी से नहीं करूंगी। परन्तु मुम्बई जैसे महानगर में भी आफताब और श्रद्धा की चर्चा पान की दुकान से लेकर मुहल्ले के हर घर तक पहुंच गई श्रद्धा को जब मालूम चला कि उसके इस इश्क के बारे में चर्चा फैल चुकी हे तो उसने और आफताब ने घर से भागकर कोई दूसरे महानगर में जाकर रहने की योजना बना ली। कई हिन्दू संगठन दोनों के भागने के बाद सक्रिय हो गये। मुझे जब यह मालूम चला कि श्रद्धा आफताब के साथ भाग चुकी तभी मुझे एक अनहोनी होने का अहसास हो चुका था। मुझे ऐसा लगा कि श्रद्धा मुसलमान बनने तैयार कैसे हो गई क्योंकि वह हमेशा अपने ही देवताओं को बड़ी श्रद्धा से नमन करती थी मंदिर भी जाती थी। अब यदि श्रद्धा ने इस्लाम स्वीकार नहीं किया तो उसकी वही दशा होगी जो कई लड़कियों की हो चुकी है। पहले स्मार्ट और सज्जन दिखने वाले मुस्लिम युवक हिन्दू बनने का ढोंग करते हैं परन्तु वे कभी हिन्दू बनते नहीं हैं। शादी के पहले हिन्दू लड़कियों को अपने माया जाल में फंसाने के लिये क्लीन सेव होकर घूमते हैं। हैंड सम दिखने की हर कोशिश करते हैं कोई विदेशी जॉब की झूठी खबरे फैलाते हैं तो कोई अपने आप को एमबीए आईआईपी बताते हैं। इसके झूंटे गवाह और कागज भी लड़कियों के सामने दिखा देते हैं। शादी करने की ओर मर मिटने का वादा करते हैं और जब वे धोखा देते हैं तो लड़कियों के सामने कोई विकल्प नहीं बचता वे अपने घर तो वापिस जा नहीं पाती हैं या तो वे आत्महत्या कर लेती हैं या फिर उनके प्रेमी ही उनकी हत्या कर देते हैं या करवा देते हैं। कुछ ऐसी भी लड़कियों के नाम जानती हूँ जो मुस्लिम लड़कों से धोखा खाकर देह व्यापार के बाजार में कूँद पड़ती हैं।

मैंने कई बार सोचा कि श्रद्धा को एक पत्र लिखूँ और इस हकीकत से वाकिफ करा दूँ परन्तु उसकी इस बात से डर जाती थी कि मेरे पत्र का उल्टा अर्थ लगाकार कहीं कोई ऊँट पटांगकदम न उठा ले इसी भय के कारण मैंने श्रद्धा को कभी पत्र नहीं लिखा। परन्तु मैंने कई बार अशुभ स्वप्न श्रद्धा के बारे देखे हैं परन्तु मैं उन स्वप्नों पर कभी विश्वास नहीं कर पायी आज सपने सच हो गये अब सब कुछ खोने के बाद हर तरफ से लुटी श्रद्धा को आखिर मिला क्या मौत भी इतनी क्रूरता पूर्ण। यह कैसा प्रेम का ढोंग जिसमें प्रेमी ही हत्यारा बने वो भी सिर्फ इसलिये कि श्रद्धा शादी की बात करती थी शादी करने में आफताब को परेशानी क्या थी। आज हो यही रहा कि आवारा लड़के एक लड़की फंसाकर दूसरी जगह भी मुँह मारने लगते हैं और फिर वे कई लड़कियों की जिंदगी बर्बाद करके अपने जीवन को

भी उलझा देते हैं इसी त्रिकोणीय प्रेम का परिणाम ही मुझे लगता है श्रद्धा की जघन्यतम हत्या है। मेरी श्रद्धा के 35 टुकड़े कर उन्हें फ्रिज में रखता और फिर दो दो टुकड़े करके फैंकता था। कितनी ही गुप्त रीति से हत्या कि परन्तु कभी हत्या या पाप छुपता नहीं है। पाप तो एक रूई के ढेर में छुपी हुई चिन्गारी जैसा होता है जिस प्रकार आग चिन्गारी रूई ढेर से ऊपर आ जाती है ठीक वैसे ही पाप इक न एक दिन ऊपर जरूर आता है प्रगट अवश्य होता है। मैं यह समझने की कोशिश कर रही हूँ कि आखिर आफताब का भंडा फोड हुआ कैसे । परन्तु भंडा फोड़ कितना भी क्यों न हो जाये आफताब को फांसी की सजा भी हो जाये तब भी मेरी श्रद्धा तो वापिस लौट नहीं सकती।

जब यह सब अंजली सोच रही तभी बाहर से वेल घनघना उठी। अंजली को कुछ देर तक तो वेल सुनाई ही नहीं दी क्योंकि वह श्रद्धा में खोई हुई थी कई बार घंटी की आवाज पर भी जब गेट नहीं खुला तो अंकित ने द्वार को ठोकना शुरु कर दिया तब कहीं जाकर अंजली ने गेट खोला।

अंकित ने कहा क्या बात आज तो तुम्हारी बड़ी गहरी नींद लग गई। मालूम नहीं तुम्हें कि 5 बज चुके हैं। अंकित ने कई बातें बोल दी जिसका एक भी जवाब अंजली ने नहीं दिया वह सोफे पर टिककर गुम सुम होकर बैठी रही अंकित ने कहा अंजली तुझे हो क्या गया है मुझे भी तो बताओ ऐसे तुम्हारा मौन होना तो मुझे असहानीय हो जाता है। अंकित के इतना सब कहने के बाद भी अंजली ने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी तो अंकित कुछ घबरा सा गया कि यह सब हो क्या रहा है उसने अपने मित्र शीतल सेठी को कॉल किया और कहा अरे डॉ. साहब मेरी पत्नी को न जाने क्या हो गया है आज वह बिल्कुल गुमसुम हो गई है। आप आकर क्या देख सकते हैं ?

डॉ. शीतल ने कहा क्यों नहीं अंकित मैं तुरन्त आपके बंगले पर अपनी उपस्थिति देता हूँ लगभग 1 घंटे में ही डॉ. शीतल सेठी अपनी दस्तक अंकित की चौखट पर दे दी। तुरन्त ही डॉक्टर साहब ने ब्लडप्रशेर की जांच की तो पता लगा कि वह तो सामान्य है। और जांच करने के बाद अंजली की आंखों में तेज रोशनी डाली तो उसने कहा डॉक्टर साहब और अंकित जी आप सब नाहक परेशान न हो मुझे कुछ नहीं हुआ है। मैं थोड़ा सा सदमें में आ गई हूँ धीरे धीरे मैं अपने आप सामान्य हो जाऊँगी। मेरे दिल पर एक बहुत बड़ा झटका लगा है मेरी सहेली श्रद्धा की हत्या का समाचार पढ़कर मैं विचलित हो गई हूँ। अंकित ने कहा कि श्रद्धा को जो होना था सो हो गया अब तुम हम उसमें क्या कर सकते हैं ? अंजली ने गहरी श्वांस लेकर कहा अब हम कर तो कुछ नहीं सकते पर श्रद्धांजली तो दे सकते हैं। अंजली के बोलते ही अंकित की जान में

वृद्ध माता-पिता परिवार में बोझ बन गये

❊ विजय कुमार जैन, राघौगढ़ ❊

जिन माता-पिता ने हमें जन्म दिया, पालन-पोषण किया, अच्छी शिक्षा दिलाकर उन्नत जीवन दिलाया अच्छे संस्कार दिये, मगर हम सब कुछ भूलकर उन माता-पिता को बेसहारा छोड़ देते हैं। इसी का परिणाम है विदेशों की परंपरा का अनुशरण भारत में भी तीव्र गति से वृद्ध आश्रमों का निर्माण हो रहा है। वर्तमान पीढ़ी अपने माता द्वारा दिये संस्कारों को भूलती जा रही है। मां अपने पेट में नौ माह रखकर अनेक कष्टों व परेशानियों को झेलते हुये बेटे को जन्म देती है, बरसात में मकान में टपकते पानी में गीले में न रखकर बेटे को रात भर गोद में सुलाती है, पिता स्वयं परेशानी उठा लेता है अभाव के बावजूद उधार लेकर बेटे का पालन-पोषण करता है तथा उसकी अच्छी शिक्षा हेतु संसाधन जुटाता है। जिस दिन बेटे को नौकरी मिलती है अथवा कारोबार का शुभारंभ होता है उस दिन माता-पिता की खुशी ही ठिकाना नहीं रहता है। बेटे की नौकरी लगने या विवाह होने पर माता-पिता की उपेक्षा एवं तिरस्कार का दौर प्रारंभ हो जाता है। मगर बेटा बहू को उनकी हर गतिविधि असहनीय हो जाती है। पूज्य व आदरणीय परिवार मुखिया को ताने के साथ कह दिया जाता है कि आपकी सलाह व मदद की हमें आवश्यकता नहीं है। अब जमाना बदल गया है आधुनिक जमाना है, हमें अपने हिसाब से जीवन यापन करने दीजिये, बात-बात में हस्तक्षेप करके हमारे कार्यों में बाधा न डालें तो हम पर आपकी कृपा होगी।

श्रवण कुमार द्वारा अपने अंधे माता-पिता को कावड में बैठाकर संपूर्ण भारत के तीर्थों के दर्शन कराये गये। भगवान श्री राम ने अपने पिता राजा दशरथ के आदेश को शिरोधार्य कर राजपाट छोड़ चौदह वर्ष वनवास का कष्ट मय जीवन व्यतीत किया। उक्त उदाहरण अब युवा पीढ़ी द्वारा बकवास कहे जाने लगे हैं। यहाँ मैं आपको दो उदाहरण दे रहा हूँ एक ही नगर में एक शिक्षक एवं एक पोस्टमास्टर स्थानांतरित होकर आये। दोनों ने एक बड़े मकान में आवास किराये पर लिये। दोनों के बीच परिचय हुआ, पोस्टमास्टर ने अपने परिवार का परिचय देते हुये बताया हम माता-पिता के साथ रहते हैं, पत्नी और दो बच्चे हैं। शिक्षक ने अपने परिवार का परिचय देते हुये कहा मेरे परिवार में पत्नी और तीन बच्चे हैं, वृद्ध और बीमार मां भी हमारे साथ रहती हैं। इन दोनों परिवारों में हमने भारतीय संस्कृति एवं संस्कारों को देखने का प्रयास मिया, पोस्टमास्टर ने अपने माता-पिता का सम्मान करते हुये कहा कि हम उन साथ रहते हैं, जबकि शिक्षक के कथन से लगता है कि माँ उनके परिवार पर भार है।

पहले संयुक्त परिवार होते थे परिवार का मुखिया परिवार का सबसे बुजुर्ग सदस्य होता था। मुखिया का पूरा अनुशासन परिवार पर रहता था। बुजुर्गों के साये में परिवार की प्रतिष्ठा और साख रहती थी। अब सब कुछ बदल गया है। अब हम जब अपने बेटे का विवाह करने बात चलाते हैं तो लड़की के पिता की पहली शर्त होती है मेरी बेटी संयुक्त परिवार में नहीं रहेगी। संयुक्त परिवार की परंपरा समाप्त कराने में पाश्चात्य संस्कृति का पूरा योगदान है। एकल परिवार की जब से परंपरा प्रारंभ हुई है तभी से वृद्ध एवं बीमार माता-पिता अभावों के बीच दुखी जीवन जीने मजबूर हो गये हैं। परिवार में आलीशान बंगला बनाया जाता है। उसमें एक कमरा कुत्ते के लिये बनाया जाता है।

उसी कमरे के समीप माता-पिता के रहने कमरा बनाया जाता है। मां, बाप के दुख दर्द के रखवाले बेटे बहू न होकर घर का चौकीदार कुत्ता होता है। अनेक सम्पन्न परिवारों में माता-पिता की सेवा करने नौकर लगा दिये हैं। माता-पिता की सेवा करने नौकर लगाने की परंपरा की कटु आलोचना करते हुये सुप्रसिद्ध श्वेताम्बर जैन मुनि चन्द्रप्रभ जी महाराज साहब ने विगत दिनों मंगल प्रवचन करते हुये कहा कि आप इतने व्यस्त हो कि माता-पिता की सेवा करने नौकर लगा रहे हो तो फिर अपनी पत्नी से प्रेम करने के लिये भी नौकर लगा दो।

संयुक्त राष्ट्र संघ की एक सर्वेक्षण रिपोर्ट में उल्लेख किया है कि भारत में बुजुर्ग बहुत उपेक्षित हैं वृद्धजन अपना दुख दर्द सार्वजनिक नहीं करते, मुंह खोलने पर परेशानी बढ़ने की आशंका के चलते वे चुप रहना ज्यादा पसंद करते हैं। माता-पिता के संरक्षण के लिये कानून भी बने हैं। एक कानून माता-पिता व वरिष्ठ नागरिक कल्याण अधिनियम 2007 है। इसमें बुजुर्ग माता-पिता की देखभाल के प्रावधान हैं । इसके बाद भारतीय समाज का कड़वा सच यही है कि जो संयुक्त राष्ट्र ने अपनी रिपोर्ट में उजागर किया है। कुछ परिवार भले ही अपने बुजुर्गों का सम्मान करते हों। लेकिन सभी परिवारों में वृद्धों का सम्मान नहीं हो रहा है।

वृद्ध बीमार माता-पिता का परिवार में अनादर होने, उपेक्षा होने तथा दुर्दशा होने की स्थिति में वृद्ध आश्रम बन गये हैं। जहाँ उन्हें सभी सुविधाएं उपलब्ध करायी जा रही हैं। विगत वर्षो रायपुर नगर में वृद्धों के लिये एक और प्रयास किया गया है वहाँ पेरेंट्स क्रेच, वृद्ध झूलाघर प्रारंभ किया गया है। जहाँ पर उन्हें सुबह से शाम तक रखा जाता है। नास्ता भोजन के साथ मनोरंजन के साथ विभिन्न उपयोगी कार्य प्रारंभ किये गये हैं ।

परम पूज्य दिगम्बर जैनाचार्य संत शिरोमणी विद्यासागर जी महाराज की परम प्रभावक शिष्या आर्यिका रत्न पूर्णमती माताजी ने माता पिता की उपेक्षा को दूर कर उनका सम्मान नई पीढ़ी करें इस भावना को लेकर एक अभियान चलाया हैं। इसका नाम दिया है जनक जननी सम्मान समारोह। आर्यिका संघ जहाँ जाता है वहाँ यह सम्मान समारोह समाज द्वारा गरिमामय तरीके से आयोजित किया जाता है। मेरी ससुराल शाढौरा जिला अशोकनगर मई 2017 में जनक जननी सम्मान समारोह आयोजित किया गया था। अनिल बॉझल ने बताया आर्यिका संघ के पावन सान्निध्य में आयोजित कार्यक्रम की स्मृतियाँ आज भी प्रेरणादायक हैं।

ऐसा कहा गया है कि वह सौभाग्यशाली होता है जिसके सिर पर माता-पिता का साया होता है जिनके माता-पिता नहीं हैं उन्हें उनकी याद जीवनभर आती है, यही भारतीय संस्कृति और संस्कार है। क्रांतिकारी राष्ट्र संत पूज्य आचार्य पुलक सागर महाराज ने विगत वर्षों सरधना मेरठ में हजारों स्कूली विद्यार्थियों के बीच प्रवचन करते हुये कहा कि माता-पिता भोजन के भूखे नहीं होते हैं वे तो मात्र प्रेम के भूखे होते हैं। आपने विद्यार्थियों को संकल्प दिलाया कि जीवन में कभी भी अपने माता-पिता की आंखों में आंसू नहीं आने देगें।

पाश्चात्य संस्कृति का ही प्रभाव है कि हम अपने जन्मदाता माता-पिता का उनके जीवन के अंतिम समय में ध्यान न रखकर उनका तिरस्कार कर रहे हैं। इस समस्या को लेकर विशेष अभियान चलाने की आवश्यकता है। यह भी कटु सत्य हैं अगर हमारे जन्मदाता दुखी रहेंगे तो हम भी सुखी नहीं रह सकते हैं।

फूल गोभी स्वास्थ्य वर्धक के साथ हानिकारक भी

❊ डॉ. अरविन्द जैन, भोपाल ❊

फूलगोभी सभी को पसंद होती है, लेकिन ये आपके पेट के लिये बहुत नुकसानदायक है। फूलगोभी सबसे ज्यादा पंसद की जाने वाली सब्जियों में से एक है। लोग भी इसे बड़े चाव से खाते हैं। इससे बने पराठे, आलू-गोभी की सब्जी यहां तक कि पकौड़े भी बड़े स्वादिष्ट लगते हैं। और भी बहुत सारी व्यंजन गोभी का इस्तेमाल करके बनाई जाती हैं। सबसे अच्छी बात ये है कि इसे पकाना बेहद आसान है। लेकिन आप नहीं जानते कि बाहर से साफ सुथरी और सुंदर दिखने वाली फूलगोभी आपके लिये किसी जहर से कम नहीं है। इसे खाने से कई नुकसान हो सकते हैं।

फूलगोभी कई पोषक तत्वों का ऊर्जा केंद्र है। इसमे एंटीऑक्सीडेंट्स, फाइटोन्यूट्रिएंट्स, फोलेट, विटामिन के और फाइबर जैसे अन्य पोषक तत्व मौजूद रहते हैं। इस सब्जी में सल्फरयुक्त रसायन भी होते हैं, जिन्हें ग्लूकोसिनोलेट्स कहा जाता है। जब ये केमिकल पेट में ब्रेक होते हैं, तो यह हाइड्रोजन सल्फाइड कंपाउंड बनाते हैं और यही बदबूदार फार्ट की वजह बनता है, जिससे कई बार लोगों को सामने शर्मिंदगी उठानी पड़ती है।

फूलगोभी और पाचन स्वास्थ्य- फूलगोभी मसटर्ड फैमिली का ही एक सदस्य है। यह सब्जी कई पोषक तत्त्वों से भरपूर है। इस वजह से ये स्वास्थ्य के लिये बहुत फायदेमंद मानी जाती है। लेकिन इस सब्जी का ज्यादा सेवन करने से पाचन संबंधी समस्याएं हो सकती हैं। इस सब्जी को पचाना बेहद मुश्किल होता है, खासतौर से तब जब इसे कच्चा खाया जाये। इससे सूजन या गैस से संबंधित समस्या बढ़ने लगती है।

हानिकारक है फूलगोभी- ज्यादातर लोगों को फूलगोभी पसंद होती है। तो इसमें क्या है, जो हमारे लिये हानिकारक है। दरअसल इस सब्जी में रेफिनोज होता है, जो एक प्रकार का कार्बोहाइड्रेट है। ये कार्ब कुछ सब्जियों में तो प्राकृतिक रूप से मौजूद होता है, लेकिन शरीर इसे तोड़ नहीं पाता।

इसका मतलब यह है कि जब आप कार्बोहाइड्रेट से भरपूर सब्जी का सेवन करते हैं, तो यह छोटी आंत से बड़ी आंत में पहुंच जाता है। आखिर में जब उनकी बड़ी आंत में एंट्री होती है, तो वहां पहले से मोजूद बैक्टीरिया इसे फर्मेंट करना शुरु कर देते हैं। जिसके बाद पेट में गैस बनने लगती है या फिर पेट फूला सा महसूस होता है।

फूलगोभी खाने के नुकसान- थायरॉइड की समस्या से गुजर रहे लोगों के लिये गोभी बहुत नुकसानदायक है। इससे टी-3 और टी-4 हार्मोन के बढ़ने की संभावना बढ़ जाती है।

फूलगोभी में पोटेशियाम की मात्रा अधिक होती है। जो लोग इसका सेवना ज्यादा करते हैं, उनका खून धीरे-धीरे गाढ़ा होने लगता है। जो लोग पहले से ही खून गाढ़ा करने की दवा खा रहे हैं तो बेहतर है कि वे डॉक्टर की सलाह के बाद ही फूलगोभी का सेवन करें।

स्तनपान करानी वाली महिलाओं को यह सब्जी खाने से बचना चाहिये। इसे खाने से बच्चों के पेट में दर्द उठ सकता है।

फूलगोभी तो लोग सालों से खाते आ रहे हैं लेकिन अब भी लोग इसे खाने का सही तरीका नहीं जानते। गलत तरीके से खाने के बाद ही पेट में गैस और पाचन संबंधी समस्याएं शुरु होने लगती है। अगर आप अक्सर ताजा गोभी का सेवन करते हैं, तो इसमें अन्य गोभी की तुलना में 30 प्रतिशत ज्यादा प्रोटीन और कई अलग -अलग प्रकार के एंटीऑक्सीडेंट होते हैं। खासतौर से कच्ची गोभी में एंटीऑक्सीडेंट की मात्रा जरूरत से ज्यादा होती है। फूलगोभी को कई तरीकों से खाया जा सकता है। लेकिन अगर आप पाचन संबंधी समस्याओं से परेशान रहते हैं, तो हमेशा पकी हुई फूलगोभी खाने की कोशिश करें। कई लोग गोभी में कीड़े निकलने की वजह से इसे उबालकर खाते हैं। लेकिन ऐसा कभी नहीं करना चाहिये। गोभी को उबालने से इसके भीतर मौजूद एंटीऑक्सीडेंट लगभग खत्म हो जाते है। इसलिये इस सब्जी को सीमित मात्रा में ही खाने की सलाह दी जाती है।

जैन धर्मानुसार यह अखाद्य है - जिस पदार्थ के खाने से अनंत स्थावर जीवों का घात होता हैं उसे स्थावर हिंसाकारक अभक्ष्य कहते हैं। इसीलिये जैन इसे नहीं खाते।

कविता

मस्तहाला

संस्कार फीचर्स

झूमती सी लट विखेरे, पैग भरकर आई बाला।
चुस्कियाँ ले गट गटा कर, पी रहे थे मस्त हाला।
पी के हाला हाल भूले, झूमते से चल रहे थे।
झूमते से चल रहे थे, वे नशे में खो गये थे।
रौब गाठा खाना माँगा, तान चादर सो गये थे।
पत्नी तो समझी नहीं, यह हाल कैसे हो गया।
उल्टियों का दौर चलना, बंद कैसे हो गया।
मुस्कुराया बुदबुदाया, और स्वामी सो गया।
मौत की आयी लहर वो, स्वर्गवासी हो गया।
भीड़ अब सब कह रही है, इसने पी जहरी शराब।
अंत है इसका यही रे, नशा इसका है खराब।
आग बोतल में भरी है, आबरू तन धन जलाये।
जिन्दगी भर जूझकर अब, परिवार अपना दिन बिताये।
काम न आये कोई भूलते सब साली साला।

समयसार में प्रतिपादित परमार्थ दृष्टि में जीव

आचार्य कुन्दकुन्द देव ने निश्चयनय से जीव का विवेचन किया है और यह भी बताया है कि उपादेय स्वरूप जीव कैसा होता है क्योंकि रागादि भाव जीव के नहीं होते हैं शुद्ध जीव तो वह है जिसमें न रस हो न रूप हो न गंध हो ओर न ही इन्द्रियों के गोचर हो। केवल चेतन गुण वाला जीव होता है वह किसी भी चिह्न के द्वारा ग्रहण नहीं हो सकता है और वह कोई निश्चित आकार वाला भी नहीं है इस विषय को स्पष्ट करते हुये आचार्य कुन्दकुन्द देव ने एक प्रसिद्ध गाथा लिखी है और यह गाथा उनके अनेक ग्रंथों में उपलब्ध होती है।

वह गाथा यह है-

अरसमरूवमगंधं अव्वत्तं चेदणागुणमसद्दं।
जाण अलिंगग्गहणं जीवमणि दिट्ठसंठाणं।।54।।

इस गाथा की व्याख्या करते हुये आचार्य अमृतचन्द्र सूरि ने (छह) 6 हेतुओं से रस का निषेध किया है-

1. जीव निश्चय से पुद्गल द्रव्य से भिन्न है इसलिये जीव अरस है। 2. पुद्गल द्रव्य के गुणों से भिन्न होने से जीव के रस गुण नहीं हैं इसलिये जीव अरस है। 3. परमार्थ से पुद्गल द्रव्य का स्वामित्व भी जीव के नहीं होता है इसलिये भी अरस है। 4 अपने स्वभाव की दृष्टि से देखा जाये तो क्षायोपशमिक भाव का अभाव होता है अतः भाव इन्द्रिय से भी रस नहीं चखता इसलिये अरस है। 5. रसवेदना परिणाम को पाकर रस नहीं चखता इसलिये अरस है। 6. ज्ञेय ज्ञायक तादात्म नहीं होने से रस के ज्ञान रूप में परिणमित होने पर भी स्वयं रस रूप परिणमित नहीं होता है अतः जीव अरस है।

इस तरह 6 हेतुओं से जीव में रस नहीं होता है यह सिद्ध किया है। इसी तरह रूप गंध, स्पर्श संस्थान व्यक्तता, और शब्द का अभाव 6-6 हेतुओं से किया है। और परमार्थ रूप से जीव को चैतन्य स्वरूप निर्मल टंकोतकीर्ण ज्योति स्वरूप बताया है।

तथा आचार्य जयसेन जी ने इस गाथा का अर्थ करते हुये खण्डान्वय किया है और उन्होंने अपनी टीका में निश्चय नय स्वसंवेदन ज्ञान का विषय होने से किसी भी बाह्य लिंग से ग्रहण नहीं किया जा सकता है तथा आत्मा समचतुरस्र आदि छह संस्थानों से रहित है और जो यह आत्मा गुणों से विशिष्ट है यही आत्मा शुद्ध जीव समझो और इसे ही स्वीकार करो तथा इसे ही उपादेय मानो और शुद्ध जीव का ही भले प्रकार ध्यान करना चाहिये। यह आत्मा द्रव्येन्द्रिय, भावेन्द्रिय तथा मन से होने वाले रागादि विकल्पों का विषय नहीं है। तथा धर्म द्रव्य, अधर्म द्रव्य, आकाश द्रव्य, कालद्रव्य, एवं पुद्गल द्रव्य से जीव द्रव्य भिन्न है अनन्तज्ञान, अनन्तदर्शन, अनन्त सुख, अनन्तवीर्य इन गुणों से युक्त शुद्धात्मा ही उपादेय है वही आत्मा ध्यान करने योग्य है।

आचार्य कुन्दकुन्द देव ने स्पष्ट करते हुये अजीव की व्याख्या करते हुये कहा है वर्णादि बाह्य, भाव, अंतरंग रागादि विभाव भाव पुद्गल के संबंध से उत्पन्न होते हैं अतः शुद्ध निश्चयनय से ये जीव के स्वरूप नहीं हैं। छह गाथाओं के माध्यम से उपर्युक्त विषय को विस्तार दिया है वह इस

प्रकार है- वर्ण, गंध, रस, स्पर्श, रूप, शरीर, संस्थान, स्पर्धक, अध्यात्म स्थान, अनुभाग स्थान, योगस्थान, बंधस्थान, उदय स्थान, मार्गणा स्थान, स्थिति बंध स्थान, संक्लेश स्थान, विशुद्धि स्थान, संयमलब्धि स्थान, जीवस्थान, गुणस्थान ये सभी जीव के स्वभाव नहीं हैं।

वर्णादि से लेकर गुणस्थान तक निश्चिय नय से ये सभी भाव जीव के नहीं हैं किन्तु व्यवहार नय से ये सब जीव के हैं। संसारी प्राणी के दूध और पानी जैसा वर्णादि भावों के साथ संयोग संबंध होता है। ऐसा होने पर भी वास्तविकता में ये भाव जीव के नहीं होते हैं। क्योंकि जीव तो उपयोग गुण के कारण इन सबसे भिन्न ही झलकता है।

जैसे मार्ग में चलते हुये किसी को लुटता हुआ देखकर व्यवहारी जन कहते हैं अमुक मार्ग लुट गया। परन्तु सच देखा जाए तो मार्ग नहीं अपितु पथिक लुटता है।

उसी प्रकार जीव में रहने वाले कर्म और नौकर्म के वर्ण को देखकर यह वर्ण जीव का है ऐसा व्यवहार से जिनेन्द्र देव कहते हैं इसी तरह गंध, रस, स्पर्श, रूप और शरीर के आकार इत्यादि सभी व्यवहार नय से जीव के हैं ऐसा निश्चय नय से जानने वाले लोग कहते हैं।

संसार में स्थित जीवों के साथ वर्णादि का संबंध है किन्तु संसार से रहित मुक्तजीवों के साथ वर्णादि का कोई संबंध नहीं है यदि ऐसा नहीं माना जायेगा तो कहने में जीव और अजीव में कोई भेद नहीं रहता है।

व्यवहार नय से वर्णादि भाव जीव के कहे गये हैं ऐसा वर्णन सिद्धांत ग्रंथों में मिलता है तथा अध्यात्म ग्रंथों में मिलता है तथा अध्यात्म ग्रंथों में शुद्ध निश्चय नय से वर्णादि भाव जीव के नहीं है यह वर्णन किया जाता है क्योंकि उपयोग गुण जीव के अलग ही झलकता है एवं यह आत्मा से वर्णादि भिन्न हैं।

कविता

प्रथम तीर्थ प्रवर्तक -आदिनाथ स्तवन

रचियता: मुनिश्री योगसागर जी महाराज

ऋषभदेव जिनेश्वर पूज्य हैं, कर रहे गुन गान सुरेन्द्र हैं ।
मुकुट तो पद पंकज में रहा, विषय को तज ने मन हो रहा ॥
वृषभदेव हमें तुम तार दो, पतित हूं तुम पावन देव हो ।
युग युगान्तर से भ्रमता रहा, इसलिये तव पाद सु आ गया ।
अमर लोग सदा तव पाद में, स्तवन बन्दन कीर्तन में रमे ॥
चरण में नतमस्तक हैं सदा, यह सुवर्ण घड़ी मिलती कदा ।
त्रिजग पंकज को तुम सूर्य हो, अमृत धर्म पयोधर आप हो ॥
प्रभु निरंजन ज्ञान सुधा मयी, वह सुगन्ध शरीर निरामयी ।
गरल पाप निवारक आप हैं, जगत् के हित चिन्तक आप हैं ॥
प्रथम तीर्थ प्रवर्तक आप हैं, परम ब्रह्म निवासक आप हैं ।
सलिलं उज्जवल शीतलपान से, तपनता मिटती अतिशीघ्र से ॥
इस प्रकार जिनेश्वर भारती, भविक की भव ताप निवारती ॥

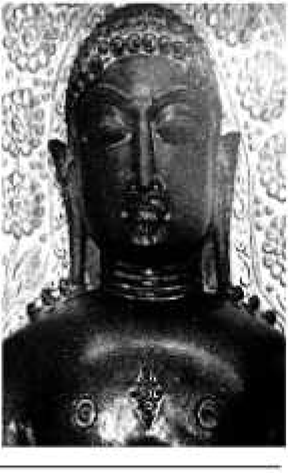

घर में घूँघट क्यों

✲ अशोक पाटनी, आर.के. मार्बल्स ✲

लोग कहते हैं कि दादा बाबा पुरानी रूढ़ियों को ही निभाते रहते हैं। तथा वे अपने परिवार के नियम और कायदों को अपनी जिद से मनवाते रहते हैं। पर मेरे बाबा रतनचंद पाटनी कभी भी रूढ़ियों के प्रश्न में नहीं रहते थे। मुझे एक घटना याद आ रही है। मेरी शादी होने के तीन दिन बाद जब बाबा ने सुशीला को लंबे घूघँट के साथ देखा तो उन्होंने अपने पास बुलाकर कहा ''लाड़ी'' से बता तु इतना लंबा घूँघट किसके लिये डालती है। जैसे तू मायके में रहती थी तो घूँघट नहीं डालती थी। तो यह घर तु समझ मात्र ससुराल नहीं है। अब यह घर तेरा है अपने घर में शरमाया नही जाता। शर्म जो होती है दूसरे के घर में की जाए तो ठीक भी है। परन्तु अपने घर में शर्म किस बात की। मैं तेरा दादा हूँ। तुम्हें मुझे समझना होगा। ये परदा प्रथा हमारी भारतीय परंपरा में नही है। ये मुस्लिम परंपरा से आई है। हम अपनी बहु-बेटी को परदे की कैद में रखना पसंद नहीं करते हैं। मर्यादा परदा में नही आंखों में होती है। परदे में रहकर कोई बुरी नजर से बच नही सकता हैं। घूँघट में रहने वाली बहु की भी लोग ताँक- झाँक कर सकते हैं। हर परदे के भीतर रहने वाले चेहरे को देखने को उत्सुकता हर आदमी को रहती है। मैं तेरे खुले चेहरे में भी मर्यादा का पालन कर सकता हूँ। इसलिये बेटी घूँघट हटा। बिना घूँघट के भी मर्यादा में रह मुझे बहुत अच्छा लगेगा।

दादा को इस बात को जब सुशीला ने मुझ बताया तो मैं दादा की इस बड़ी सोच को सुनकर गर्व से भर गया। और सुशीला से भी कहा बिना घूँघट के भी मयार्दित रहो।

कविता

सफल हुआ जीवन सारा

अंकित जैन, छतरपुर

उपकार उन्हें माँ जिन सरस्वती, जहां ज्ञान कथाएँ कहती है।
जिनाज्ञा स्वरूप की धारा में, ज्ञान की परिणति चलती है।
भावों की सरलता रहती है, जहां प्रेम की सरिता बहती है।
हम उस धर्म के पालक है, जहां सत्य अहिंसा रहती है।
अज्ञान तिमिर के हरण हेतु, जिन चरण शरण में आन पड़े।
प्रभु तेरी अद्‌भुत महिमा का, भक्त सदा गुलगान करे।
तुम अंतर में हो निखरती, भक्ति हृदय में आज उछलती।
ज्ञान में अरू ध्यान में, मुक्ति का मार्ग बतलाती।
है आतम का उपवन सुन्दर, झरता मन पराग का निर्झर।
जिसने चिंतन किया तुम्हारा, मिला उसे संतोष सहारा।
क्या मांगू मैं नाथ तुम्ही से, क्या अब तक नहीं है पाया
पुण्य योग सौभाग्य हमारा, सफल हुआ है जीवन सारा।

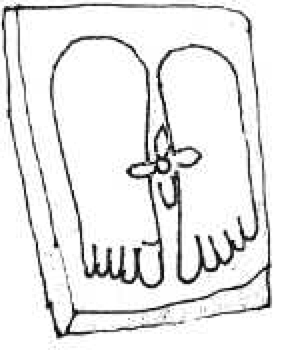

हमारे गौरव

शिक्षा क्षेत्र के क्रांतिकारी संत समंतभद्र सागर

शिक्षा जगत् में क्रांतिकारी चेतना जागृत कर कल्याण पथ प्रदर्शक के रूप आचार्य श्री समन्तभद्र विशेष रूप से लब्धिख्यात हैं। इनका जन्म महाराष्ट्र प्रान्त के सोलापुर जिले में करमाला ग्राम में सं. 1891 में गुर्जर हुम्मड समाज के श्री कस्तूरचंद जी के धार्मिक परिवार में हुआ। इनका नाम देवचंद्र रखा गया।

आपकी आरम्भिक शिक्षा घर पर ही हुई, सोलापुर में महाविद्यालय की शिक्षा प्राप्त की। शास्त्र स्वाध्याय की प्रेरणा इन्हें अपने पिताजी से ही मिली थी।

महाविद्यालयीन शिक्षा प्राप्ति के उपरान्त श्री देवचन्द्र जी ने धार्मिक जीवन जीने का संकल्प ले लिया था। स्वयं ही ब्रह्मचर्य व्रत ले गुरुकुल की स्थापना व संचालन हेतु संकल्पिक हो गये।

आपकी प्रेरणा व मार्गदर्शन से महाराष्ट्र, कर्नाटक, मध्यप्रदेश में गुरुकुलों की स्थापना हुई।

सन् 1952 में मुनि वर्धमानसागर जी से दीक्षा लेकर मुनि समन्तभद्र उत्कृष्ट, आत्मसाधक बने, अध्यात्मग्रन्थों को विशेष पढ़ते थे और तात्विक चर्चा में उन्हें अधिक आनंद आता था। दर्शनार्थी भी चर्चा के माध्यम से लाभान्वित होते थे।

महाराज श्री द्वारा प्रेरित और संस्थापित हाई स्कूल बेलगांव, तेरदाल, अक्किवाट, जससिंहपुर में महाविद्यालय जयसिंगपुर बारामति व सोलापुर में उत्तम रीति से संचालित हैं।

मुनि श्री की प्रेरणा से अनेक संस्थाओं में कार्यरत सेवाभावी विद्वान तैयार हुये हैं- पं. नरेन्द्र कुमार जी मिसीकर, पं. सुमेरचन्द्र जी, पं. कुलभूषण लोखण्डे, पं. धन्यकुमार, ब्र. गजाबेन, ब्र. माणिकचन्द्र शहा, ब्र. अजितकमार, ब्र. भूपाल दलाल, आदि कतिपय नाम उल्लेखनीय है।

हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, मराठी, गुजराती, कन्नड़ भाषा के ज्ञाता मुनिवर की प्रेरणा से चारों अनुयोगों के साहित्य का प्रकाशन मराठी, हिन्दी और कन्नड़ भाषा में जीवराज ग्रंथमाला सोलापुर से होता रहा।

दिनांक 18.08.88 को समतापूर्वक समाधिमरण हो गया। वे शिक्षा जगत में क्रान्तिकारी कार्यों के लिये सदैव स्मरणीय रहेंगे।

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज की चेतन कृति

✻ ब्र. जिनेश मलैया (इन्दौर) ✻

मुनि (कुल -131)

1. निर्यापक मुनि श्री समयसागर जी
2. निर्यापक मुनि श्री योगसागर जी
3. निर्यापक मुनि श्री नियमसागर जी
4. मुनि श्री चेतनसागर जी
5. मुनि श्री ओमसागर जी
6. मुनि श्री क्षमासागर जी (समाधि)
7. मुनि श्री गुप्तिसागर जी
8. मुनि श्री संयमसागर जी (समाधि)
9. निर्यापक मुनि श्री सुधासागर जी
10. निर्यापक मुनि श्री समतासागर जी
11. मुनि श्री स्वभावसागर जी (समाधि)
12. मुनि श्री समाधिसागर जी
13. मुनि श्री सरलसागर जी
14. मुनि श्री वैराग्यसागर जी (समाधि)
15. मुनि श्री प्रमाणसागर जी
16. मुनि श्री आर्जवसागर जी
17. मुनि श्री पवित्रसागर जी
18. मुनि श्री उत्तमसागर जी
19. मुनि श्री चिन्मयसागर जी (समाधि)
20. मुनि श्री पावनसागर जी
21. मुनि श्री सुखसागर जी
22. मुनि श्री मार्दवसागर जी
23. मुनि श्री अपूर्वसागर जी (समाधि)
24. निर्यापक मुनि श्री प्रशांतसागर जी
25. मुनि श्री निर्वेगसागर जी
26. मुनि श्री विनीतसागर जी
27. मुनि श्री निर्णयसागर जी
28. मुनि श्री प्रबुद्धसागर जी
29. मुनि श्री प्रवचनसागर जी (समाधि)
30. मुनि श्री पुण्यसागर जी
31. मुनि श्री पायसागर जी
32. निर्यापक मुनि श्री प्रसादसागर जी
33. निर्यापक मुनि श्री अभयसागर जी
34. मुनि श्री अक्षयसागर जी
35. मुनि श्री प्रशस्तसागर जी
36. मुनि श्री पुराणसागर जी
37. मुनि श्री प्रयोगसागर जी
38. मुनि श्री प्रबोधसागर जी
39. मुनि श्री प्रणम्यसागर जी
40. मुनि श्री प्रभातसागर जी
41. मुनि श्री चन्द्रसागर जी
42. मुनि श्री वृषभसागर जी
43. मुनि श्री अजितसागर जी
44. निर्यापक मुनि श्री संभवसागर जी
45. मुनि श्री अभिनन्दनसागर जी
46. मुनि श्री सुमतिसागरजी (समाधि)
47. मुनि श्री पद्मसागर जी
48. मुनि श्री सुपार्श्वसागर जी
49. मुनि श्री चन्द्रप्रभसागर जी
50. मुनि श्री पुष्पदंतसागर जी (समाधि)
51. मुनि श्री शीतलसागर जी
52. मुनि श्री श्रेयांससागर जी
53. मुनि श्री (वासु)पूज्यसागर जी
54. मुनि श्री विमलसागर जी
55. मुनि श्री अनन्तसागर जी
56. मुनि श्री धर्मसागर जी
57. मुनि श्री शान्तिसागर जी (समाधि)
58. मुनि श्री कुन्थुसागर जी
59. मुनि श्री अरहसागर जी
60. मुनि श्री मल्लिसागर जी
61. मुनि श्री सुव्रतसागर जी
62. मुनि श्री नमिसागर जी
63. मुनि श्री नेमिसागर जी
64. मुनि श्री पार्श्वसागर जी
65. निर्यापक मुनि श्री वीरसागर जी
66. मुनि श्री क्षीरसागर जी
67. मुनिश्री धीरसागरजी (समाधि)
68. मुनि श्री उपशमसागर जी
69. मुनि श्री प्रशमसागर जी
70. मुनि श्री आगमसागर जी
71. मुनि श्री महासागर जी
72. मुनि श्री विराटसागर जी
73. मुनि श्री विशालसागर जी
74. मुनि श्री शैलसागर जी
75. मुनि श्री अचलसागर जी
76. मुनि श्री पुनीतसागर जी
77. मुनि श्री वैराग्यसागर जी
78. मुनि श्री अविचलसागर जी
79. मुनि श्री विशदसागर जी
80. मुनि श्री धवलसागर जी
81. मुनि श्री सौम्यसागर जी
82. मुनि श्री अनुभवसागर जी
83. मुनि श्री दुर्लभसागर जी
84. मुनि श्री विनम्रसागर जी
85. मुनि श्री अतुलसागर जी
86. मुनि श्री भावसागर जी
87. मुनि श्री आनन्दसागर जी
88. मुनि श्री अगम्यसागर जी
89. मुनि श्री सहजसागर जी
90. मुनि श्री निःस्वार्थसागर जी
91. मुनि श्री निर्दोषसागर जी
92. मुनि श्री निर्लोभसागर जी
93. मुनि श्री नीरोगसागर जी
94. मुनि श्री निर्मोहसागर जी
95. मुनि श्री निष्पक्षसागर जी
96. मुनि श्री निस्पृहसागर जी
97. मुनि श्री निश्छलसागर जी
98. मुनि श्री निष्कम्पसागर जी
99. मुनि श्री निष्पन्दसागर जी
100. मुनि श्री निरामयसागर जी
101. मुनि श्री निरापदसागर जी
102. मुनि श्री निराकुलसागर जी
103. मुनि श्री निरुपमसागर जी
104. मुनि श्री निष्कामसागर जी
105. मुनि श्री निरीहसागर जी
106. मुनि श्री निस्सीमसागर जी
107. मुनि श्री निर्भीकसागर जी

108. मुनि श्री नीरागसागर जी
109. मुनि श्री नीरजसागर जी
110. मुनि श्री निकलंकसागर जी (समाधि)
111. मुनि श्री निर्मदसागर जी
112. मुनि श्री निसर्गसागर जी
113. मुनि श्री निस्संगसागर जी
114. मुनि श्री शीतलसागर जी
115. मुनि श्री शाश्वतसागर जी
116. मुनि श्री समरससागर जी
117. मुनि श्री श्रमणसागर जी
118. मुनि श्री सन्धानसागर जी
119. मुनि श्री संस्कारसागर जी
120. मुनि श्री ओंकारसागर जी
121. मुनि श्री निर्ग्रन्थसागर जी
122. मुनि श्री निभ्रान्तसागर जी
123. मुनि श्री निरालससागर जी
124. मुनि श्री निराश्रवसागर जी
125. मुनि श्री निराकारसागर जी
126. मुनि श्री निश्चिंतसागर जी
127. मुनि श्री निर्माणसागर जी
128. मुनि श्री निशंकसागर जी
129. मुनि श्री निरंजनसागर जी
130. मुनि श्री निर्लेपसागर जी
131. मुनिश्री उत्कृष्टसागरजी

आर्यिका दीक्षाएँ (कुल-172)

1. आर्यिका श्री गुरुमति जी
2. आर्यिका श्री दृढ़मति जी
3. आर्यिका श्री मृदुमति जी
4. आर्यिका श्री ऋजुमति जी
5. आर्यिका श्री तपोमति जी
6. आर्यिका श्री सत्यमति जी
7. आर्यिका श्री गुणमति जी
8. आर्यिका श्री जिनमति जी (समाधि)
9. आर्यिका श्री निर्णयमति जी
10. आर्यिका श्री उज्ज्वलमति जी
11. आर्यिका श्री पावनमति जी
12. आर्यिका श्री प्रशान्तमति जी
13. आर्यिका श्री पूर्णमति जी
14. आर्यिका अनंतमति जी
15. आर्यिका श्री विमलमति जी
16. आर्यिका श्री शुभ्रमति जी
17. आर्यिका श्री कुशलमति जी
18. आर्यिका श्री निर्मलमति जी
19. आर्यिका श्री साधुमति जी
20. आर्यिका श्री शुक्लमति जी
21. आर्यिका श्री साधनामति जी
22. आर्यिका श्री विलक्षणामति जी
23. आर्यिका श्री धारणामति जी
24. आर्यिका श्री प्रभावनामति जी (समाधि)
25. आर्यिका श्री भावनामति जी
26. आर्यिका श्री चिन्तनमति जी
27. आर्यिका श्री वैराग्यमति जी
28. आर्यिका श्री आदर्शमति जी
29. आर्यिका श्री दुर्लभमति जी
30. आर्यिका श्री अन्तरमति जी
31. आर्यिका श्री अविचलमति जी
32. आर्यिका श्री अनुनयमति जी
33. आर्यिका श्री अनुग्रहमति जी
34. आर्यिका श्री अक्षयमति जी
35. आर्यिका श्री अमूर्तमति जी
36. आर्यिका श्री अखण्डमति जी
37. आर्यिका श्री आलोकमति जी
38. आर्यिका श्री अनुपममति जी
39. आर्यिका श्री अपूर्वमति जी
40. आर्यिका श्री अनुत्तरमति जी
41. आर्यिका श्री अतिशयमति जी (समाधि)
42. आर्यिका श्री अनुभवमति जी
43. आर्यिका श्री आनन्दमति जी
44. आर्यिका श्री अनर्घमति जी
45. आर्यिका श्री सिद्धान्तमति जी
46. आर्यिका श्री अकलंकमति जी
47. आर्यिका श्री निकलंकमति जी
48. आर्यिका श्री आगममति जी
49. आर्यिका श्री स्वाध्याय मति जी
50. आर्यिका श्री नम्रमति जी
51. आर्यिका श्री विनम्रमति जी
52. आर्यिका श्री अतुलमति जी
53. आर्यिका श्री विशदमति जी
54. आर्यिका श्री पुराणमति जी
55. आर्यिका श्री विनतमति जी
56. आर्यिका श्री विपुलमति जी
57. आर्यिका श्री मधुरमति जी
58. आर्यिका श्री प्रसन्नमति जी
59. आर्यिका श्री प्रशममति जी
60. आर्यिका श्री अधिगममति जी
61. आर्यिका श्री मुदितमति जी
62. आर्यिका श्री सहजमति जी
63. आर्यिका श्री अनुगममति जी
64. आर्यिका श्री अमन्दमति जी
65. आर्यिका श्री अभेदमति जी
66. आर्यिका श्री एकत्वमति जी (समाधि)
67. आर्यिका श्री कैवल्यमति जी
68. आर्यिका श्री संवेगमति जी
69. आर्यिका श्री निर्वेगमति जी
70. आर्यिका श्री निर्वाणमति जी (समाधि)
71. आर्यिका श्री शान्तिमति जी (समाधि)
72. आर्यिका श्री सूत्रमति जी
73. आर्यिका श्री सुनयमति (समाधि)
74. आर्यिका श्री सकलमति जी
75. आर्यिका श्री सविनयमति जी
76. आर्यिका श्री सतर्कमति जी
77. आर्यिका श्री संयममति जी
78. आर्यिका श्री समयमति जी
79. आर्यिका श्री शोधमति जी
80. आर्यिका श्री शाश्वतमति जी
81. आर्यिका श्री सरलमति जी
82. आर्यिका श्री शीलमति जी
83. आर्यिका श्री सुशीलमति जी
84. आर्यिका श्री शैलमति जी
85. आर्यिका श्री शीतलमति जी
86. आर्यिका श्री श्वेतमति जी
87. आर्यिका श्री सारमति जी
88. आर्यिका श्री सत्यार्थमति जी
89. आर्यिका श्री सिद्धमति जी
90. आर्यिका श्री सुसिद्धमति जी
91. आर्यिका श्री विशुद्धमति जी

92. आर्यिका श्री साकारमति जी
93. आर्यिका श्री सौम्यमति जी
94. आर्यिका श्री सूक्ष्ममति जी
95. आर्यिका श्री शान्तमति जी
96. आर्यिका श्री सुशान्तमति जी
97. आर्यिका श्री सदयमति जी
98. आर्यिका श्री समुन्नतमति जी
99. आर्यिका श्री शाश्वमति जी
100. आर्यिका श्री सुधारमति जी
101. आर्यिका श्री उपशान्तमति जी
102. आर्यिका श्री अकम्पमति जी
103. आर्यिका श्री अमूल्यमति जी
104. आर्यिका श्री आराध्यमति जी
105. आर्यिका श्री औंकारमति जी
106. आर्यिका श्री उन्नतमति जी
107. आर्यिका श्री अचिन्त्यमति जी
108. आर्यिका श्री अलोल्यमति जी
109. आर्यिका श्री अनमोलमति जी
110. आर्यिका श्री उचितमति जी
111. आर्यिका श्री उद्योतमति जी
112. आर्यिका श्री आज्ञामति जी
113. आर्यिका श्री अचलमति जी
114. आर्यिकाश्री अवगममति जी (समाधि)
115. आर्यिका श्री स्वस्थ्यमति जी
116. आर्यिका श्री तथ्यमति जी
117. आर्यिका श्री वात्सल्यमति जी
118. आर्यिका श्री पथ्यमति जी
119. आर्यिका श्री जाग्रतमति जी
120. आर्यिका श्री कर्तव्य मति जी
121. आर्यिका श्री गन्तव्यमति जी
122. आर्यिका श्री संस्कारमति जी
123. आर्यिका श्री निष्काममति जी
124. आर्यिका श्री विरतमति जी
125. आर्यिका श्री तथामति जी
126. आर्यिका श्री उदारमति जी
127. आर्यिका श्री विजितमति
128. आर्यिका श्री सन्तुष्टमति जी
129. आर्यिका श्री निकटमति जी
130. आर्यिका श्री संवरमति जी
131. आर्यिका श्री ध्येयमति जी
132. आर्यिका श्री आत्ममति जी
133. आर्यिका श्री चैत्यमति जी
134. आर्यिका श्री पृथ्वीमति जी
135. आर्यिका श्री निर्मदमति जी
136. आर्यिका श्री पुनीतमति जी
137. आर्यिका श्री विनीतमति जी
138. आर्यिका श्री मेरुमति जी
139. आर्यिका श्री आप्तमति जी
140. आर्यिका श्री उपशममति जी
141. आर्यिका श्री ध्रुवमती जी
142. आर्यिका श्री असीममति जी
143. आर्यिका श्री गौतममति जी
144. आर्यिका श्री संवतमति जी
145. आर्यिका श्री अगाधमति जी
146. आर्यिका श्री निर्वाणमति जी
147. आर्यिका श्री मार्दवमति जी
148. आर्यिका श्री मंगलमति जी
149. आर्यिका श्री परमार्थमति जी
150. आर्यिका श्री ध्यानमति जी
151. आर्यिका श्री विदेहमति जी
152. आर्यिका श्री अवायमति जी
153. आर्यिका श्री आगतमति जी
154. आर्यिका श्री पारमति जी
155. आर्यिका श्री श्रुतमति जी
156. आर्यिका श्री अदूरमति जी
157. आर्यिका श्री स्वभावमति जी
158. आर्यिका श्री धवलमति जी
159. आर्यिका श्री विनयमति जी
160. आर्यिका श्री समितिमति जी
161. आर्यिका श्री अमितमति जी
162. आर्यिका श्री परममति जी
163. आर्यिका श्री चेतनमति जी
164. आर्यिका श्री निसर्गमति जी
165. आर्यिका श्री मननमति जी
166. आर्यिका श्री अविकारमतिजी (समाधि)
167. आर्यिका श्री चारित्र मति जी
168. आर्यिका श्री श्रद्धामति जी
169. आर्यिका श्री उत्कर्षमति जी
170. आर्यिका श्री संगतमति जी
171. आर्यिका श्री लक्ष्यमति जी
172. आर्यिका श्री भक्तिमति जी

ऐलक (कुल-60)

1. एलक श्री दर्शनसागर जी
2. एलक श्री योगसागर जी
3. एलक श्री नियमसागर जी
4. एलक श्री समयसागर जी
5. एलक श्री गुप्तिसागर जी
6. एलक श्री शीलसागर जी
7. एलक श्री संयमसागर जी
8. एलक श्री क्षमासागर जी
9. एलक श्री सुबोधसागर जी
10. एलक श्री भावसागर जी (मुनि सरलसागर जी)
11. एलक श्री परमसागर जी (मुनि सुधासागर जी)
12. एलक श्री निःशंकसागर जी (समाधि)
13. एलक श्री समतासागर जी
14. एलक श्री स्वभावसागर जी
15. एलक श्री समाधिसागर जी
16. एलक श्री करुणासागर जी
17. एलक श्री दयासागर जी
18. एलक श्री अभयसागर जी
19. एलक श्री प्रमाणसागर जी
20. एलक श्री प्रशमसागर जी
21. एलकश्री ध्यानसागरजी
22. एलक श्रीसम्यक्त्वसागर जी
23. एलक श्री संवेगसागर जी
24. एलक श्री मंगलसागर जी
25. एलक श्री आर्जवसागर जी
26. एलक श्री मार्दवसागर जी
27. एलक श्री वात्सल्यसागर जी
28. एलक श्री निश्चयसागर जी
29. एलक श्री उदारसागर जी

30. एलक श्री निर्भयसागर जी
31. एलक श्री विनयसागर जी
32. एलक श्री सिद्धान्तसागर जी
33. एलक श्री सम्पूर्णसागर जी
34. एलक श्री अपूर्वसागर जी
35. एलक श्री अक्षयसागर जी
36. एलक श्री रयणसागर जी
37. एलक श्री प्रशांतसागर जी
38. एलक श्री पूर्णसागर जी
39. एलक श्री नम्रसागर जी
40. एलक श्री निर्वेगसागर जी
41. एलक श्री विनीतसागर जी
42. एलक श्री निर्णयसागर जी
43. एलक श्री प्रबुद्धसागर जी
44. एलक श्री प्रशस्तसागर जी
45. एलक श्री प्रवचनसागर जी
46. एलक श्री पुण्यसागर जी
47. एलक श्री प्रभावसागर जी
48. एलक श्री पायसागर जी
49. एलक श्री शैलसागर जी (मुनिश्री वृषभसागरजी)
50. एलक श्री आनंदसागर जी
51. एलक श्री प्रज्ञासागर जी (मुनिश्री अजितसागरजी)
52. एलक श्री पुराणसागर जी
53. एलक श्री प्रयोगसागर जी
54. एलक श्री प्रबोधसागर जी
55. एलक श्री प्रणम्यसागर जी
56. एलक श्री प्रभातसागर जी
57. एलक श्री विवेकानन्दसागर जी
58 एलक श्री उपशमसागर जी
59. एलक श्री निजानंदसागर जी
60. एलक श्री धैर्यसागर जी

क्षुल्लक (कुल-140)

1. क्षुल्लक श्री प्रवचनसागर जी
2. क्षुल्लक श्री नियमसागर जी
3. क्षुल्लक श्री योगसागर जी
4. क्षुल्लक श्री समयसागर जी
5. क्षुल्लक श्री चारित्रसागर जी
6. क्षुल्लक श्री दर्शनसागर जी
7. क्षुल्लक श्री शीलसागर जी
8. क्षुल्लक श्री संयमसागर जी
9. क्षुल्लक श्री क्षमासागर जी
10. क्षुल्लक श्री परमसागर जी (मुनिश्री सुधा सागरजी)
11. क्षुल्लक श्री भावसागर जी (मुनिश्री सरल सागरजी)
12. क्षुल्लक श्री सुबोधसागर जी
13. क्षुल्लक श्री सुगुप्तिसागर जी
14. क्षुल्लक श्री सिद्धान्तसागर जी
15. क्षुल्लक श्री प्रमाणसागर जी
16. क्षुल्लक श्री प्रशम्यसागर जी
17. क्षुल्लक श्री ध्यानसागर जी
18. क्षुल्लक श्री सम्यक्त्वसागर जी
19. क्षुल्लक श्री संवेगसागर जी
20. क्षुल्लक श्री मंगलसागर जी
21. क्षुल्लक श्री वात्सल्यसागर जी
22. क्षुल्लक श्री आर्जवसागर जी
23. क्षुल्लक श्री मार्दवसागर जी
24. क्षुल्लक श्री सौम्यसागर जी
25. क्षुल्लक श्री प्रसन्नसागर जी
26. क्षुल्लक श्री पवित्रसागर जी
27. क्षुल्लक श्री निश्चयसागर जी
28. क्षुल्लक श्री नयसागर जी
29 क्षुल्लक श्री विनयसागर जी
30. क्षुल्लक श्री गम्भीरसागर जी
31. क्षुल्लक धैर्यसागर जी
32. क्षुल्लक श्री निसर्गसागर जी
33. क्षुल्लक श्री चंद्रसागर जी
34. क्षुल्लक श्री उदारसागर जी
35. क्षुल्लक श्री उत्तमसागर जी
36. क्षुल्लक श्री निर्भयसागर जी
37. क्षुल्लक श्री सिद्धांतसागर जी
38. क्षुल्लक श्री सम्पूर्णसागर जी
39. क्षुल्लक श्री अपूर्वसागर जी
40. क्षुल्लक श्री अक्षयसागर जी
41. क्षुल्लक श्री रयणसागर जी
42. क्षुल्लक श्री प्रशांतसागर जी
44. क्षुल्लक श्री नम्रसागर जी
45. क्षुल्लक श्री धर्मसागर जी
46. क्षुल्लक श्री पुनीतसागर जी
47. क्षुल्लक श्री निर्वेगसागर जी
48. क्षुल्लक श्री विनीतसागर जी
49. क्षुल्लक श्री निर्णयसागर जी
50. क्षुल्लक श्री प्रज्ञासागर जी (मुनिश्री अजित सागरजी)
51. क्षुल्लक श्री प्रबुद्धसागर जी
52. क्षुल्लक श्री प्रशस्तसागर जी
53. क्षुल्लक श्री प्रवचनसागर जी
54. क्षुल्लक श्री पुण्यसागर जी
55. क्षुल्लक श्री प्रभावसागर जी
56. क्षुल्लक श्री पाय सागर जी
57. क्षुल्लक श्री आनंदसागर जी
58. क्षुल्लक श्री पुराणसागर जी
59. क्षुल्लक श्री प्रयोगसागर जी
60. क्षुल्लक श्री प्रबोधसागर जी
61. क्षुल्लक श्री प्रणम्यसागर जी
62. क्षुल्लक श्री प्रसादसागर जी
63. क्षुल्लक श्री प्रभातसागर जी
64. क्षुल्लक श्री परीतसागर जी (मुनिश्री संभव सागरजी)
65. क्षुल्लक श्री स्वाध्यायसागर जी
66. क्षुल्लक श्री प्रशांतसागर जी
67. क्षुल्लक श्री मौनसागर जी
68. क्षुल्लक श्री चिंतनसागर जी
69. क्षुल्लक श्री अगम्यसागर जी
70. क्षुल्लक श्री अटलसागर जी
71. क्षुल्लक श्री वैराग्यसागर जी
72. क्षुल्लक श्री निकटसागर जी
73. क्षुल्लक परीतसागर जी
74. क्षुल्लक श्री तत्त्वसागर जी
75. क्षुल्लक श्री तत्त्वार्थसागर जी
76. क्षुल्लक श्री तात्पर्यसागर जी

77. क्षुल्लक श्री वर्धनसागर जी
78. क्षुल्लक श्री वरदत्तसागर जी
79. क्षुल्लक श्री वरदानसागर जी
80. क्षुल्लक श्री अनुग्रहसागर जी
81. क्षुल्लक श्री उपकारसागर जी
82. क्षुल्लक श्री सहयोगसागर जी
83. क्षुल्लक श्री उपयोगसागर जी
84. क्षुल्लक श्री धर्मसागर जी
85. क्षुल्लक श्री सुधर्मसागर जी
86. क्षुल्लक श्री सुगमसागर जी
87. क्षुल्लक श्री प्रशमसागर जी
88. क्षुल्लक श्री परमसागर जी
89. क्षुल्लक श्री साम्यसागर जी
90. क्षुल्लक समकितसागर जी
91. क्षुल्लक श्री संगतसागर जी
92. क्षुल्लक श्री औचित्यसागर जी
93. क्षुल्लक श्री भाग्यसागर जी
94. क्षुल्लक श्री आरोग्यसागर जी
95. क्षुल्लकश्रीशुक्लसागरजी (समाधिस्थ)
96. क्षुल्लक श्री श्वेतसागर जी
97. क्षुल्लक श्री विनयसागर जी
98. क्षुल्लक श्री विरतसागर जी
99. क्षुल्लक श्री अपारसागर जी
100. क्षुल्लक श्री समदमसागर जी
101. क्षुल्लक श्री औचित्यसागर जी
102. क्षुल्लक श्री गहनसागर जी
104. क्षुल्लक श्री सुधारसागर जी
105. क्षुल्लक श्री मंथनसागर जी
106. क्षुल्लक श्री कैवल्यसागर जी
107. क्षुल्लक श्री त्रिलोकसागर जी
108. क्षुल्लक श्री मननसागर जी
109. क्षुल्लक श्री सुदृढ़सागर जी
110. क्षुल्लक श्री अपारसागर जी
111. क्षुल्लक श्री समकितसागर जी
112. क्षुल्लक श्री विचारसागर जी
113. क्षुल्लक श्री मननसागर जी
114. क्षुल्लक श्री तन्मयसागर जी
115. क्षुल्लक श्री उचितसागर जी
116. क्षुल्लक श्री अथाहसागर जी
117. क्षुल्लक श्री उत्साहसागर जी
118. क्षुल्लक श्री अमापसागर जी
119. क्षुल्लक श्री विरलसागर जी
120. क्षुल्लक श्री स्वागतसागर जी
121. क्षुल्लक श्री आगतसागर जी
122. क्षुल्लक श्री भास्वतसागर जी
123. क्षुल्लक श्री स्वस्तिकसागर जी
124. क्षुल्लक श्री भारतसागर जी
125. क्षुल्लक श्री जागृतसागर जी
126. क्षुल्लक श्री उद्यमसागर जी
127. क्षुल्लक श्री गरिष्ठसागर जी
128. क्षुल्लक श्री आदरसागर जी
129. क्षुल्लक श्री समादरसागर जी
130. क्षुल्लक श्री चिद्रूपसागर जी
131. क्षुल्लक श्री स्वरूपसागर जी
132. क्षुल्लक श्री सुभगसागर जी
133. क्षुल्लक श्री अनुनयसागर जी
134. क्षुल्लक श्री सविनयसागर जी
135. क्षुल्लक श्री समन्वयसागर जी
136. क्षुल्लक श्री हीरकसागर जी
137. क्षुल्लक श्री निर्धूमसागर जी
138. क्षुल्लक श्री वरिष्ठसागर जी
139. क्षुल्लक श्री गौरवसागर जी
140. क्षुल्लक श्री विदेहसागर जी

क्षुल्लिका (कुल-3)

1. क्षुल्लिका श्री संयम श्री जी
2. क्षुल्लिका आत्म श्री जी
3. क्षुल्लिका समाधिमतिजी

131 मुनि, 172 आर्यिका, 60 एलक, 140 क्षुल्लक, 3 क्षुल्लिका,

कुल - 506

वर्तमान में 10 निर्यापक 96 मुनिराज, 155आर्यिका, 10 एलक, 79 क्षुल्लक

कुल-350

131 मुनि, 172 आर्यिका, 60 में से 35 एलको ने मुनि दीक्षा ले ली 25 एलक, 140 क्षुल्लकों में से 52 क्षुल्लको ने एलक/मुनि दीक्षा ली 79 क्षुल्लक, 03 क्षुल्लिका

कुल - 350

समाधिस्थ- 9 मुनि, 7 आर्यिका, 2 एलक, 5 क्षुल्लक, 3 क्षुल्लिका

कुल-26

जो क्षुल्लक जी की संख्या है वो आत्म कल्याण के पथ पर बढ़ने हेतु इनमें से कुछ एलक पथ पर पदोन्नत हो गये, कुछ मुनि बन गये एवं जो एलक थे उनमें कुछ मुनि पद पर आरुण हो गये इसलिए क्षुल्लकजी, एलक जी की संख्या में परस्पर में मुनियों की संख्या में गर्भित हो गई।

अंतरिक्ष पार्श्वनाथ शिरपुर में बाईस दीक्षाओं में कर्नाटक 1, राजस्थान 1, बिहार 1, महाराष्ट्र 1, उत्तरप्रदेश 3 एवं म.प्र. के 15 दीक्षार्थी रहे। मुनिश्री उत्कृष्ट सागरजी महाराज के माता-पिता बनने का सौभाग्य श्रीमती रेखा-राजाभाई शाह (सूरत), पिच्छिका देने का सौभाग्य निर्यापक मुनिश्री योगसागरजी महाराज, निर्यापक मुनिश्री प्रसादसागरजी महाराज, निर्यापक मुनिश्री वीरसागर जी महाराज को प्राप्त हुआ। तथा कमण्डल देने का सौभाग्य अक्षय अष्टगे, सदलगा (कर्ना.) को प्राप्त हुआ।

आचार्यश्री ने दीक्षित मुनिश्री को शास्त्र के रूप में धर्मध्यान संस्कार, जिनवाणी दी तथा सभी क्षुल्लक महाराजों को श्री दिगम्बर जैन युवक संघ इन्दौर से प्रकाशित प्रत्येक पेज पर लेमिनेटेड धर्मध्यान संस्कार, जिनवाणी तथा चाँदी कटोरा एवं माला आचार्यश्री ने अपने हाथों से दी। कार्यक्रम का संचालन एलकश्री सिद्धांतसागरजी महाराज ने किया।

अध्यात्म शिरोमणि आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज द्वारा अब तक दी हुई दीक्षाएं

स्थान	क्षु. दीक्षाएं	दिनांक
1. श्री सोनागिरजी	4	18 दिसम्बर 1975
2. श्री कुण्डलपुरजी	2	2 नवम्बर 1976
3. श्री नैनागिरजी	2	2 नवम्बर 1978
4. श्री नैनागिरजी	5	10 जनवरी 1980
5. श्री ईसरी	1	21 नवम्बर 1982
6. श्री आहारजी	9	8 नवम्बर 1985
7.श्री द्रोणगिरिजी	1	15 दिसम्बर 1985
8.श्री नैनागिरजी	12	10 फरवरी 1987
9.श्री मुक्तागिरीजी	7	16 मई 1991
10.श्री मुक्तागिरीजी	1	25 जुलाई 1991
11.श्री रामटेकजी	1	23 जुलाई 1994
12.श्री कुण्डलपुरजी	1	23 सितम्बर1994
13.श्री कुण्डलपुरजी	3	7 अक्टूबर 1995
14.श्री तारंगाजी	7	20 अप्रैल 1996
15.श्री सिद्धवरकूटजी	1	1 अप्रैल 1997
16.श्री नेमावरजी	7	9 अगस्त 1997
17.श्री जबलपुरजी	28	14 अगस्त 2021
18. श्रीकुण्डलपुरजी	18	20 फरवरी 2022
19.श्री शिरपुरजी	21	21 दिसम्बर 2022
कुल	140	

स्थान	ऐलक दीक्षाएं	दिनांक
1. श्री कुण्डलपुरजी	1	10 जुलाई 1977
2. श्री कुण्डलपुरजी	1	19 नवम्बर 1977
3. श्री नैनागिरजी	1	2 अक्टूबर 1978
4. श्री नैनागिरजी	1	31 अक्टूबर 1978
5. श्री नैनागिरजी	1	10 जनवरी 1980
6. श्री नैनागिरजी	2	14 जनवरी 1978
7. श्री मुक्तागिरीजी	1	7 जनवरी 1980
8. श्री नैनागिरजी	1	1 सितम्बर 1981
9. श्री बीनाबारह जी	1	10 फरवरी 1982
10.श्री मोराजी सागर	1	15 अप्रैल 1982
11. श्री सम्मेदशिखरजी	17	10 फरवरी 1983
12.श्री थूबोनजी	8	10 जुलाई 1987
13.जबलपुर	4	28 जुलाई 1988
14.श्री मुक्तागिरीजी	8	25 जुलाई 1991
15.श्री रामटेकजी	1	21 जुलाई 1994
16.श्री महुआजी	4	21 अगस्त 1996
17.श्री गिरनारजी	5	19 दिसम्बर 1996
18.श्री सिद्धवरकूटजी	1	1 अप्रैल 1997
19.श्री सिद्धवरकूटजी	1	13 अप्रैल 1997
20.श्री नेमावरजी	6	5 जनवरी 1998
21.गंजबासौदा	1	15 फरवरी 2008
22. श्री नेमावरजी	1	7 अप्रैल 2022
23. श्री कुण्डलपुरजी	1	5 फरवरी 2022
24. श्री कुण्डलपुरजी	1	1 मार्च 2022
कुल	60	

स्थान	मुनि दीक्षाएं	दिनांक
1. श्री द्रोणगिरीजी	1	8 मार्च 1980
2. श्री मोराजी सागर	2	15 अप्रैल 1980
3. श्री नैनागिरजी	2	20 अक्टूबर 1981
4. श्री नैनागिरजी	3	20 अगस्त 1982
5. श्री ईसरी	5	25 सितम्बर 1983
6. श्री आहारजी	1	1 जुलाई 1985
7. श्री सोनागिरजी	8	31 मार्च 1988
8. श्री नेमावरजी	10	16 अक्टूबर 1997
9. श्री मुक्तागिरीजी	9	11 फरवरी 1998
10. श्री नेमावरजी	23	22 अप्रैल 1999
11. श्री प्रतिभास्थल जबलपुर	25	21 अप्रैल 2004
12. श्री रामटेकजी	24	10 अगस्त 2013
13. श्री शीतलधामविदिशाजी	5	16 अक्टूबर 2014
14. श्री बीना बारहजी	2	31 जुलाई 2015
15. ललितपुर	10	28 नवम्बर 2018
16. श्री शिरपुर	1	21 दिसम्बर 2022
कुल	135	

स्थान	आर्यिका दीक्षाएं	दिनांक
1. श्री नैनागिरजी	11	10 फरवरी 1977
2. श्री कुण्डलपुरजी	8	7 अगस्त 1989
3. श्री कुण्डलपुरजी	1	9 अगस्त 1989
4. श्री नरसिंहपुरजी	5	20 फरवरी 1990
5. श्री नरसिंहपुरजी	2	23 फरवरी 1990
6. श्री कुण्डलपुरजी	15	4 जुलाई 1992
7. श्री कुण्डलपुरजी	2	7 जुलाई 1992
8. जबलपुर	25	25 जनवरी 1993
9. श्री रामटेकजी	1	19 अगस्त 1993
10. श्री रामटेकजी	1	28 अगस्त 1993
11. श्री नेमावरजी	29	6 जून 1997
12. श्री नेमावरजी	14	18 अगस्त 1997
13. श्री कुण्डलपुरजी	58	13 फरवरी 2006
कुल	173	

आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी द्वारा 21 दिसम्बर 2022 पौष कृष्ण त्रयोदशी, बुधवार को दीक्षित 1 मुनि एवं 21 क्षुल्लक महाराज

क्र.	दीक्षा उपरांत नामकरण	दीक्षार्थी का नाम	जन्म दिनांक	शिक्षा	माता	पिता	ब्रह्मचर्य व्रत कब और कहाँ
01	मुनिश्री उत्कृष्टसागरजी महाराज	महावीर अष्टगे (सदलगा) कर्ना.	01.07.1940	बी.ए.	श्रीमती श्रीमन्ति	स्व. श्री मल्लप्पाजी	7 प्रतिमा, शिरपुर में 24.08.2022
02	क्षुल्लकश्री स्वागतसागरजी	ब्र. नीतेश भैया, बागीदौरा (राज.)	03.09.1983	बी.ए. संस्कृत	श्रीमती चमेली	श्री बसंत जैन	10 प्रतिमाधारी, 04.03.2022
03	क्षुल्लकश्री आगतसागरजी	ब्र. यशपाल (गोलू) दमोह	08.01.1986	एम.कॉम	श्रीमती सरोज	स्व. श्री अनिल जैन	सप्तम प्रतिमा, कुण्डलपुर 03.01
04	क्षुल्लकश्री भास्वतसागरजी	ब्र. सौरभ गोलू, जबलपुर	31.01.1979	एम.कॉम. एमबीए.	श्रीमती शीला	स्व. श्री संतोष जैन	4 प्रतिमा, जबलपुर 29.07.2021
05	क्षुल्लकश्री स्वस्तिकसागरजी	ब्र. श्रमण (लक्की) दमोह	29.08.1986	एम.कॉम	श्रीमती सुशीला	श्री संतोष सिंघई	
06	क्षुल्लकश्री भारतसागरजी	ब्र. सौरभ (बब्बू) सिलवानी	27.02.1996	बी.कॉम, सी.ए.	श्रीमती रजनी	श्री संतोष जैन	3 प्रतिमा, शिरपुर 06.09.2022
07	क्षुल्लकश्री जागृतसागरजी	ब्र. शुभम भैया, सागर	12.12.1997	एम.कॉम., सी.ए.	श्रीमती सविता	श्री रमेश जैन	2 प्रतिमा, कुण्डलपुर 06.09.2022
08	क्षुल्लकश्री उद्यमसागरजी	ब्र. शैलेन्द्र (शैलू), कटंगी	01.10.1975	एम.ए.	श्रीमती श्रद्धा	श्री नेमीचंद जैन	अष्टम प्रतिमा, शिरपुर 2022
09	क्षुल्लकश्री गरिष्ठसागरजी	ब्र. स्वतंत्र (बुद्धू), विदिशा	02.02.1983	बी.कॉम	श्रीमती रेखा	श्री जिनेश जैन	2 प्रतिमा, शिरपुर 05.09.2022
10	क्षुल्लक श्री आदरसागरजी	ब्र. संजय, पटना बिहार	18.11.1969	एम.बी.ए.	श्रीमती शांति	श्री ज्ञानचंद जैन	सप्तम प्रतिमा इंदौर 01.05.2020
11	क्षुल्लकश्री समादरसागरजी	ब्र. किरीट (गोलू), खातेगांव	02.01.1974	12वीं	श्रीमती चन्दा	श्री प्रेमचंद लुहाड़िया	सप्तम प्रतिमा नेमावर 00.05.2020
12	क्षुल्लक श्री विदूषसागरजी	ब्र. अभिषेक गोटेगांव	19.09.1985	बी.एस.सी	श्रीमती छाया	श्री अशोक जैन	रहली, 17.01.2016
13	क्षुल्लकश्री स्वरूपसागरजी	ब्र. पुनीत भैया (सागर)	18.11.1989	बी.ई. कम्प्यू.	श्रीमती विमला	श्री हरीश जैन	संघस्थ के साथ 27.09.2022
14	क्षुल्लकश्री सुभगसागरजी	ब्र. जयेश भैया, वर्धा (महा.)	17.07.2000	बी. टेक.मैके.	श्रीमती अंजलि	श्री भूषण जैन	अश्विन शुक्ल द्वितीया 27.03.2022
15	क्षुल्लकश्री अनुनयसागरजी	ब्र. चन्द्रप्रकाश, ग्वालियर	17.10.1983	बी.टेक	श्रीमती शकुंतला	श्री महावीर मित्तल	6 मार्च 2022, अभाना
16	क्षुल्लकश्री सविनयसागरजी	ब्र. मधुर जैन, गंजबासौदा	12.02.1983	बी.ई. इले.	श्रीमती सुनीता	श्री राजकुमारजी जैन	सप्तम प्रतिमा 5 सितंबर 2022
17	क्षुल्लक श्री समन्वयसागरजी	ब्र. विक्रम जैन, जबलपुर	06.10.1982	एम.कॉम.एलएलबी.	श्रीमती मीना	श्री विनोद जैन	शिरपुर, 06.09.2022
18	क्षुल्लकश्री हीरकसागरजी	ब्र. विजेन्द्र जैन, भोपाल	20.04.1988	एम.कॉम.एलएलबी.	श्रीमती दुलारी	श्री नरेन्द्र जैन	भोपाल 25.11.2016
19	क्षुल्लकश्री निर्धूमसागरजी	ब्र. दीपक भैया, मंडावरा (उ.प्र.)	12.10.1995	एल.एल.एम.	श्रीमती कल्पना	श्री शीलचंद जैन	15.11.2022, आजेगांव महाराष्ट्र
20	क्षुल्लक श्री वरिष्ठसागरजी	ब्र. खुशाल भैया, पथरिया	10.10.1982	एम.ए. जैन दर्शन	श्रीमती अंगूरी	श्री निर्मल जैन	2 प्रतिमा, शिरपुर 28.07.2022
21	क्षुल्लकश्री गौरवसागरजी	ब्र. जयंत (गोल्डी)सहारनपुर (उ.प्र.)	05.07.1985	सी.सी.ए.	श्रीमती सविता	श्री राजीव जैन	शिरपुर, 25.09.2022
22	क्षुल्लक श्री विवेकसागरजी	ब्र. रोहित भैया, नहीत (उ.प्र.)	27.01.1990	एम.बी.ए.	श्रीमती उषा	श्री राजेश जैन	शिरपुर, 27.09.2022

क्रमांक–23 वरिष्ठ नागरिक

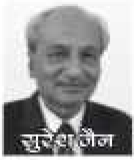

आयु के निशान पहले मन पर पड़ते हैं

दिल जो मान ले, दिमाग जो स्वीकार ले, शरीर तो वही करेगा ! जो अपने दिमाग को बूढ़ा हो जाने देंगे, तो मन भी बिढ़ाल हो जायेगा और शरीर भी इसे सच मान लेगा।

कई लोग मानते हैं कि उनके चेहरे पर उम्र इसलिये जल्दी दिखने लगती है क्योंकि उनके माता-पिता के साथ ऐसा ही हुआ था, लेकिन शोध बताती है कि उम्र के निशान दिखने की समस्या केवल 25 प्रतिशत ही अनुवांशिक होती है। यह निशान हो सकते हें - समय से पहले सफेद बाल और झुरियां। तनाव, वातावरण का असर, पोषण, लाइफ स्टाइल और शरीर की प्रतिरोधक क्षमता, यह सब अतिरिक्त घटक हैं , जो उम्र के झलकने पर असर डालते हैं ।

मस्तिष्क की कसरत:- मस्तिक में अगर कोलाहल मचा है, तो चेहरे पर खुशी नहीं दिख सकती और अगर चेहरे पर रौनक नहीं होगी, तो उदास चेहरा उम्र की क्या, क्या सब कुछ बयां करने लगता है, इसलिये सबसे अहम् है मस्तिष्क का क्रियाशील रहना। उम्र का दिमाग से सीधा वास्ता है। अगर दिमाग को उलझनों से दूर रखेंगे, तो 70-80 की उम्र में भी चेहरे पर अद्‌भुत रौनक नजर आ सकती है। विशेषज्ञ दिमागी कसरत करते रहने की भी सलाह देते हैं- जैसे वर्ग पहेली भरना, सुडोक खेलना आदि।

धूप देगी रूप:- यह तो सभी को पता होगा कि विटामिन-डी रोग प्रतिरोधक क्षमता को बनाये रखने, कोशिकाओं के विकास को नियमित रखने, कैल्शियम को बढ़ाने, कैंसर, मधुमेह और हड्डियों की बीमारियों को दूर रखने में मदद करता है। और शरीर को यह विटामिन-डी धूप से सीधा मिलता है। देखा, कितने फायदे हैं धूप के ? आपके लिये रोजाना 400 आई यू का विटामिन-डी ग्रहण करना आवश्यक है ! क्या आपको पता है कि पर्याप्त विटामिन-डी आपको केवल धूप में चलने से ही मिल जाता हैं। राष्ट्रीय इंस्टीटयूट के अनुसार प्रतिदिन 20 मिनिट धूप में बिताने से ज्यादातर लोगों के शरीर को पर्याप्त मात्रा में विटामिन-डी मिल जाता है। इसलिये कुछ देर जाती हवा तथा धूप का लुत्फ उठाने के लिये खुली जगह पर टहल लेना चाहिये।

काम को सराहें - उम्र का सम्बंध काम की सराहना से भी है। कार्यरत लोगों पर किये अध्ययन से पता चला कि 75 प्रतिशत लोग ऐसे थे, जो काम से प्यार करते थे, वो भी इतना कि आराम या छुट्टियों वाले ब्रेक की जरूरत इन्हें महसूस ही नहीं हुई। अपने जुनून की राह चलें यानी वह करें, जो करना आपको अच्छा लगे। फिर आप की उम्र कुछ भी हो, अहसास आप का जवां होगा।

सकारात्मक व्यवहार अपनायें:- स्वस्थ उम्र का राज छिपा है आप की सकारात्मक सोच में शोध बताते हैं कि आपका व्यवहार और तनाव सेहत की राह में थोड़ा बन सकते हैं। ये आपको बीमारी या अयोग्यता से घेरे रखते हैं, सो आज से अपने व्यवहार पर नजर रखें। अच्छा व्यवहार अपनायें जीवन में कुछ भी स्थाई नहीं है। वैसे भी यह स्थापित हो चुका है कि बढ़ती उम्र के शरीर पर असर से ज्यादा आप का रवैया तय करता है कि उम्र के निशान पड़े या नहीं। आपका अच्छा व्यवहार आपको बढ़ती उम्र को भी उत्साह के साथ स्वीकार करने में मदद कर सकता है।

सोचो मत:- और यह सोचना तो बिलकुल बंद कर दें कि आप बूढ़े हो रहे हैं। बहुत से लोगों में यह कमजोरी होती है कि 20 साल में ही 30 साल के होना महसूस करने लगते हैं। जवां दिखने के लिये जवां महसूस करना बहुत जरूरी है। समय के साथ खुद में बदलाव लाते रहे और इसका सबसे अच्छा फॉर्मूला है स्वीकारेत्ति समय बीतेगा, तो बदलाव तो आयेगा ही न। अगर आप 50 वष के हैं , तो 25 के नहीं दिख सकते। लेकिन 25 से तुलना करके, खुद को कमतर मानने से पहले अपने अनुभवों , उपलब्धियों और कामयाबियों पर एक निगाह जरूर डाल लें। 25 उम्र वाले के पास यह सब नहीं होगा। अपनी उम्र केसकारात्मक पहलू पर गोर करें। अच्छा महसूस करोगे तो अच्छे दिखोगे।

कविता

आईना

अपूर्वा अमित जैन, झांसी

ए जिंदगी तू मुझे
क्यों इतना कमजोर बनाती है
सच जानते हुये भी झूठ के साये में
फंसी नजर आती है
कौन अपना है,
कौन पराया ये तो वक्त का
आईना बताता है
कई बार सच की आग में
तप तप कर भी सोना क्यों अधूरा
तपा रह जाता है क्यों
अधूरा तपा रह जाता हैं।

मंदाग्नि (डिस्पेप्सिया) कारण नियंत्रण उपाय

※ जिनेन्द्र कुमार जैन (इन्दौर) मो. 9977051810 ※

हम जो कुछ भी खाते हैं वह अगर अच्छी तरह न पचे तो शरीर की सभी क्रियायें में गड़बड़ी पैदा हो जाती है, परिणाम यह होता है कि शरीर क्रमशः कमजोर रक्त है और मन अशांत हो जाता हे जिसे मंदाग्नि, बदहजमी या अजीर्ण रोग या डिस्पेप्सिया का रोग कहते हैं। आज कल प्रायः सभी व्यक्ति प्रभावित रहते हैं खाई हुई चीजों को पचाने के लिये यद्यपि सृष्टि कर्त्ता ने प्रत्येक मनुष्य शर्ट को लार, गैस्ट्रिक जूस तथा आंत और पेक्रियाज से एक प्रकार का रस निकलकर सब तरह के खाद्य पदार्थ पचाने की ताकत दी है, मगर फिर भी किसी को पाचक रस ज्यादा तथा लार और पित्तादि कम और किसी को लार पित्तादि ज्यादा व गैस्ट्रिक जूस कम निकलता है जिससे विपरीत आहार मंदाग्नि हो जाती है। इसका असली कारण का निर्णय करना कठिन है पर प्रमुख कारण माना जाता है।

कारण : 1. पाचन तंत्र आंतरिकपरिवर्तन- जैसे आंतों मेंश्लेष्मा, प्रदाह जख्म आंते मोटी होना इत्यादि।

2. पाचक रसों के गुणों में परिवर्तन- पाचक रस के गुण व कम मात्रा में निकलना।

3. मानसिक उत्तेजना व अत्याधिक मानसिक परिश्रम - जैसे बहुत अधिक चिन्ता, बुरी खबर, शोक, अनिद्रा, अधिक पढ़ाई इत्यादि से नर्वस सिस्टम की स्वामिक क्रिया में गड़बड़ी होना।

4. अनियमित खान पान बहुत ज्यादा मिर्च मसाले, मेंदा, चाय काफी, अल्कोहल का उपयोग उत्तेजक पदार्थों का सेवन, डिब्बा बंद पदार्थ, फास्ट फूड, वे मौसम आइस्क्रीम ठंडे पदार्थों का सेवन करना, पाचन शक्ति के विरूद्ध भोजन आदि।

5. अनियमित जीवन चर्या : रात्रि देर तक सोना, वे समय भोजन करना, आराम दायक जीवन आलसी होना।

लक्षणः 1. इसका मुख्य लक्षण कब्ज है भूख न लगना या राक्षसी भूख लगना। हमेशा खट्टी और मसालेदार चीजों को खाने की इच्छा।

2. पाकस्थली में गैस इकट्ठा होकर उसका ऊपर की गति करने से श्वास लेने छोड़ने में तकलीफ, सीना धड़कना व दर्द, बार बार बुरी डकार आना।

3. पाकस्थली में अम्ल होने की वजह से खट्टी डकारें, मुंह में पानी भर आना, गले के भीतर कोई चीज अड़ी हुई मालूम होना।

4. खायी हुई चीजें न पचकर उल्टी व दस्त के साथ निकलना।

5. पाकस्थली के ऊपर अग्र खंड की जगह दर्द, स्पर्श सहन न होना, हमेशा पेट भारी मालूम पड़ना पेट में गड़बड़ी, पेट ढोल की तरह फूलना।

6. शारीरिक और मानसिक परिश्रम से अनिच्छा, थोड़े से परिश्रम से थक जाना, सुस्ती, मन बैठा हुआ, चिडचिड़ा मिजाज, जरा सी बात पर क्रोध आना, नींद न आना, स्वप्न देखना, सिर में चक्कर, आँखें से कम दिखाई देना, आँखे धसी हुई, शरीर का रंग कीफा या पीला हो जाना, औंठ मुंह जीभ व आंखों में खून कम होते जाना आदि।

7. हमेशा हाथ पैर ठंडे रहना, जरा सी ठंड में सर्दी लग जाना, शरीर की शक्ति घटती जाना।

8. बच्चों का पेट फूलकर कड़ा हो जाना, पेट दबाने पर दर्द मालूम होता है। बच्चा रोता है, पेट गडगड़ाता, कल कल शब्द होना, मल में बहुत बदबू या खट्टी गंध आती है, मल छेने के टुकड़ों की तरह फटा-फटा सा होना।

9. बच्चा भोजन करने के बाद पैर पटकता है और मोड़कर पेट की तरफ करता है, अच्छी तरह से सो नहीं सकता व सोने पर अचानक नींद खुल जाना व रोने लगना। उस समय कुछ खिलाया जाये तो खाकर उल्टी कर देना जो जमे हुये दही की तरह होती है यदि इन लक्षणों को जल्दी ठीक नहीं होते तो क्रमशः पेट के दोष, ज्वर, कमजोरी बढ़ जाती है।

सावधानियाँ- 1. इस रोग में पथ्य और पाचन शक्ति पर लक्ष्य बनाकर बाद में दवा आदि का उपयोग करना चाहिये व शरीर की अवस्था उम्र, शारीरिक मेहनत अनुसार आहार प्रबंध करना चाहिये। ठंडा गरम, दूध दही एक साथ नहीं खाना चाहिये।

2. जिन्हें गेस्ट्रिक जुस अधिक और लार व पित्त कम निकलते हैं ऐसे मनुष्य चर्बी युक्त पदार्थ पुडी, पराठा, आलू इत्यादि खाने से भोजन नहीं पचने से बदजमी हो जावेगी उन्हें दाल, चावल सब्जी हल्का भोजन सहज में पच जाता है जिन्हें गेस्ट्रिक जूस कम और लार पित्त अधिक निकलते हैं वे चर्बी युक्त भारी भोजन सहजता से पचा लेते हैं किन्तु हल्का भोजन नहीं पचता है।

3. भोजन के समय बीच-बीच में पानी पीने से पाचन शक्ति कमजोर हो जाती है, प्यास मिटाने हेतु थोड़ा सा पानी बीच में पी सकते हैं। भोजन करने के एक घंटा पहिले कुनकुना पानी पीने से पेट की सफाई होती है व शरीर आहार ग्रहण करने के लिये तैयार हो जाता है एवं भोजन करने के बाद 1 से 2 घंटे में कुछ गरम पानी 4-5 थोड़ा थोड़ा पीने से पाचन क्रिया अच्छी तरह से होती है।

4. जिन्हें एसीडिटी की बीमारी हो उन्हें भोजन करने के 1 घंटे बाद कुछ गरम पानी पीने से आराम मिलता है क्योंकि एसिड की तीव्रता कम हो जाती है। इसी प्रकार शाम को भोन के बाद 3-4 बार पानी पीना चाहिये।

5. भोजन में फाइबर युक्त सब्जियाँ सलाद, फल का उपयोग करना चाहिये।

6. नियमित समय पर भोजन, 30-45 मिनिट पैदल चना योग व्यायाम करना चाहिये।

7. बच्चों को दलियाँ जिसमें फाइबर बहुत होता है, मनपसंद सब्जियाँ सलाद मिलाकर खिलायें, पर्यात पानी देवे, दही, दाल जो पाचन क्रिया के सुचारू रखने का काम करती है।

8. शरीर का मेटाबाल्जिम सूर्य के अनुसार चलता है अतः सुबह भारी आहार, दोपहर को सामान्य और शाम को हल्का आहार देना चाहिये। खरबूज, अमरूद कैला खाली पेट खाने से पेट दर्द होता है किन्तु अन्य फल लाभदायक होते हैं ।

9. नियमित शौच की समय पर आदत डालना, भोजन करने का सही तरीका और नियमित समय पर भोजन आदि करने की आदतें डालना चाहिये।

घेरलु उपचार 1. आजवायन का चूर्ण छह भाग और काला पिसा नमक एक भाग मिलाकर आधा चम्मच (2 ग्राम) गर्म जल से के साथ लेने से पेट का दर्द, वायु गोला गैस के आराम मिलता है। 2. अदरक एक ग्राम से तीन ग्राम तक छीलकर बारीक करके थोड़ा सैंधा नमक लगाकर भोजन के आधा घंटे पहिले लेने से पेट दर्द, अफरा, बदहजमी नष्ट होकर मंदाग्नि प्रदीप्त होती है और भूख व भोजन में रूचि पैदा होती है। 3. दोनां समय के भोजन करने के बाद एक वर्ष पुराना गुड़ की डल्ली करीब (10 ग्राम) मुंह में चूसने से मुंह का खट्टा पानी अम्ल पित्त नाश के साथ पेट में गैस नही बन सकती।

आयुर्वेदिक पद्धति बहुत ही प्रभावशाली है व होम्योपैथी पद्धति भी लाभकारी है इलाज पूर्व अनुभवी चिकित्सक की सलाह लेकर उपचार करना चाहिये।

होम्योपैथी पद्धति में नक्सवोमिका, कार्बोवेज, चायना, हाइड्रेस्टिस, लाइकोपोडियम, पल्सेटिला, कोलोसिन्थ, रोबिना, आर्सेनिक, मैगनिश्या फास, सल्फर, ब्रायोनिया आदि औषधियों का उपयोग रोगी की मानसिक, शारीरिक लक्षणों के आधार पर किया जाता है।

हास्य तरंग

1. मायके से आई पत्नी को लेने रेल्वे स्टेशन पहुँचा पति गाड़ी रूकते से ही सामान उठाकर टेक्सी स्टेन्ड की तरफ चलने लगा। गाड़ी से उतरी पत्नी ने उसे आवाज देकर रोका और कहा जरा प्यार से हंसकर रिसीव कर लेते तो क्या हो जाता? ढंग से उतरने नही दिया और चल पड़े। देखो सामने वाले जोड़े को पति कैसे खुश होकर बातें कर रहा है। तभी पति ने कहा हाँ दिख रहा है, वह पत्नी को छोड़ने आया है, लेने नहीं।

2. सेठी जी कहते हुये उफ... ऐसी बीमारी से तो मर जाना अच्छा है। डॉ.- हम पूरी कोशिश तो कर रहें।

3. एक महिला ने अपने पति का कत्ल कर दिया था। जज ने फांसी की सजा सुनाई तो महिला फूट फूट कर रोने लगी व जज से कहने लगी... दया कीजिये ! जज- दया क्यों, महिला क्योंकि में एक विधवा हूँ।

4. एक पत्रकार ने- वरिष्ठ नेता से पूंछा, पिछले 75 वर्षों की आजादी के दौरान आपको कैसा महसूस हुआ? नेता जी मंद मुस्कुराहट के साथ शायराना अंदाज में बोले- हम तो कुछ दिन ही आजाद रहे। 15 अगस्त 1947 के दिन आजादी मिली और 26 अगस्त 1947 के दिन हमारी शादी हो गई।

5. पति पत्नी अपने बच्चे के भविष्य के बारे में पति इसे डॉक्टर बनाऊंगा, पत्नी नहीं इसे इंजीनियर बनायेगे। दोनों की बहत इतनी बढ़ गई कि उनका बच्चा कहता है मम्मी पापा मैं तो वकील बनूंगा ताकि आप दोनों का झगड़ा सुलझा सकूं।

संकलन: जिनेन्द्र कुमार जैन, गौरीनगर

संस्कार खेल

शरीर विकास के कुछ खेल

※ दण्ड पार

खिलाड़ियों की संख्या- 15-20

खेल वर्ग- दो दलों का खेल

खेल विधि- (दंड) रचना पूर्व खेल की तरह मंडल में एक ईट तथा पहले खिलाड़ी के हाथ में दंड होगा। सीटी बजते ही वह दौड़कर दंड से ईट को स्पर्श करेगा तथा वापिस आकर अपनी छिपकली की तरह निकलकर अन्त तक जायेगा। वहाँ से वह सबके पैरों के बीच में से दंड आगे फेकेगा। अब दूसरा और फिर क्रमशः सब यही काम करेंगे। जो दल पहले अपना काम पूरा कर लेगा वह विजयी होगा।

※ जानवर इंसान

खिलाड़ियों की संख्या- 10-15

खेल वर्ग- दो दलों का खेल

खेल विधि- सम्पूर्ण खिलाड़ियों को दो दलों में विभाजित करेंगे और बीच में एक रेखा होगी। एक दल जानवरों का और एक इंसान का होगा। जानवर के नाम हाथी, घोड़ा, शेर, हिरण आदि सब खिलाड़ियों के नाम दिये जायेंगे तथा इंसानों के दल को अंक दिये जायेंगे। शिक्ष अंक कोई भी एक बोलेगा। जिस खिलाड़ी का अंक होगा वह दोड़ता हुआ जानवर का नाम लेगा और दौड़ना शुरु कर देगा और साथ में वह दौड़ते हुये इंसान की लाइन में इंसान तथा जानवर की इालन में जानवर खड़ा होगा। इंसान जानवर को लाइन पर करने से पहले ही रोकना, छूने का प्रयास करेगा। यदि वह जानवर को छू लेता है। इंसान दल में जानवर खिलाड़ी शामिल हो जायेगा अन्यथा इंसान खिलाड़ी बाहर हो जायेगा। धीरे-धीरे यह किसी भी दल की सबसे कम संख्या होने पर वह दल हारा हुआ माना जायेगा।

बाल कहानी

मुश्किल में कुशल

नर्मदा नदी के किनारे एक वागनंदी नाम का छोटा सा गांव था। उसी गांव में एक पदयात्री नर्मदा परिक्रमा के लिये प्रायः पहुंच जाते थे। रामलुभाया अपनी 70 वर्ष की उम्र में नर्मदा परिक्रमा कर रहा था। वयोवृद्ध अकेला रामलुभाया सूर्य अस्त के तुरन्त बाद बामनंदी पहुँचा। उसने रात्रि विश्राम के लिये किसी एक घर की खोज की परन्तु, सभी गांव वासियों ने रामलुभाया को अपने घर में ठहराने से मना कर दिया। रामलुभाया दूसरे गांव जा नहीं सकता था। क्योंकि बहुत अंधेरा हो चुका था। राम लुभया गांव के बाहर एक बाग में ही वृक्ष की छांव में सौ गया। ठंड अधिक होने के कारण उससे निद्रा देवी रूठ चुकी थी। आधी रात के बाद अचानक उसने देखा कि जिस वृक्ष के बीच वह सो रहा है। चंद्रमा ठीक उसके ऊपर अपनी किरणों से अमृत बरसा रहा है। और वृक्ष में फूल खिल चूके है। फूलों की सुगंधी से पूरा वातावरण खुशनुमा हो रहा था। राम लुभाया ने ऐसा आनंदमय क्षण कभी नहीं पाया था। वह खुशी से झूम उठा उसे नींद नही आई पर आनंद जरूर आया। राम लुभाया भीतर ही भीतर सोचने लगा। इस आनंद का क्षण उपलब्ध कराने में ग्राम वासियों का ही योगदान है। यदि वह मुझे अपने घर में जगह दे देते तो में इस आनंद से वंचित जरूर हो जाता। राम लुभाया प्रभात होते ही गांव की ओर चल पड़ा और उसने बन्द घरों के सामने फूलों के ढेर रखकर सबके प्रति आभार व्यक्त किया ना तो वह भुनभुनाया ना उसने क्रोध किया ना ही उसने गाँव वालो से कोई शिकायत की अपितु वह सोचने लगा कि आदमी जिसे विपत्ति मानता है। मुश्किले मानता है उन मुश्किलों में चाहे तो खुशी खोज सकता है और वह किसी से शिकायत करने की अपेक्षा उसका आभार मान सकता है। बच्चों शिकायत में आभार मानने की आदत आप को डालना चाहिये।

संस्कार गीत

संघर्षों का दौर चला

बीते पांच शतक बरसों तक
संघर्षों का दौर चला
राम प्रभू का बना न मंदिर
बद् किस्मत् से रोज टाल

1.
सपनों में देखा पुरखों ने भव्य राम मंदिर अपना
धन भी खर्चा खून बहाया
पर न हुआ पूरा सपना
अब बाधायें दिखे न कोई
पुरखां का पुरुषार्थ फला

2.
शक्ति टूटी जब हिन्दू की राम लला मंदिर टूटा
सत्ता पाने स्वार्थ लोभ से कोई हममें से फूटा
आज जगा है हिन्दू सारा सड़कों पर हिन्दू निकला

3.
प्रस्तर पर उभरी सुदंरता रामशिला आधार बना
राम भक्त संकल्प पूर्ण तब भक्ति शक्ति रूप बना
सम्मान बड़ा बलिदानों का अब
दुश्मन का अब मान गले

बाल कविता

मोक्ष शास्त्र

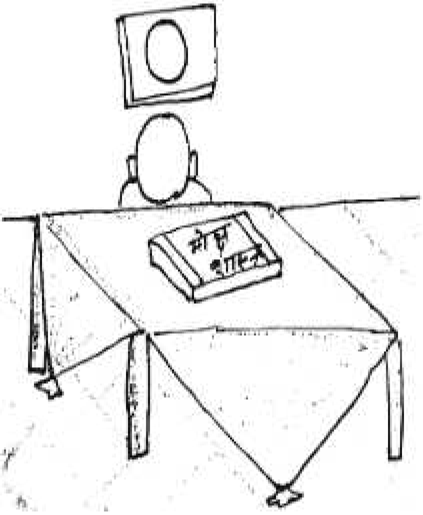

मोक्ष शास्त्र का नाम भला है
जीवन का विज्ञान कला है
जीव आजीव का वर्णन इसमें
बंध आस्त्रव का ज्ञान है इसमें
संवर निर्जर बोध कराता
मोक्ष तत्त्व का शोध कराता
ग्रन्थराज तत्त्वार्थ सूत्र है
मोक्ष मार्ग सन्मार्ग सूत्र है
उमा स्वामी की श्रेष्ठ कृति यह
आगम का नवनीत ग्रंथ यह।

समाचार

दीक्षायें सम्पन्न

सम्मेदशिखरजी (झारखण्ड)- आचार्य श्री प्रमुखसागरजी महाराज के कर कमलों से श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र तेरहपंथी कोठी मधुबन सम्मेदशिखरजी में 28 नवम्बर 2022 को क्षुल्लिका प्रतिज्ञाश्री, क्षुल्लिका प्रीतिश्री, क्षुल्लिका परीक्षाश्री, क्षुल्लिका प्रेक्षाश्री, ब्र. सुनीता दीदी धूलिया (महा.), ब्र. आनंद इटावा (उ.प्र.), ब्र. मिथलेश दीदी इटावा (उ.प्र.), ब्र. शांता दीदी धूलिया (महा.), ब्र. मनोरमा दीदी मनोरमा (ग्वालियर) को दीक्षाएँ दी गई । जिनके नाम क्रमशः आर्यिका प्रतिज्ञाश्री माताजी, आर्यिका प्रीतिश्री माताजी, आर्यिका परीक्षाश्री माताजी, आर्यिका प्रेक्षाश्री माताजी, आर्यिका श्री परमाराध्याश्री माताजी, क्षुल्लक परमानंदसागरजी, क्षुल्लिका परमसाध्या माताजी, क्षुल्लिका परमशांताजी माताजी, क्षुल्लिका परमदिव्याश्री माताजी रखा गया।

सम्मेदशिखरजी (झारखण्ड)- गणिनी आर्यिका श्री शुभमति माताजी के करकमलों से श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र तेरहपंथी कोठी मधुबन सम्मेदशिखरजी में 28 नवम्बर 2022 को क्षुल्लिका श्री सुभक्तिमति माताजी, क्षुल्लिका श्री सुयुक्तिमति माताजी, क्षुल्लिका श्री सुविशुद्धमति माताजी, क्षुल्लिका श्री सुराजमति माताजी, क्षुल्लिका श्री सुईशानमति माताजी, ब्र. गुणमाला दीदी, ब्र. लीला दीदी को दीक्षाएँ दी गई । जिनके क्रमशः आर्यिका श्री स्वर्णमति माताजी, आर्यिका श्री स्वरूपमति माताजी, आर्यिका श्री स्वयंभूमति माताजी, आर्यिका श्री स्वराजमति माताजी, आर्यिका श्री स्वाध्यायमति माताजी, क्षुल्लिका श्री स्वतंत्रमति माताजी, क्षुल्लिका श्री स्वागतमति माताजी नाम रखे गये।

टीकमगढ़ (म.प्र.)- आचार्य श्री विनिश्चयसागरजी महाराज के कर कमलों से 14 दिसम्बर 2022 को टीकमगढ़ (म.प्र.) में ब्र. सोयत भैया (झाँसी), ब्र. बाबूलाल भैया (गुलगंज), ब्र. रश्मि दीदी (मुरैना), ब्र. सुधा दीदी (झाँसी) को दीक्षा दी गई जिनके नाम क्रमशः मुनिश्री प्रसिद्धसागरजी महाराज, क्षुल्लक श्री प्रमेयसागरजी महाराज, क्षुल्लिका श्री प्रमाश्री माताजी, क्षुल्लिका श्री प्रभाश्री माताजी रखा गया।

खमेरा (राज.) । आचार्य श्री सुन्दरसागरजी महाराज के करकमलों से 22 दिसम्बर 2022 को दोपहर 2 बजे श्रीमती कनकमाला गनोड़िया धरियाबाद को आर्यिका दीक्षा श्री दिगम्बर जैन मंदिर खमेरा (राज.) में दी गई जिनका नाम आर्यिका सुशांतमति माताजी रखा गया।

बोली (राज.)- आचार्य श्री वर्धमानसागरजी के कर कमलों से क्षुल्लक दीप्तसागरजी महाराज को मुनि दीक्षा 20 दिसम्बर 2022 को में श्री दिगम्बर जैन मन्दिर बोली (राज.) में दी गई। जिनका नाम मुनिश्री दीप्तसागरजी महाराज रखा गया।

समाधि

- आचार्य श्री वर्धमानसागर महाराज जी के ससंघ सान्निध्य में उनके ही शिष्य मुनिश्री श्रेयससागरजी महाराज का समाधि मरण 18 दिसम्बर 2022 को 4 बजकर 10 मिनट पर हुआ।

बोली (राज.) - मुनिश्री अमितसागरजी महाराज के ससंघ सान्निध्य में उनके ही शिष्य मुनिश्री अंतरंगसागर जी महाराज का समाधिमरण 25 दिसम्बर 2022 को बोली(राज.) में हुआ।

खमेरा (राज.) - आचार्य श्री सुन्दरसागरजी महाराज के ससंघ सान्निध्य में उनकी ही शिष्या आर्यिका श्री सुशांतमति माताजी का समाधि मरण 22 दिसम्बर 2022 को रात्रि 7.15 पर हुआ।

सोनागिर (म.प्र.) - आचार्य श्री निर्भयसागर जी महाराज के शिष्य क्षुल्लक श्री सूर्यदत्तसागर जी महाराज का समाधिमरण श्री दिगम्बर जैन सिद्ध क्षेत्र सोनागिर जि. दतिया (म.प्र.) में 24 दिसम्बर 2022 को हुआ।

जबलपुर (म.प्र.) - आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के शिष्य क्षुल्लक श्री शुक्लसागर जी महाराज जी का समाधिमरण 13 दिसम्बर 2022 को दोप. 3 बजकर 11 मिनिट बजे श्री दिगम्बर जैन पूर्णायु संस्थान प्रतिभास्थली जबलपुर में हुआ।

मंदसौर (म.प्र.) - आचार्य श्री शिवसागरजी महाराज के शिष्य उपाध्याय ज्ञेयसागर जी महाराज का समाधिमरण श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र वही पार्श्वनाथ मंदसौर में 26 दिसम्बर 2022 को प्रातः 7 बजकर 40 मिनिट पर हुआ।

गगवाड़ (राज.)- आचार्य श्री वर्धमानसागरजी के ससंघ सान्निध्य में उनके ही शिष्य मुनिश्री दीप्तसागरजी महाराज का समाधि मरण 22 दिसम्बर 2022 को गगवाड़ (राज.) में हुआ।

निवाई (राज.) आचार्य श्री वर्धमानसागर महाराज जी के ससंघ सान्निध्य में उनके ही शिष्य मुनिश्री मर्यादासागरजी महाराज का समाधि मरण 27दिसम्बर 2022 को दोप. 4 बजकर 10 मिनट पर हुआ।

मन्दिर शिलान्यास

अंतरिक्ष पार्श्वनाथ शिरपूर (महा.)- आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के ससंघ सान्निध्य में श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र अंतरिक्ष पार्श्वनाथ शिरपूर (महा.) में 21 दिसम्बर 2022, बुधवार को प्रातः भव्य त्रिमंजिला समवशरण 252 फीट एवं चतुर्दिक चार सहस्रकूट जिनालयों का शिलान्यास बाल ब्र. वाणी भूषण प्रतिष्ठा सम्राट विनय भैया के निर्देशन में हजारों जनसमुदाय के बीच हुआ।

समवशरण मंदिर का शिलान्यास करने का सौभाग्य श्रेष्ठि श्रीमान् रतनलाल कंवरलालजी पाटनी आर. के. मार्बल परिवार, किशनगढ़ (राजस्थान), श्रेष्ठि श्रीमति इन्दू श्रीमान् प्रभात सवाईलाल जी जैन जुहू, मुंबई (महा.), श्रीमती रेखा-राजाभाई शाह सूरत (गुज.) एवं सहस्रकूट जिनालय एक का शिलान्यास का सौभाग्य श्रेष्ठी श्रीमति संगीता-अतुलजी सर्राफ पुणे, बारामती (महा.), सहस्रकूट जिनालय दो का श्रीमती शिल्पी-नवीन जैन गुडगाँव दिल्ली, सहस्रकूट जिनालय तीन का श्रीमती वैशाली-शीतल डोसी पुणे (महा.), सहस्रकूट जिनालय चार का श्रीमती नीता-दिलीप घेवारे (ठाणे) मुंबई को सौभाग्य प्राप्त हुआ।

वर्ग पहेली 279

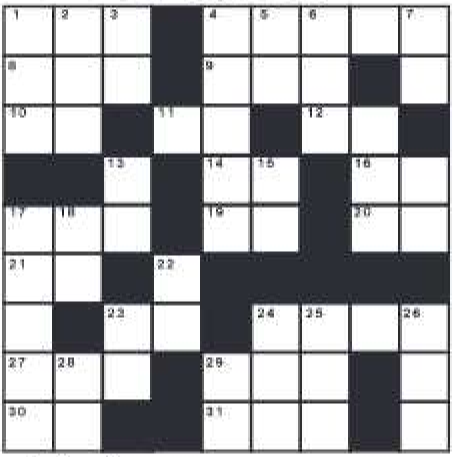

बाये से दाये

1. भारत का पडौसी एक देश -3
4. हाथ से वस्त्र बनाने वाला यंत्र -5
8. खदान, खान, गड्ढा -3
9. चिंतन का पर्यायवाची -3
10.
11. फल का तरल, भाग, स्वाद, रसेन्द्रिय का विषय -2
12. हाथ, हस्त -2
14. परिणाम, फ्रूट -2
16. सार, सत्ता -2
17. तर्क, वेद, निश्चय -3
19. भगवान राम का कुल -2
20. संज्ञा, शब्द -2
21. ऋषि, साधु -2
23. स्वामी, स्त्री का स्वामी -2
24. रक्षा करने वाला -4
27. सूरा करना निष्पन्न करना -2
29. ठगा हुआ -3
30. दौड़ क्रिकेट की दौड़ -2
31. बूंद, टुकड़ा, हिस्सा -3

ऊपर से नीचे

1. दही से बना एक मिष्ठान -3
2. ब्रिटेन राजधानी -3
3. कौआ -2
4. साथ साथ यात्रा करने वाला -5
5. स्तन, गाय का दूध निकाले वाला यंत्र -2
6. स्वर्ण, सोना, धतूरा -2
7. नदी के किनारे वाला स्थान -2
13. दुख मानसिक कष्ट -2
15. हल्का, घंटा -2
18. रफ्तार, चाल -2
22. बुद्धि -2
23. पनाक, पीना वाला पदार्थ -2
24. सृजक, रचना किया हुआ बनाया हुआ -3
25. डेंजर, डर -3
26. लालच इच्छा लोभ -3
28. रकम, संपत्ति, नगर राशी -2

वर्ग पहेली 278 का हल

1 वा	2 रा	ण	3 सी		4 वी	त	5 रा	ग
6 मा	त		7 क	स	र		ज	
दे		8 तीर			9 ब	द	मा	श
10 वी	11 र			12 क	ल			ठ
	13 ह	14 मी	र			15 स:		
16 अ	म	न		17 रा	18 ख		19 न	20 स
श्व			21 सा	ह	स		22 रे	खा
23 से	24 वा	दा	र		25 ख	गे	श	
26 न	दी		27 सा	र	रा			28 क:

....सदस्यता क्र. ....

पता : ....

....